मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 64 | अंक : 06 | दिसम्बर, 2023 | पृष्ठ : 56 | मूल्य : ₹20

इन्सपायर अवार्ड मानक योजना के अन्तर्गत सकूरा एक्सचेंज प्रोग्राम 2023 के छायाचित्र
"Sakura Science Exchange Program-2023"

अन्तर्राष्ट्रीय प्रस्थान

Sakura Scie
Exchange Progr

Sakura Science
Exchange Program

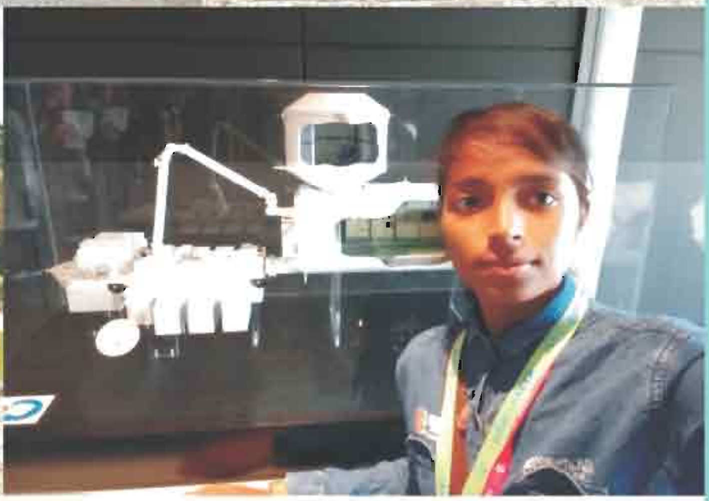

三菱みなとみらい技術館

सत्यमेव जयते

काना राम
आइ.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

> **''मानवाधिकार नैतिक मूल्यों का पर्याय है। आवश्यकता है वर्तमान में भौतिकता की चकाचौंध से घिरी विद्यार्थियों की भावी पीढ़ी को नैतिकता के जल से सींच कर उनमें ''वसुधैव कुटुम्बकम'' के शाश्वत मूल्यों का बीजारोपण शिक्षकों द्वारा किया जाए, जिससे सम्पूर्ण जगत् के मानव मात्र के अधिकारों का सम्मान भारत के नौनिहाल कर मानवाधिकार के संकल्प को सार्थक करें।''**

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

अधिकारों का सम्मान

अयं निज: परो वेति, गणना लघु चेतसाम्।
उदार चरितानां तु, वसुधैव कुटुम्बकम्।।

अर्थात यह मेरा है और यह तेरा है, ऐसी सोच छोटे विचार वाले लोगों की होती है, इसके विपरीत उदार चरित्र वाले व्यक्ति के लिए सम्पूर्ण पृथ्वी ही परिवार है। अनन्त काल से इस शाश्वत भाव को धारण करने वाली सनातन परम्परा के परिप्रेक्ष्य में विश्व एकता दिवस की आप सभी को अशेष शुभकामनाएं!

वैश्विक एकता के मूल भाव से सिंचित होकर संसार के विशाल उपवन में मानवाधिकार के आकर्षक पुष्प खिले हैं इनकी खुशबू में नैतिकता के मूल्य छिपे हैं। मानवाधिकार नैतिक मूल्यों का पर्याय है। आवश्यकता है वर्तमान में भौतिकता की चकाचौंध से घिरी विद्यार्थियों की भावी पीढ़ी को नैतिकता के जल से सींच कर उनमें ''वसुधैव कुटुम्बकम'' के शाश्वत मूल्यों का बीजारोपण शिक्षकों द्वारा किया जाए, जिससे सम्पूर्ण जगत् के मानव मात्र के अधिकारों का सम्मान भारत के नौनिहाल कर मानवाधिकार के संकल्प को सार्थक करें।

इसी माह में परीक्षाओं का दौर भी आरंभ होने वाला है। संस्था प्रधानों से अपेक्षा रहेगी कि परीक्षा अवधि के समय का छात्रहित में अधिकतम सदुपयोग करने की व्यवस्था करें। मूल्यांकन एक सतत् और व्यापक प्रक्रिया है, परीक्षा उसका माध्यम। हम सभी का सम्मिलित प्रयास होना चाहिए कि विद्या मंदिरों के शैक्षिक वातावरण को सकारात्मकता के साथ पूर्ण ऊर्जावान बनाया जाए। ऊर्जस्वित वातावरण में समस्त विद्यार्थी आनन्द के साथ भय व तनाव से मुक्त होकर ज्ञानोपार्जन करें एवं 11 दिसंबर से आयोजित अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं में अपनी पूर्ण क्षमताओं के साथ श्रेष्ठ व उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सके।

शिक्षकों व छात्रों को अपने आत्मविश्वास को परिपुष्ट करने हेतु निरन्तर स्वाध्याय करना चाहिए। मैं उम्मीद करता हूँ कि समस्त शैक्षिक जगत शीतकालीन अवकाश का उपयोग ज्ञानार्जन हेतु अच्छी पुस्तकों को पढ़ने में करेंगे।

इसी विश्वास के साथ....

आपका अपना

(काना राम)

बाल शिविरा : दिसम्बर, 2023

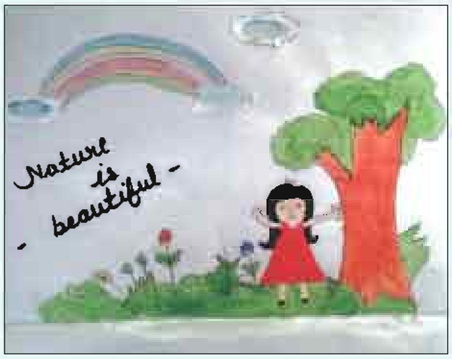
Nature
is
- beautiful -

आराधना,
राजकीय उ.मा.विद्यालय रोझाना, झालावाड़

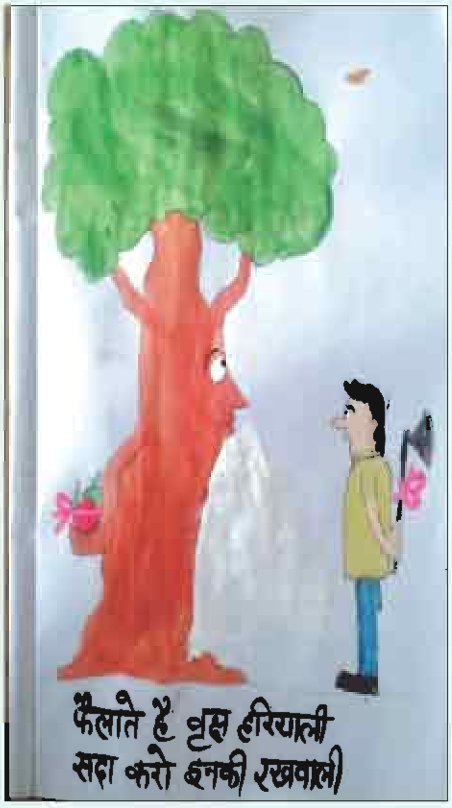
फैलाते हैं वृक्ष हरियाली
सदा करो इनकी रखवाली

यशोदा कुंवर,
राजकीय उ.मा.विद्यालय रोझाना, झालावाड़

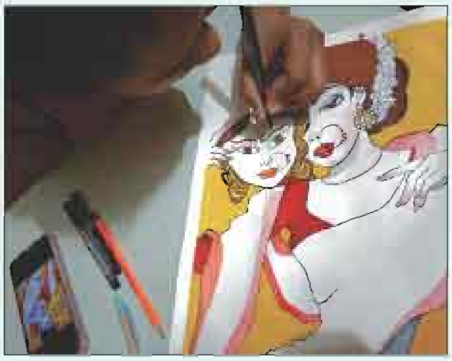

पूर्वी सारड़ा,
राजकीय सादुल उ.मा.विद्यालय कोटगेट, बीकानेर

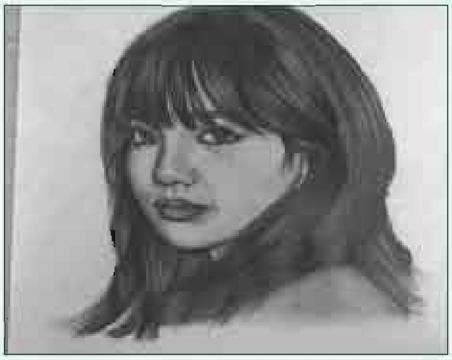

पूर्वी सारड़ा,
राजकीय सादुल उ.मा.विद्यालय कोटगेट, बीकानेर

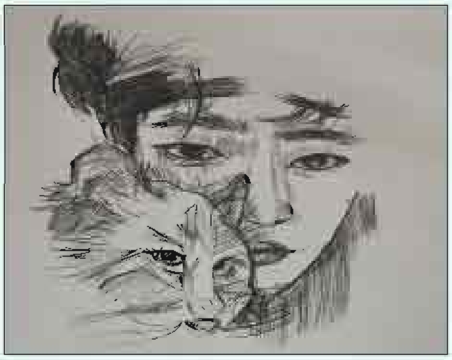

पूर्वी सारड़ा,
राजकीय सादुल उ.मा.विद्यालय कोटगेट, बीकानेर

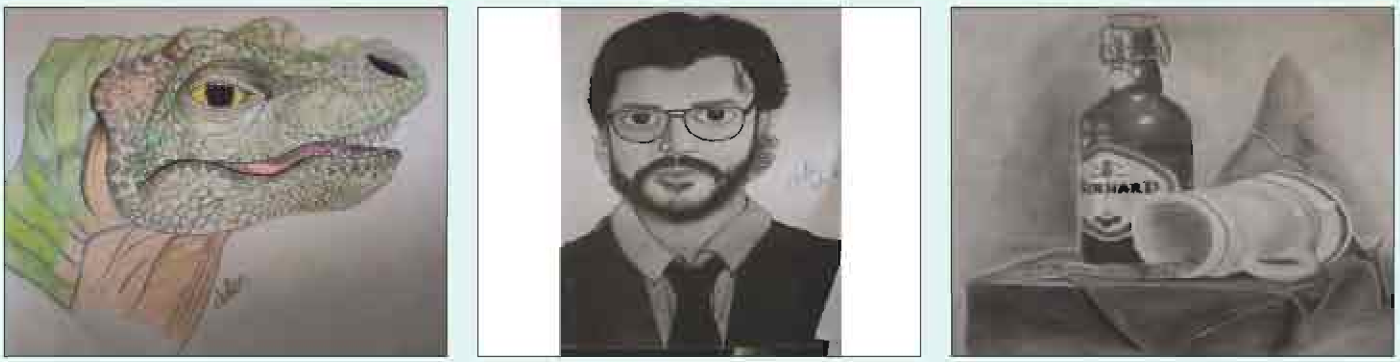

चेतन सोलंकी, राजकीय सादुल उ.मा.विद्यालय कोटगेट, बीकानेर

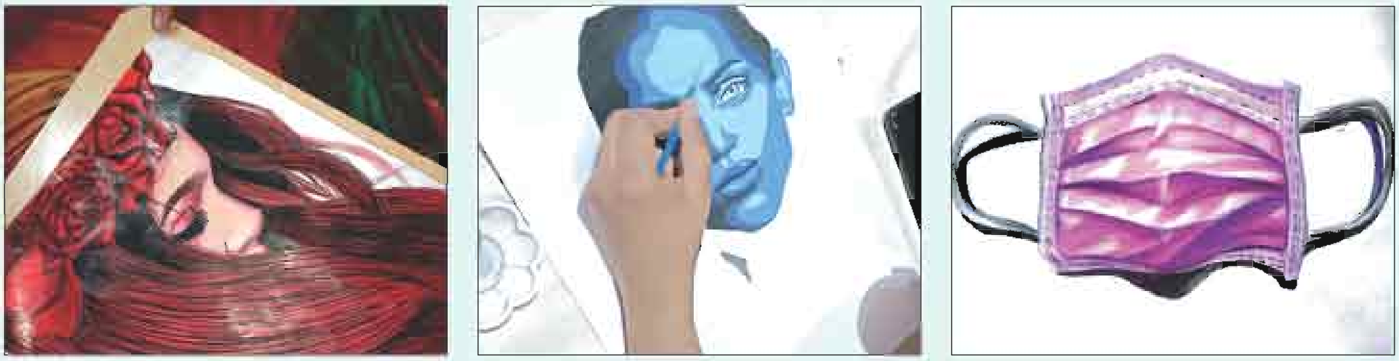

पूर्वी सारड़ा, राजकीय सादुल उ.मा.विद्यालय कोटगेट, बीकानेर

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते– श्रीमद्भवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला नि:संदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 64 | अंक : 06 | मार्गशीर्ष–पौष २०७९–८० | दिसम्बर, 2023

प्रधान सम्पादक
काना राम
*
वरिष्ठ सम्पादक
सुनीता चावला
*
सम्पादक
डॉ. संगीता पुरोहित
*
सह सम्पादक
सीताराम गोदारा
*
प्रकाशन सहायक
सुचित्रा चौधरी
रमेश व्यास

मूल्य ₹ 20

वार्षिक सदस्यता राशि व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टर आर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चेक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखे।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकनेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **–वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- अधिकारों का सम्मान 3

आलेख

- मिठास कर्त्तव्य की 7
  ओमवती पारीक
- सफलता एवं यश का आधार है नियोजन 9
  ओम प्रकाश सारस्वत
- न बोलता तो? 11
  डॉ. मूलचंद बोहरा
- डाक की डायरी 13
  ओंकार गिरि गोस्वामी
- बचपन पर अवाम से गुफ्तगु 14
  सरदारसिंह चारण
- चिंता नहीं चिंतन कीजिए 16
  अभय कुमार जैन
- भारत रत्न एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी 18
  विजय सिंह माली
- आत्मविश्वास : विद्यार्थी का परम मित्र 19
  रीना
- दिव्यांग प्रमाण–पत्र बनवाने हेतु घर बैठे करें रजिस्ट्रेशन 20
  स्नेहलता शर्मा
- राष्ट्रीय गणित दिवस 21
  ओमप्रकाश लोधा
- गतिविधि आधारित शिक्षण: एक क्रांतिकारी कदम 24
  पंकज कुमार उपाध्याय
- शिक्षक राष्ट्र निर्माता 32
  शेरा राम सीमार
- उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि 33
  पवन रायकवाल
- शिक्षक 39
  नीलम धनवानी
- बालगीत: शिक्षा और संस्कारों के सुगमकर्त्ता 40
  कृष्ण बिहारी पाठक
- आज के समय में कैसा हो बाल साहित्य? 42
  जयसिंह सिकरवार
- धूमपान या धूम्रपान? 43
  अभिनव सरोवा

रपट

जापान यात्रा के अनुभव: बाल वैज्ञानिकों की जुबानी 35

स्तम्भ

- पाठकों की बात 6
- आदेश–परिपत्र: दिसम्बर, 2023 26–31
- शिविरा पञ्चाङ्ग 41
- बाल शिविरा 45–46
- शाला प्रांगण से 47–48
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 49
  आदित्य विजय
- हमारे भामाशाह 50–52

पुस्तक समीक्षा 44
- मन न भये दस बीस
  कथाकार : आशा पाराशर
  समीक्षक : **डॉ. संगीता पुरोहित**

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

मुख्य आवरण : संजय शर्मा

मासिक
शिविरा
पत्रिका

▼ चिन्तन

रथः शरीरं पुरुषस्य राजन्नात्मा
नियन्तेन्द्रियाण्यस्य चाश्वाः।
तैरप्रमत्तः कुशली सदश्वैर्दान्तैः सुखं याति
रथीव धीरः

यह मानव शरीर रथ के समान है, बुद्धि इसका सारथी है, इंद्रियाँ इसके घोड़े हैं। जो व्यक्ति सावधानी, चतुराई और बुद्धिमानी से इनको वश में रखता है वह श्रेष्ठ रथवान की भांति संसार में सुखपूर्वक यात्रा करता है। साथ ही इस जगत में मान सम्मान अर्जित करते हुए अपनी तथा कुल की कीर्ति के चार चांद लगाता है।

पाठकों की बात

राजस्थान की समस्त शैक्षिक गतिविधियों और नवाचारों का प्रतिबिंब कही जाने वाली मासिक पत्रिका 'शिविरा' का नवंबर 2023 अंक पढ़ने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। प्रत्येक अंक की भांति अपने मुखपृष्ठ द्वारा पत्रिका अनायास ही पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करती जान पड़ती है। दिशाकल्प स्तंभ में सदैव की भांति निदेशक महोदय श्री कानाराम द्वारा दिया गया संदेश जहाँ एक नई ऊर्जा और सकारात्मकता से ओतप्रोत करता है, वहीं दूसरी ओर शासन सचिव महोदय श्री नवीन जैन द्वारा प्रतिपादित 'पासबुक के दुष्परिणाम और पाठ्य पुस्तकों की महत्ता' विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को दिग्दर्शित करने के साथ-साथ इस दिशा में विचार करने पर भी प्रेरित करता है। डॉ. रणवीर सिंह कृत 'मिशन स्टार्ट 2023-24' समीक्षात्मक आलेख ज्ञानवर्धक रहा। इसके अतिरिक्त आशा रानी सुमन की कृति 'परिवर्तन का पर्याय-शिक्षक' वर्तमान परिदृश्य में शिक्षकों की क्षमताओं में संवर्धन की दिशा में मील का पत्थर प्रतीत होती है। इन सब के अतिरिक्त नरेंद्र कौर रचित 'गुरु नानक देव', विक्रम चौधरी का आलेख 'शिक्षक राष्ट्र निर्माता', डॉ. शंकर लाल शास्त्री की कथा 'वृक्षदेवों की सभा' तथा इला पारीक का लेख 'श्री विशालां विशालम्' पठनीय रहे। समसामयिक रचनाओं की श्रेणी में योगेश सैन की रचना 'भारत में टेलीविजन का सफरनामा' ओम जोशी का 'भारत चीन संबंध-शांति और संघर्ष' तथा सज्जन सिंह का' 'वर्षा जल संरक्षण' भी शिक्षाप्रद और जानकारी से भरपूर है। पत्रिका के शेष सभी स्तंभ प्रति अंक की भांति प्रशंसनीय है। बाल शिविरा के सभी नन्हें चित्रकारों को हृदय से साधुवाद। इस अतुल्य और आकर्षक अंक को पाठकों तक समय पर पहुँचाने वाली शिविरा पत्रिका की समस्त टीम का हृदय से कोटि-कोटि आभार। पत्रिका नित नवीन आयाम प्राप्त करें ऐसी शुभकामनाएं।

जितेन्द्र काला, डीडवाना-कुचामन

शिविरा पत्रिका की नवम्बर 2023 का अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का मुखावरण इंस्पायर मानक अवार्ड से सम्बन्धित एवं बच्चों के आकर्षक चित्रों सहित मुख पृष्ठ एवं अन्तिम पृष्ठ रंगीन एवं आकर्षक थे।

अन्तिम पृष्ठ पर श्री नवीन जैन शासन सचिव स्कूल शिक्षा एवं श्री कानाराम निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान के प्रेरणादायी चित्र दिए गए हैं जो संस्था प्रधानों के साथ समीक्षा बैठक एवं बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के चित्रों से सुसज्जित थे निदेशक महोदय ने दिशा कल्प -मेरा पृष्ठ में 'अप्प दीपो भव:' एवं शासन सचिव द्वारा पास बुक्स की दुनिया में कहीं खो न जाए विद्यालयी पाठ्य पुस्तकें संबंधी सन्देश रुचिकर एवं सराहनीय था।

डॉ. रणवीर सिंह की मिशन स्टार्ट 2023-24, आशा रानी सुमन का परिवर्तन का पर्याय शिक्षक, आभा शर्मा का रोल प्ले और लोक नृत्य प्रतियोगिता, योगेन्द्र कुमार शर्मा का राष्ट्रीय आकांक्षा और ज्ञान को बढ़ाते लाखों मस्तिष्क, नरेन्द्र कौर का गुरु नानक देव, योगेश सैन का भारत में टेलीविजन का सफरनामा, गोविन्द नारायण शर्मा की कालिदास का शिक्षा दर्शन, संजय कुमार का रसोई-घर TLM भण्डार, डॉ. चेतना उपाध्याय का नन्हें-मुन्नों की जिन्दगी और हमारा नजरिया, दिनेश कुमार का यूथ व इको क्लब का विद्यार्थी जीवन में महत्त्व, इन्द्रा का शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी, विक्रम चौधरी का शिक्षक है राष्ट्र निर्माता, डॉ. शंकर लाल शास्त्री का वृक्षदेवों की सभा, भावना मिश्रा का सफलता के सोलह सूत्र, पूनम पाण्डे की अमृत है बाल साहित्य, ओम जोशी का भारत चीन सम्बन्ध शान्ति और संघर्ष, इला पारीक का श्री विशालां विशालाम् अमित शर्मा का विद्यालय विकास योजना एक विमर्श, बृजकिशोर शर्मा को भारत में मुद्रण प्रतिबन्ध एवं स्वतन्त्रता, सज्जन सिंह का वर्षा जल संरक्षण, विजय प्रकाश जैन का पढ़ना है समझना, सीमा हिंगोनिया का मानवीय दृष्टिकोण के हकदार यह भी है आदि आलेख ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद एवं शिविरा पत्रिका में चार चाँद लगाने वाले थे।

बाल शिविरा पृष्ठ पर आरती सैन कक्षा 12 टोंक की कविता 'हवा' एव कृष्णा गुर्जर कक्षा -12 दाखिया टोंक की 'बेटियां' कविता बहुत ही रोचक थी। सुरेन्द्र सिंह पुनियाँ द्वारा भामाशाहों का उल्लेख प्रेरणादायी था। अन्तिम पृष्ठ पर बाल शिविरा में बनाए गए बच्चों के चित्र बहुत ही सुन्दर लगे।

शिविरा पत्रिका का नवम्बर माह का अंक सार रूप में बहुत अच्छा था।

ओम प्रकाश सैनी, जयपुर

मिठास कर्त्तव्य की

❒ **ओमवती पारीक**

पिछले दिनों अपने बेटों से परेशान होकर बुजुर्ग माता-पिता ने जब अदालत का दरवाजा खटखटाया तो इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा, हमारा देश महान संतान श्रवण कुमार की भूमि है, यहाँ बच्चों से अपने बुजुर्ग माता-पिता की उचित देखभाल करने की अपेक्षा की जाती है, लेकिन पीड़ादायक है कि नैतिक मूल्यों में इस कदर गिरावट आ गई है कि अपना सुख-चैन जिन बच्चों के लिए माता-पिता त्याग कर जीवन खत्म कर देते हैं, वही बच्चे उन्हें बुढ़ापे में दो जून की रोटी और मोहब्बत के लिए तरसा रहे हैं।

यक्ष प्रश्न यह है कि आखिर ऐसा होता क्यों है? दरअसल मानव का पहला कर्त्तव्य ही धर्म का पालन करना होता है। यदि संतान इस बात को समझ लें या हम उन्हें समझा दें कि बिना किसी अपेक्षा के माता-पिता का आदर करना तथा यत्नपूर्वक सेवा करना उनका कर्त्तव्य है और कर्त्तव्य की पालना करना धर्म है, तो यह नौबत कभी न आए।

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता
मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजए

मनुष्य के लिए उसकी माता समस्त तीर्थों के समान होती है तथा पिता सभी देवताओं के समान पूजनीय होते हैं।

जो दूसरे का अधिकार होता है, वही एक का कर्त्तव्य होता है। गाँधी जी का विचार था कि ''हमारे अधिकारों का सही स्रोत हमारे कर्त्तव्य होते हैं, और यदि हम अपने कर्त्तव्यों का सही ढंग से निर्वाह करेंगे तो हमें अधिकार मांगने की आवश्यकता नहीं होगी।'' अच्छे समाज में प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्त्तव्य-पालन के द्वारा दूसरे के अधिकार की रक्षा करनी होती है। कर्त्तव्य ही नीतिशास्त्र का केंद्र है। कई बार लोग अपने कर्त्तव्य की पालना नहीं करते, उनका तर्क होता है कि जब दूसरे अपने कर्तव्य का निर्वहन नहीं करते तो हम क्यों करें, दूसरे का कर्त्तव्य देखने से मनुष्य स्वयं कर्त्तव्यच्युत हो जाता है। व्यक्ति यदि खुद कर्त्तव्यपालन करे तो दुनिया को बदलने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

उद्वेलित करने वाली एक बात और सामने आई है कि डिप्रेशन के चलते पिछले आठ महीनों में अकेले कोटा शहर में 24 विद्यार्थियों ने आत्महत्या कर ली। आशातीत परिणाम न मिलने से हुई निराशा कोचिंग नगरी में खुदकशी की वजह बनी। इंडियन साइकियाट्रिक सोसायटी के एक सर्वे के मुताबिक भारत में मानसिक रोग के मरीजों की संख्या 20 फीसदी तक बढ़ी हैं तथा भारतीय चिकित्सा शोध परिषद (आईसीएमआर) के आंकड़ों के अनुसार भारत का हर सातवां व्यक्ति मानसिक रोग का शिकार है।

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' का सिद्धांत बच्चा-बच्चा जानता है, लेकिन लोग कर्त्तव्य के बजाय परिणाम पर अधिक केन्द्रित होते हैं। बाजारवाद के इस युग में परिणाम ही कार्य के मूल्य का निर्धारण करता है। परिणामवाद के चलते अक्सर लोग असमंजस की स्थिति में आ जाते हैं और किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं। ऐसे में यह समझना आवश्यक है कि यदि कर्त्तव्य का पालन पूर्ण निष्ठा के साथ किया जाए तो अच्छे परिणाम स्वतः ही निकलते हैं। कर्त्तव्यवाद एवं परिणामवाद की तुलना करें तो निःसंदेह कर्त्तव्यवाद परिणामवाद से श्रेयस्कर सिद्ध होगा, इसीलिए आज व्यवसायिक और व्यापारिक जगत में भी ड्यूटी पर अत्यधिक जोर दिया जा रहा है। कर्त्तव्य ही ऐसा आदर्श है जो कभी भी धोखा नहीं दे सकता। कर्त्तव्य के निर्वहन की प्रक्रिया कठोर और अनुशासन प्रधान जरूर हो सकती है, लेकिन भावप्रधान नहीं।

भारतीय दर्शन में 'कर्त्तव्येन कर्ताभि रक्षयते' की अवधारणा भी है। व्यक्ति यदि इस बात को समझ ले कि कर्त्तव्य ही कर्ता की रक्षा करता है तो वह निश्चित रूप से अपने कर्त्तव्य की राह पर निर्भयता से आगे बढ़ सकेगा।

पशु, पक्षी, वृक्ष आदि के द्वारा स्वाभाविक परोपकार (कर्त्तव्यपालन) होता है, किन्तु मनुष्य को विशेष विवेक-शक्ति मिली हुई है। अतः यदि वह अपने विवेक को महत्त्व देकर अकर्त्तव्य न करे तो उसके द्वारा भी स्वाभाविक लोक-हितार्थ कर्म हो सकते हैं।

कुछ लोगों का मानना है कि फल की इच्छा का त्याग करने पर कर्मों की प्रवृत्ति ही नहीं रहेगी यानि कार्य करने की इच्छा ही समाप्त हो जाएगी। जबकि ऐसा नहीं है क्योंकि कर्म तो कर्त्तव्य की भावना से किए जाते हैं और कर्मयोग (निःस्वार्थभाव से किया जाने वाला कर्त्तव्य-कर्म) भी यही सिखाता है। कर्मयोग की परम्परा अनादिकाल से ही चली आ रही है। यह कोई नयी बात नहीं है। कर्त्तव्य आधारित व्यवस्था और जीवन शैली ने हमारे देश को युगों तक सुखी तथा समृद्ध बनाए रखा।

श्रीमद्भगवद्गीता में बताया गया है कि शास्त्र और वेदों के अनुकूल किए जाने वाले कर्म सीधे-सीधे कर्त्तव्य से जुड़े हैं। जो कार्य किया जाना अपेक्षित है उसे न करना अकर्म है और जो निषेध (पाप) कर्म है उसे करना विकर्म है।

सामान्यत: कर्त्तव्य शब्द का अभिप्राय उन कार्यों से होता है, जिन्हें करने के लिए व्यक्ति नैतिक रूप से प्रतिबद्ध होता है। इस शब्द से वह बोध होता है कि व्यक्ति किसी कार्य को अपनी इच्छा, अनिच्छा या केवल बाह्य दबाव के कारण नहीं करता है अपितु आन्तरिक नैतिक प्रेरणा के ही कारण करता है। अत: कर्त्तव्य के पार्श्व में सिद्धान्त या उद्देश्य की प्रेरणा है। कर्त्तव्य शब्द में 'कर्म' और 'दान' इन दो भावनाओं का सम्मिश्रण है। इस पर नि:स्वार्थता की अस्फुट छाप है। कर्त्तव्य मानव के किसी कार्य को करने या न करने के उत्तरदायित्व के लिए दूसरा शब्द है।

समय, काल, अवस्था और योग्यता के अनुसार कर्त्तव्य भी बदलते रहते हैं। विद्यार्थी जीवन में गुरुओं तथा अपने सहपाठियों के साथ हमारे कर्त्तव्य जुड़ जाते हैं। युवावस्था में अपने पड़ोसियों, नाते-रिश्तेदारी के अतिरिक्त राष्ट्र के साथ भी हमारे कर्त्तव्य जुड़ जाते हैं। गृहस्थ जीवन तो कर्त्तव्यों को निभाने का सबसे मुश्किल दौर होता है। वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम में भी हमारे कर्त्तव्य समाप्त नहीं होते अर्थात कर्त्तव्य हमारे जन्म से लेकर मृत्यु तक चलते हैं। स्वयं की, परिवार, समाज, देश तथा संसार की उन्नति के लिए किए गए कार्य ही कर्त्तव्यों का निर्वहन है। जीवन की हर विभूति कर्त्तव्य परायणता पर निर्भर है। बहुमूल्य मानव शरीर को निरोगी और दीर्घ जीवी तभी बनाया जा सकता है जब हम शरीर को स्वस्थ रखने के कर्त्तव्य का निर्वहन करें।

मानव को यथाशक्ति और आवश्यकता अनुसार कार्य करना ही उसका कर्त्तव्य परायण होना कहलाता है। मानव जीवन कर्त्तव्यों का भंडार है। उसके कर्त्तव्य उसकी अवस्था अनुसार छोटे और बड़े होते हैं। इसको पूर्ण करने से जीवन में उल्लास आत्मिक शांति और यश मिलता है। कर्त्तव्य परायण व्यक्ति का अंतः करण हमेशा

स्वस्थ और सरल होता है। वह निर्भीक होता है, उसके जीवन में उत्साह और आकांक्षाओं की लहरें हिलोरें मारती है। उसके शत्रु उससे कोसों दूर भागते हैं, उसकी विघ्न बाधाएं उसके मार्ग को छोड़ देते हैं। उसका सर्वत्र सम्मान होता है। वह महापुरुषों के रूप में पूजा जाता है। उसकी शक्ति पर लोगों को विश्वास होता है। जैसे पन्नाधाय ने अपने कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए अपने एकमात्र पुत्र का बलिदान कर दिया था। जो मानव लज्जा, भय, निद्रा और विघ्नों की चिंता न करके अपने-अपने कर्त्तव्य पर अडिग रहते हैं, वे अपने जीवन में सफल होते हैं। यदि मन को उत्साह, उल्लास, धैर्य, साहस, संतोष, विश्वास, संतुलन, स्थिरता और एकाग्रता जैसे सद्गुणों से सुसज्जित रखा जाए तो कर्त्तव्य पथ पर असानी से बढ़ा जा सकता है। कर्त्तव्य-पालन और सत्यता में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। जो मनुष्य अपना कर्त्तव्य पालन करता है, वह अपने कामों और वचनों में सत्यता का बर्ताव भी रखता है।

वर्ण व्यवस्था में योग्यता और व्यवसाय के अनुसार कुछ विशेष कर्त्तव्यों का भी पालन करना होता है। कर्त्तव्य की पालना मन लगा कर की जाए तो क्षमता बढ़ जाती है हम अवर्णनीय आनन्द को प्राप्त कर सकते हैं। मन को साधने और सुसंस्कृत बनाने की जिम्मेदारी उस प्रत्येक व्यक्ति की है जिसे मानसिक क्षमता का वरदान मिला है। महत्त्वपूर्ण कार्य सदा ही उन्हीं के द्वारा संपन्न होते हैं जो कर्तव्य पालन को प्राणों से अधिक प्यार करते हैं। फौजी का फर्ज़ राष्ट्र रक्षा करना होता है। कर्त्तव्य के आनन्द से मस्त सैनिक मातृभूमि की रक्षा हेतु हर्षित मन से फांसी के तख्ते पर लटक जाता है और उसकी अमर गाथा पुण्य पराग के समान सर्वत्र फैल जाती है। चिकित्सक का कर्त्तव्य निदान और उपचार के माध्यम से सेवा करना, किसान का फर्ज़ है खेती के द्वारा अन्नादि को उपजाना होता है। संत, ब्राह्मण, पुरोहित, नेता और प्रवचन कर्ता का कर्त्तव्य है कि अपनी जिम्मेदारी के प्रति निष्ठावान रहते हुए जन कल्याण के कार्य करें। व्यापारी का कर्त्तव्य है कि समाज की आवश्यकताओं को पूरी करते हुए समृद्धि के लिए उन्नयन करे। जिस प्रकार प्रत्येक शासक का कर्त्तव्य अपनी प्रजा की रक्षा करना है, न्याय करना होता है तथा मूलभूत सुविधाएं देना होता है, उसी प्रकार प्रजा का कर्त्तव्य भी पुनीत कार्य में सहयोग देना होता है, अपनी क्षमता के अनुसार योगदान करना होता है।

आश्चर्य की बात है कि हमारे देश में 0.1 प्रतिशत नागरिक ही भारत के संविधान में वर्णित कर्त्तव्यों को पूरा करते हैं। वर्ष 2016 में दायर की गई एक जनहित याचिका में यह तथ्य सामने आया कि सुप्रीम कोर्ट के वकीलों, जजों और सांसदों सहित देश के लगभग 99.9 प्रतिशत नागरिक संविधान में वर्णित कर्त्तव्यों को पूरा नहीं करते हैं। उसका सबसे मुख्य कारण यह है कि उन्हें इस संबंध में जानकारी ही नहीं है।

विदित है कि आपातकाल के दौरान भारतीय संविधान के भाग IV-A में 42वें संशोधन अधिनियम, 1976 के माध्यम से मौलिक कर्त्तव्यों का समावेशन किया गया था। वर्तमान में अनुच्छेद 51(A) के तहत वर्णित 11 मौलिक कर्त्तव्य हैं, जिनमें से 10 को 42वें संशोधन के माध्यम से जोड़ा गया था जबकि 11वें मौलिक कर्त्तव्य को वर्ष 2002 में 86वें संविधान संशोधन के ज़रिए संविधान में शामिल किया गया था। मौलिक कर्त्तव्यों के तहत नैतिक और नागरिक दोनों ही प्रकार के कर्त्तव्य शामिल किए गए हैं। उदाहरण के लिए 'स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय संघर्ष को प्रेरित करने वाले महान आदर्शों का पालन करना एक नैतिक कर्त्तव्य है, जबकि 'संविधान का पालन करना और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज एवं राष्ट्रीय गान का आदर करना' एक नागरिक कर्त्तव्य है।

संविधान के अनुसार मौलिक कर्त्तव्य गैर-न्यायोचित या गैर-प्रवर्तनीय (non-enforceable) होते हैं अर्थात उनके उल्लंघन के मामले में सरकार द्वारा कोई कानूनी प्रतिबंध लागू नहीं किया जा सकता है। संविधान के तहत उल्लेखित मौलिक कर्त्तव्य भारतीय परंपरा, पौराणिक कथाओं, धर्म एवं पद्धतियों से भी संबंधित है। गैर-प्रवर्तनीय होने के बावजूद भी मौलिक कर्त्तव्य की अवधारणा भारत जैसे लोकतांत्रिक राष्ट्रों के लिए महत्त्वपूर्ण है।

संविधान में उपबंधित मौलिक कर्त्तव्य

- संविधान का पालन करना और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज एवं राष्ट्र गान का आदर करना।
- स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय संघर्ष को प्रेरित करने वाले महान आदर्शों का पालन करना।
- भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को बनाए रखना और उसकी रक्षा करना।
- देश की रक्षा करना और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करना।
- भारत के लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करना जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग आधारित सभी प्रकार के भेदभाव से परे हो। साथ ही ऐसी प्रथाओं का त्याग करना जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है।
- हमारी समग्र संस्कृति की समृद्ध विरासत को महत्त्व देना और संरक्षित करना।
- वनों, झीलों, नदियों और वन्यजीवन सहित प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा एवं सुधार करना और प्राणिमात्र के लिए दयाभाव रखना।
- मानवतावाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा ज्ञानार्जन एवं सुधार की भावना का विकास करना।
- सार्वजनिक संपति की सुरक्षा करना एवं हिंसा से दूर रहना।
- व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधि के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता के लिए प्रयास करना ताकि राष्ट्र लगातार उच्च स्तर की उपलब्धि हासिल करे।
- 6 से 14 वर्ष तक के आयु के अपने बच्चों को शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराना (86वें संविधान द्वारा जोड़ा गया)।

कर्तव्य की पालना करना चित्त की शांति का मूलमंत्र है। भारतीय दर्शन में देव ऋण, पितृ ऋण एवं ऋषि ऋण से उऋण होने के कर्तव्य मूलक सिद्धान्त का सुखवाद से सुन्दर समन्वय किया गया है।

आदर्श शिक्षक का कार्य कर्त्तव्य की मिठास का बोध कराना है साथ ही कर्त्तव्य पालन न करने के दुष्परिणामों से अवगत कराना भी है। अपने छात्रों के हृदय पर से अज्ञानता का आवरण हटाकर उन्हें आदर्शवादी बनाना नैतिक और वैधानिक कर्त्तव्यों का पालन करते हुए विद्यार्थियों को भी कर्त्तव्यनिष्ठ बना कर सफलता की राह आसान करना है।

उप निदेशक,
राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, अजमेर
मो.: 9413866365

प्रबंध व प्रशासन

सफलता एवं यश का आधार है नियोजन

❒ ओम प्रकाश सारस्वत

किसी कार्य को प्रारंभ करने से पूर्व उसकी स्पष्ट रूपरेखा तैयार कर लेना उस कार्य विशेष का नियोजन कहलाता है। इतना ही नहीं बल्कि किए कार्य को प्रभावी एवं अधिक फलदायी बनाने के लिए कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व आवश्यक तैयारी एवं उस कार्य को ठीक से कर लेने के लिए अपेक्षित आवश्यक सामग्री संसाधन भी एकत्र कर लिए जाने अपेक्षित होते हैं। भवन निर्माण कार्य से जुड़े एक मिस्त्री का उदाहरण लेते हैं। प्रतिदिन निर्माण कार्य से सम्बन्धी अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करने के लिए प्रस्थान करने से पूर्व वह अपने दिलों दिमाग में यह स्पष्ट कर लेता है कि उसे आज क्या काम करना है जैस ईंट चिनाई का कार्य अथवा दीवारों पर पलस्तर का कार्य अथवा छत डालने का कार्य इत्यादि-इत्यादि।

कार्य का स्पष्ट निर्धारण मस्तिष्क में हो जाने के पश्चात वह यह सोचता है कि इस कार्य को करने के लिए उसे कौन-कौन से औजारों की आवश्यकता होगी। वह उन तमाम औजारों को अपने थैले में रखना सुनिश्चित करता है।

निर्धारित कार्य को करने के लिए यदि कोई सलाह मंत्रणा किसी के साथ करनी है तो वह ऐसा विचार विमर्श कर लेता है।

भवन निर्माण कार्य से जुडे मिस्त्री का दृष्टान्त इसलिए दिया है क्योंकि ऐसे मिस्त्री से हमारा पाला अवश्य पड़ा हुआ है और हम उसकी कार्य प्रणाली को बहुत अच्छे से देखते-जानते आए हैं। क्या आपने कभी ऐसा मिस्त्री देखा है जो काम पर आने के पश्चात कहे कि मैं तो अपनी करनी/वसौली/छेणी/पट्टी भूल आया और अब उसे लेने जा रहा हूँ। कदाचित ऐसा उदाहरण हम में से किसी ने भी शायद ही देखा हो। यदि देखा सुना है तो उसे अपवाद ही माना जाना चाहिए। एक क्षण के लिए मान लेते हैं कि ऐसे अपवाद मिस्त्री से आपका पाला पड़ गया तो जरा ईमानदारी से बताएं कि-

ऐसे मिस्त्री के बारे में आपके दिमाग में कैसी तस्वीर बनेगी?

क्या ऐसे मिस्त्री को आप स्वीकार करेंगे? जवाब निश्चित ही नहीं होगा। एक बार हो सकता है कि आप स्वीकार कर लें मगर फिर से ऐसा होने पर आप सोलह आना शत प्रतिशत उन्हें वापिस लौटा देंगे।

अच्छा मिस्त्री कुल काम की अनुमानित कार्य अवधि सोच विचार कर तय कर लेता है। काम करवाने वाले मालिक व्यक्ति से चर्चा करके तदनुसार कुल अवधि एवं कुल अवधि का उप विभाजन करके प्रतिदिन का नियोजन कर लेता है। इस प्रकार में नियोजन एवं कार्य निष्पादन रणनीति के बल पर वह यशपूर्वक सारे काम तय सीमा में कर गुजरता है।

सुविचारित स्पष्ट नियोजन एवं क्रियान्वयन से उत्तम परिणाम एवं यश प्राप्त करने का भवन निर्माण मिस्त्री से जुड़ा यह उदाहरण किसी भी अन्य कार्य से जोड़कर देखा जा सकता है। शिक्षा क्षेत्र में इसे देखते हैं, तो हम पाते हैं कि-

एक शिक्षा अधिकारी/संस्था प्रधान के मस्तिष्क में वे बातें निरन्तर कोंधती रहती है जिन्हें उसके द्वारा दिया अथवा करवाया जाना है।

प्रबंध एवं प्रशासन में कार्य एवं कार्यकर्त्ताओं (अधिकारी-कर्मचारी) की एक चैन होती है। उच्च अधिकारियों से निर्देश प्राप्त होते रहते हैं और कार्य से सम्बद्ध व्यक्तियों तथा उनके सम्प्रेषण, प्रबोधन एवं नियंत्रण का कार्य चलता रहता है।

शिक्षक उन बातों को अपने दिलों दिमाग में संजोए रखता है, जिनसे उनका वास्ता है। शिक्षक मुख्यत: शिक्षण कार्य करता है, अत: किस कक्षा/वर्ग को अमुक विषय में कहाँ तक शिक्षण करवा दिया है, कितना शेष रहा है, पुनरावृत्ति एवं कठिन अंशों का पुनर्शिक्षण, गृह कार्य, परख, परीक्षाएं, विद्यार्थियों की व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान आदि-आदि।

शिक्षक का प्रमुख कार्य तो निसंदेह पढ़ाना है, शिक्षण के साथ विद्यालय की सहायक सहगामी प्रवृत्तियों में भी वह सहयोग करता है। सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रार्थना-पत्र, बाल-सभा, एनसीसी, स्काउट-गाइड, क्रीडा, एसयूपीडब्ल्यू, अध्यापक-अभिभावक बैठकें, जन सहयोग (भामाशाह), बोर्ड परीक्षा, स्थानीय परीक्षा, पोषाहार, आर.टी.ई. नामांकन एवं ठहराव अभियान, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य आदि दर्जनों गतिविधियाँ एक विद्यालय में होती है जिनमें शिक्षकों को सहयोग करना होता है।

एक संथा प्रधान को विद्यालय संचालन के अलावा विभागीय उच्च अधिकारियों सी.बी.ई.ओ.-सी.डी.ई.ओ-डी.ई.ओ.-संयुक्त निदेशक-निदेशक एवं उच्च कार्यालयों

(विभागीय एवं परिषदें) से प्राप्त निर्देशों के अनुरूप भी काम करना होता है।

संस्थान प्रधान एवं शैक्षणिक स्टाफ शिक्षक गण के अलावा विद्यालय में मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी भी कार्य करते हैं। उनके भी अपने-अपने जोब चार्ट है। सहायक कर्मचारी के विभाग में विद्यालय में साफ सफाई से लेकर उसकी सुरक्षा, विद्यार्थियों व स्टाफ के लिए पेयजल की व्यवस्था जैसी बातें आती रहती है। मंत्रालयिक कर्मचारी विद्यालय स्टाफ के संस्थान, वित्तीय एवं लेखा सम्बन्धी कार्यों के निष्पादन के लिए काम करते हैं। मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी किसी भी विद्यालय/कार्यालय के लिए मेरुदण्ड की भांति होते हैं। ये वे लोग हैं जिनकी तत्परता से संस्था प्रधान एवं शिक्षक चिंता मुक्त होकर तसल्ली से अध्ययन-अध्यापन कार्य करते हैं।

अब तक के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो गया है कि किसी भी कार्य के कुशल क्रियान्वयन के लिए उसका सुनियोजित होना बहुत जरूरी है। अत: शिक्षा विभाग से संबंधित अधिकारियों/कर्मचारियों और शिक्षकों को हर काम को तसल्ली से यथा समय नियोजित कर योजनानुसार स्टेप बाई स्टेप सब काम करें। व्यवस्था में संस्था प्रधान से लेकर शिक्षकों व अन्य कार्मिकों के लिए उनकी कार्य प्रणाली में डायरी का प्रावधान किया हुआ है। यह डायरी उनके कार्यों की स्पष्ट रूप रेखा का मानचित्र है। यह उनका सुरक्षा कवच है। चर्चा को शिक्षक तक सीमित करके देखें तो-

1. डायरी में अंकित वार्षिक शिक्षण योजना उसे यह बताती है कि उसे कितनी दूर चलना है यानी कब तक क्या-क्या कार्य करना है।

2. डायरी अनावश्यक भटकाव, बिखराव व अप्रांसगिक होने से बचाती है।

3. रोजाना की डायरी आज क्या काम करना है कि जानकारी प्रदान करती है। डायरी को पढ़ते ही अब तक हो चुके काम और आगे शेष रहे काम की जानकारी भी सहज ही में मिल जाती है।

4. डायरी का अवलोकन संस्था प्रधान द्वारा किया जाकर उसकी टिप्पणी एवं हस्ताक्षर उसमें मौजूद रहते हैं। यह इस बात का प्रमाण होता है कि आपने अमुक दिन अमुक कार्य किया है। इस प्रकार यह आपके लिए सुरक्षा कवच से कम नहीं है।

5. डायरी के प्रारम्भिक पृष्ठों पर स्वयं शिक्षक के बारे में आवश्यक जानकारी लिखी रहती है। इससे इस एक पृष्ठ को देखते ही सूचनाएं प्राप्त हो जाती है। इस पृष्ठ पर यदि फोटो लगाकर उसे संस्था प्रधान से प्रमाणित करवा लिया जावे तो यह आपके लिए प्रमाणित परिचय पत्र बन जाता है।

6. शिक्षक पाठ योजना डायरी शिक्षक पुरस्कार प्रस्तावों पर विचार करते समय देखी जाती है। अच्छी तरह से नियमानुसार डायरी संधारण करने वाले शिक्षकों को पुरस्कार-सम्मान में प्राथमिकता दिए जाने का प्रावधान रहा है।

7. प्राय: शिक्षक की पाठ योजना डायरी में पारी वार विद्यालय की समय सारणी एवं स्वयं शिक्षक के कक्षा व विषयवार कालांशों का उल्लेख रहता है। अत: ये आवश्यक जानकारी रेडी रेफरेंश के लिए सहज उपलब्ध रहती है। समय सारणी में गर्मी व सर्दी दोनों ऋतुओं के लिए विभिन्न कालांशों, प्रार्थना सभा, योगाभ्यास, मध्यान्तर आदि के लिए निर्धारित समय का स्पष्ट उल्लेख रहता है।

8. शिक्षक डायरी में शिक्षण की वार्षिक योजना का प्रारूप रहता है। जो शिक्षक विस्तार से इकाई व माहवार अपनी वार्षिक योजना बना लेते हैं, उन्हें वर्ष भर यह योजना पथ भटकाव से बचाती है। दैनिक पाठ योजना में विषय व अध्याय के अन्तर्गत इकाई/उप इकाई के प्रमुख शिक्षण बिन्दु, कक्षा एवं गृह कार्य का विवरण अंकित रहता है। साथ ही पृष्ठ पर अन्त में संस्था प्रधान की अवलोकन टिप्पणी एवं हस्ताक्षर होते हैं। इससे अध्यापक का कार्य प्रमाणित हो जाता है।

9. शिक्षक डायरी में कक्षा में कमजोर, समस्याग्रस्त एवं मेधावी छात्र-छात्राओं के भी नाम रहते हैं। समय-समय पर बुलाए जाने पर अथवा स्वयं पहल कर आए अभिभावकों के नाम, पते, सम्पर्क नम्बर, आने की तिथि, बातचीत का संक्षिप्त विवरण आदि अंकित रहते हैं। इससे डायरी देखकर तत्काल जानकारी दी जा सकती है।

10. शिक्षक के लिए पाठ योजना डायरी का संधारण करना अनिवार्य भी है। इसके लिए समय-समय पर आदेश जारी होते रहते है। डायरी विद्यालय प्रशासन की ओर से बिना कोई मूल्य लिए शिक्षकों को उपलब्ध करवाई जाती है। वर्ष के अन्त में डायरी संस्था प्रधान को फाइनल अवलोकन करवाकर वापिस भण्डार को जमा करवानी होती है। डायरी संधारण में लापरवाही बरतने पर संबंधित के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जा सकती है।

अन्त में सार रूप में यही कहा जा सकता है कि शिक्षक व अन्य कार्मिकों व संस्था प्रधान को नियमित रूप से अपनी डायरी का संधारण करना चाहिए। नियोजन सभी सफलताओं की जननी हैं। जो लोग अपने जीवन में सभी कार्य योजनाबद्ध ढंग से करते हैं, वे अपना काम तो करते ही है, साथ ही समय बचाकर अन्य कार्यों में भी मदद करते हैं। जो लोग योजना बनाकर यों ही कार्य करते हैं, वे अपना काम ठीक से नहीं कर पाते। यश एवं सफलता के लिए सुनियोजित स्पष्ट योजना बनाकर उसके अनुसार काम करना चाहिए।

शिक्षा संयुक्त निदेशक (से.नि.)
ए-विनायक लोक, बाबा रामदेव जी रोड,
गंगाशहर, बीकानेर
मो.: 94140-60038

न बोलता तो?

❒ डॉ. मूलचंद बोहरा

कितना कब और कैसे बोलना है, शिक्षकों को यह जानना बहुत जरूरी है। यह जानना जरूरी इसलिए है कि शिक्षक और वकील के बारे में आम धारणा है कि दोनों बोलकर ही अपना काम चलाते हैं। यहाँ बोलने का आशय लक्षणा के द्वारा लिया जाता तो ठीक था परंतु प्रायः देखने में आता है कि इसका प्रयोग अभिधा में लिया जाता है। बोलने का मतलब बोलना, कुछ भी बोलना जिससे कक्षा में अनुशासन बना रहे। कक्षा में शोरशराबा न हो। जो शिक्षक पढ़ा रहे हैं। उसे बच्चे चुपचाप सूनी आंखों से देखते रहे। ना कोई हलचल ना कोई सवाल न कोई जवाब। बस वही बोलना जो शिक्षक कक्षा में आने से पहले सोचता है या उस समय उसके मुँह में जो आए, वो ।

दरअसल यह बोलना घातक है। बच्चों के मानसिक विकास, उसकी रचनात्मकता व उसकी जिज्ञासा के साथ खिलवाड़ है। शिक्षक का बोलना सब्जी में बघार जैसा होना चाहिए। जैसे बघार से सब्जी का स्वाद बढ़ जाता है परंतु बघार की मात्रा ज्यादा या तेज करने पर मूल सब्जी का स्वाद दब जाता है, वैसे ही शिक्षक के अधिक बोलने या अनावश्यक बोलने से बच्चे का स्वाभाविक विकास दब जाता है और धीरे-धीरे बच्चा दब्बू बनने लगता है। उसकी जिज्ञासा, उसके सवाल व उसकी रचनात्मकता मन के कोने में दबी की दबी रह जाती है। बोलने से ज्यादा शिक्षक को चुप रहना जरूरी है। कारण, बच्चे अमूर्त शब्दों सवालों आदि को समझने में वक्त लेते हैं। हमारा मस्तिष्क का तंत्रिका विधान ही ऐसा बना होता है कि उक्त अमूर्त प्रत्ययों को समझने में वक्त लगता है।

रूसी शिक्षाविद वसिली सुखोमिलिन्सकी अपनी पुस्तक बाल हृदय की गहराइयों में लिखते हैं- 'बच्चों के लिए केवल अध्यापक की बातें सुनना ही जरूरी नहीं है, चुप रहना भी उतना ही आवश्यक है। इन क्षणों में वह सोचता है। वह उन सब बातों को समझने की कोशिश करता है जो उसने देखी और सुनी है । अध्यापक के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि उसे कब चुप हो जाना चाहिए। बच्चों को किसी हालत में भी निष्क्रिय श्रोता नहीं बनने देना चाहिए। हर अमूर्त बिम्ब को समझ पाने के लिए चाहे वह कोई ठोस बिम्ब हो या शब्दों की सहायता से बनाया गया चित्र। उसे समझ पाने के लिए बच्चे को काफी समय और ऊर्जा की आवश्यकता होती है। बच्चों को सोचने- समझने का अवसर देना अध्यापक का एक सबसे महत्त्वपूर्ण और अत्यंत सूक्ष्म गुण है।'

मानव जिसने जो कुछ सीखा, समझा व जाना है, वह पूरा का पूरा ज्ञान सामने वाले के सामने उड़ेलना चाहता है। यह उसकी प्रकृतिगत विशेषता है। शिक्षक भी मानव होता है, वह इससे अछूता कैसे रह सकता है। इसलिए उसे प्रयास पूर्वक अपने आप में यह बदलाव लाना होगा कि बच्चों को उतना ही बताया जाए जिसे बच्चे पचा सकें। उन्हें स्वयं के बनाए चित्र पर चिंतन करने का अवसर दिया जाए। उन्हें उसके विभिन्न आयामों पर सोचने को प्रेरित किया जाए। अगर आप बच्चे को पुस्तक पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहते हैं तो केवल एक या दो किताब के बारे में बताइए। उसे किताब के बारे में बताइए परंतु बताएँ उतना ही जितना कि बच्चों में जिज्ञासा, रुचि व उत्प्रेरण का भाव बनाए। किताब के बारे में बाकी बातें या विशेषताएं बच्चों को खुद ब खुद खोजने के मौके दिए जाए। किताब पढ़ चुकने के बाद या दौरान उनसे संवाद या प्रश्नोत्तर किए जा सकते हैं। इसके जरिए शिक्षक बच्चों के भीतरी ज्ञान को बाहर निकालने का प्रयास कर सकता है।

न बोलते, तो अच्छा था यह मलाल अक्सर तब होता है जब हम किसी अवसर पर ज्यादा या उलट पुलट बोल देते हैं और माहौल तनावपूर्ण हो जाता है या फिर महसूस होता है कि फालतू ही क्यों बोले इससे अच्छा था, न बोलते, यही मलाल या कुछ कुछ वैसी अनुभूति हमारी पढ़ाने के दौरान या पश्चात होती है। अक्सर हम कोशिश करते हैं कि हम पूरा का पूरा ज्ञान विद्यार्थियों को दे देंगे। जबकि सच्चाई यह है कि वे सीखते अपने तरीके से हैं। हम केवल उन्हें दिशा दे सकते हैं। उन्हें उत्प्रेरित कर सकते हैं या फिर उन्हें संदर्भित विषय वस्तु के प्रति मोड़ सकते हैं। हम ही, केवल हम ही सब कुछ है या हम ही सिखा सकते हैं, यह शिक्षक की नासमझी है। इससे शिक्षक को बचना चाहिए। इससे बच्चों को नुकसान होता है। हम समझाने के चक्कर में तरह-तरह से थूक बिलोते हैं। हम कोशिश करते हैं कि कैसे-न-कैसे बच्चे सीख जाएं परंतु होता इससे उल्टा है। ज्यादा बोलने से अथवा फालतू बोलने से बात जो बन रही होती है, वही बिगड़ जाती है। यह सीखना-सिखाना न रहकर मात्रा सीखने का एक आडम्बर बनकर रह जाता है। हिंदी कवि कुंवरनारायण ने एक कविता में लिखा है

बात सीधी थी
पर एक बार भाषा के चक्कर में
जरा टेढी फंस गई
उसे पाने की कोशिश में
भाषा को उल्टा-पुल्टा
तोड़ा मरोड़ा
घुमाया फिराया
कि बात या तो बने या फिर भाषा से बाहर आए आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
जोर जबरदस्ती से बात की चूड़ी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी

यही बात शिक्षक के बोलने के साथ होती है। उसे लगता है, मैं अधिक बोलूंगा, तरह-तरह से बोलूंगा तो शिक्षण प्रभावी होगा। बच्चे ठीक से सीखेंगे लेकिन ऐसा नहीं होता है। ऐसे मौके पर बोलने से ज्यादा चुप रहना चाहिए, कारण, सब बच्चों को बोलने का अवसर मिल जाता है। वे बोलेंगे, समस्या बताएंगे व समझ के अवरोध खोलेंगे तो हम उसके अनुसार सीखने के तौर तरीको में बदलाव कर सकते हैं। संभव है उन बच्चों में से ही कुछ बच्चे ऐसे उभर आए जो हमसे बेहतर तरीके से बोलकर या समझकर विषय की विविध परतों को खोल सकते हैं। शिक्षण में हमारा बोलना जरूरी नहीं होता बल्कि सिखाना जरूरी होता है। इसलिए सीखने सिखाने के लिए अगर चुप रहना बेहतर है तो चुप रहना चाहिए ।

'सबसे कम सिखाना और सबसे अधिक

सीखना–यह शिक्षाशास्त्र का एक सर्वसम्मत सिद्धांत है। इसमें शिक्षक से अपेक्षा रहती है कि वह बच्चों को सीखने के अधिक से अधिक मौके उपलब्ध करवाए। अपनी रचनात्मक प्रतिभा से उन्हें सीखने के नए–नए आयाम को खोलना सिखाए। सीखना कभी भी एकरेखीय नहीं होता उसमें ऊपर नीचे, इधर–उधर, दाएं बाएं सब ओर चलना पड़ता है। तभी पूर्ण क्षमता से सीखना हो पाता है।

भाषा के उदाहरण से समझना चाहें तो एक संज्ञा प्रकरण का उदाहरण ले सकते हैं। वैसे संज्ञा पर सामान्य बातचीत तथा उसकी परिभाषा को पंद्रह बीस मिनट में समझाया जा सकता है परंतु बच्चों को उसे सही रूप में समझने के लिए काफी वक्त लगता है । उसके एक–एक उदाहरण को अनुभव व संज्ञान के साथ ताल में बिठाते हुए समझना पड़ता है। अगर बच्चे को प्रयास पूर्वक विभिन्न उदाहरण प्रयोग नहीं बताए जाएंगे तो वह ठीक से संज्ञा को समझ नहीं पाएगा। यही कारण है कि शुरुआती कक्षा से इस संप्रत्यय का ज्ञान करवाने के बावजूद महाविद्यालय स्तर तक के विद्यार्थी इसके ज्ञान के उपयोग या अवबोध तक नहीं पहुँच पाते। वे परिभाषा की तोता रटत तक सीमित रह जाते हैं। इसलिए शिक्षक को चाहिए कि वह स्वयं चुप रहकर बच्चों को अपने इर्द–गिर्द चीजों अथवा भाव पर खुलकर बात करने के अवसर देवें। अधिक जरूरत होने पर शिक्षक अपना मुँह खोले बच्चों को ही तय करने दे कि फलां उदाहरण संज्ञा का है या नहीं है। है तो कौन सी संज्ञा है बस देखना यही है कि कहीं गलत दिशा में विषय की समझ तो नहीं जा रही है, जा रही है, तो उसे सही दिशा दे दे। अन्यथा शिक्षक को केवल ऑब्जर्व की भूमिका में रहना चाहिए।

ऐसा ही एक किस्सा हमारे पढ़ने के दिनों का याद आता है हमारे शिक्षक पश्चिमी राजस्थान के किसी शहर के थे। वहाँ छिपकली को गिलहरी और गिलहरी को तालूड़ी कहा जाता था। शिक्षक महोदय को भी यही ज्ञात था । उन्होंने महादेवी वर्मा के सस्मरण गिल्लू को छिपकली के तौर पर पढ़ाया। हमने बीच–बीच में रोक–टोक भी की। परन्तु वे कहाँ रुकने वाले थे । अपनी रौ में समझाते रहे। उस वक्त गूगल बाबा तो थे नहीं कि उन्हें सर्च कर बताते कि देखो यह गिलहरी होती है और यह छिपकली। वे बस अपनी रौ में चलते ही गए। यह एक मात्र उदाहरण है। ऐसे अनेक उदाहरण हम सीखने सिखाने की प्रक्रिया में देखते हैं। शिक्षक छात्र संवादहीनता की वजह से ऐसा हो जाता है जिससे न तो शिक्षण रुचिकर बन पाता है और न विषय की बोधगम्यता बन पाती है।

शिक्षाशास्त्र में बच्चों के संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक विकास में ज्ञानेंद्रियों के उपयोग को महत्त्व दिया जाता है। ऐसा प्रायः सभी शिक्षाशास्त्रियों का मानना है कि सीखने में जितनी अधिक ज्ञानेंद्रियां क्रियाशील रहेगी सीखना उतना ही प्रभावी होगा और पक्का होगा। हमने इस तथ्य को केवल ऊपरी तौर पर लिया है। हमारे यहाँ बच्चों के लिए स्मार्ट बोर्ड, टेलीविजन लैब क्लास आदि का विधान किया गया है परंतु शिक्षकों ने अपने लिए इन ज्ञानेंद्रिय के उपयोग को विविध रूपा और बेहतर नहीं किया है। शिक्षक केवल वाक्‌शक्ति के माध्यम से शिक्षण करवाता है। होना यह चाहिए कि शिक्षक को शिक्षण के दौरान अन्य ज्ञानेंद्रिय का भी बराबर इस्तेमाल करना चाहिए। मुँह के उच्चारण अवयवों के अलावा और भी भाषा के माध्यम होते हैं जो शिक्षण में कारगर हो सकता है। आंखों की, पदचाप की इशारों की भाषा जैसे माध्यम भी होते हैं जो बच्चे को सिखाने में मददगार बन सकते हैं। शिक्षण में यह माध्यम जितने बेहतर होंगे या शिक्षक इन माध्यमों का बेहतर उपयोग करेगा तो सीखना रुचिकर भी होगा और पक्का भी होगा।

शिक्षक को लगातार कम बोलने का अभ्यास करना पड़ेगा। कम बोलना उतना सरल नहीं है। यह एक तरह से साधना है जिसे साधा जाना जरूरी है। बौद्ध धर्म में विपश्यना का पूरा चक्र होता है जिसमें बिल्कुल शांत रहकर ध्यान करना सिखाया जाता है। गौर करना, हम जितना अधिक बोलते हैं उतना ही हम खुद को थका थका महसूस करते हैं क्योंकि बोलने में ऊर्जा का क्षय होता है। हम जितनी ऊर्जा बचाएंगे उतना ही सीखने सिखाने में उस ऊर्जा को लगा पाएंगे। इससे हमारा सीखना जल्दी, सही और पक्का होगा। सप्ताह में एक या दो दिन 'परम शांति' की कक्षा रखी जानी चाहिए। इस दिन किसी पाठ या विषय वस्तु को बिना बोले (वाक्‌यंत्र की मदद के बिना) पढ़ना पढ़ाना तय किया जा सकता है। इससे शिक्षक और बच्चों को दोनों को अभ्यास हो सकता है। हमारे ऋषि–मुनि सप्ताह में या माह में ऐसा व्रत रखते आए हैं। इससे उनकी ऊर्जा तेज और बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होती थी। अभी तक हम शिक्षण में केवल साहित्य में मौन पठन के अलावा इस मौन पठन का उपयोग नहीं कर पाए हैं । लगातार ऐसा प्रयोग करेंगे अथवा अभ्यास करेंगे तो निश्चित रूप से बच्चे और शिक्षक दोनों की प्रतिभा में निखार आएगा।

कहा जाता है कि जो सुन सकता है वही बोल सकता है। बच्चों को देखकर ऐसा कहना ठीक भी है। यहाँ से बात उठती है कि जो सुनता नहीं है वह बोलता भी नहीं अर्थात अच्छे श्रोता बनकर ही अच्छे वक्ता बन सकते हैं। हम बोलकर अपने ज्ञान को बघारते रहेंगे तो हमारा बोलना बहुत खराब हो जाएगा। उसकी धार कुंज हो जाएगी । हमारी भाषा में धार तभी आ पाएगी जब हम सुनेंगे–बच्चों की समस्याएं उनकी जिज्ञासाएं, उनके सवाल और उनके शरारत भरी बातें। इन सभी के आधार पर हम अपनी बात की धार को तेज कर सकते हैं।

हमारा कहना तभी सार्थक होगा जब हमारा सुनना सार्थक होगा। हम जिस सच को बार–बार कहने की कोशिश करते हैं उसे बच्चों को भी महसूस करवाना जरूरी है। इसमें वक्त लगता है। उस वक्त में उसके द्वारा उठाए सवालों को हमें सुना होगा और यह सवाल सुनकर ही हम अपने जवाब को सटीक कर पाएंगे। बर्तोल्ल ब्रेख्त अपनी कविता में कहते हैं–

जो बोलते हो उसे सुनो भी
अध्यापक अक्सर मत कहो कि तुम सही हो
छात्रों को उसे महसूस कर लेने दो
खुद व खुद
सच को ठोको मत
यह ठीक नहीं है सच के हक में बोलते जो हो उसे सुनो भी

बच्चों को अधिक से अधिक सवाल करने के लिए तत्पर करना जरूरी है इससे बच्चा एक बने बनाए सांचे में से निकलकर अपने मूल स्वरूप को प्राप्त कर सकता है। मनोविज्ञान का मानना है कि प्रत्येक बच्चा एक पूरी दुनिया लेकर जन्म

लेता है। उसकी सोच, समझ, संवेदना आदि का एक बना बनाया दायरा है। वह समाज का अभिन्न अंग होते हुए भी भिन्न होता है। उसकी भिन्नता को तभी मुकम्मल रखा जा सकता है । जब उसे अपने जिज्ञासाओं को शांत करने के मौके दिए जाएं, शिक्षकों को ऐसे मौके बनाने होंगे और ऐसे मौके तलाशने के लिए शिक्षकों को अपने शिक्षण कौशल में बदलाव करना होगा। वे ऐसे मौके तभी बना पाएंगे जब स्वयं इस कौशल में सिद्ध होंगे अन्यथा हम शिक्षक अनुशासन या व्यवस्था के नाम पर उसे एक ऐसे समरहिल का अमुक्त बच्चा बना देंगे जो विरासतन कुंठाओं ग्रंथियां व पूर्वाग्रहों के साथ बड़ा होगा और आगे चलकर यही विरासत को अगली पीढ़ी को देगा। नील अपनी पुस्तक समर हिल में इस अमुक्त बच्चों के बारे में लिखते हैं–

''एक सांचे में ढला हुआ, अनुकूलित अनुशासित दमित बालक यानी अमुक्त बच्चा जो असंख्य है। दुनिया के हर कोने में बसता है। वह हमारे शहर में सामने वाली गली में रहता है वह एक उबाऊ स्कूल में उबाऊ मेज पर बैठता है। वह सहमा होता है, अधिकारियों की आज्ञा का पालन करता है, आलोचना से डरता है। उसमें सामान्य परंपरावादी और सही बने रहने की कट्टर इच्छा होती है। उसे जो कुछ पढ़ाया गया है। वह बिना सवाल किए स्वीकारता है और बाद में वह अपनी तमाम ग्रंथियां, अपनी कुंठाएँ अपने बच्चों को विरासत में देता है।''

शिक्षक विद्यार्थी का भावात्मक रिश्ता होता है। यह रिश्ता वैसे ही होता है जैसे माँ बेटे या बाप बेटी का होता है। यह पूरी तरह से सहज और मधुर होता है। इसमें कोई लाग लपेट व स्वार्थ नहीं होता और न प्राप्य का कोई भाव होता है। यह रिश्ता बस एक रिश्ता होता है। इसमें शब्दों का कोई तोलमोल नहीं है। इस रिश्ते में आंखें भी आपस में बतिया लेती है और जुबान भी। इसलिए न है तो ज्यादा शोरगुल की दरकार है और न बिल्कुल चुप्पी की। कारण, बोलता हुआ बच्चा अच्छा लगता है। सवाल करता हुआ बच्चा अच्छा लगता है। बार–बार सवाल करता हुआ बच्चा और अच्छा लगता है। हमें इस अच्छे बच्चे से और अच्छे बच्चे की तरफ बढ़ना है। स्कूल में अच्छेपन के इस माहौल को बढ़ाना है । यह तभी हो पाएगा जब शिक्षक अपनी बातूनी आदत को छोड़कर बच्चों को बोलने का मौका देगा और वह इस तरह एक ऐसे मुक्त बच्चों की सपनीली दुनिया को बन पाएगा जिसमें बच्चा मुखर होकर अपनी बात कह सकेगा। सवाल–जवाब कर सकेगा। अपनी टेढ़ी–मेढ़ी, आड़ी–तिरछी, उल्टी–पलटी जैसी भी, सभी जिज्ञासाओं का शमन कर सकेगा।

एसोसिएट प्रोफेसर
राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान
बीकानेर, राजस्थान
मोबाइल 9414031502

डाक की डायरी

❒ **ओंकार गिरि गोस्वामी**

2 नवम्बर 2023, खींया।

अपने संदेश को दूरस्थ रिश्तेदारों तक पहुँचाने के लिए पहले के जमाने में पक्षियों का सहारा लिया जाता था, फिर धीरे–धीरे संवादिया संदेशवाहक का काम करने लगा। संवादिया का स्थान 19वीं–20वीं सदी में डाकिए ने ले लिया। हालांकि 21वीं सदी के पहले दशक में डाकिए का महत्त्व भी था। लेकिन दूसरे दशक में मोबाइल–क्रांति ने डाकिए के अस्तित्व को हिला दिया। आजकल डाकिया डाक तो ले आता है, लेकिन वह व्यक्तिगत ना होकर सरकारी या किसी ऑफिस से आई होती है। ऐसे में आज के इस नए दौर के विद्यार्थी पत्र–लेखन से तो परिचित है लेकिन पत्र से नहीं। मैं यदि बात करूं अपने विद्यालय की तो इकसठ विद्यार्थियों में से कोई भी परिचित नहीं था पत्र से। हालांकि पत्र लेखन से थोड़े विद्यार्थी परिचित थे। उन्हें जब पोस्टकार्ड और अंतर्देशीय पत्र के बारे में विस्तार से बताया गया तो वे अनभिज्ञ थे। उनके घर में कोई पत्र आया हो यह उन्हें स्मरण नहीं। लिहाजा स्थानीय डाकिया श्री खेतपाल पंवार से पोस्टकार्ड व अंतर्देशीय पत्र मंगवाए गए। बच्चों तक जब यह पत्र पहुँचे तो उनका पहला स्पर्श था भारतीय डाक से। यकीन मानिए उन्हें असीमित रसानुभूति हुई। अंतर्देशीय पत्र को क्रमानुसार मोड़ना उन्हें आनंदित कर रहा था। फिर उन्हें लिखने के लिए एक दिन का वक्त दिया गया और कहा कि अगले दिन अपने किसी प्रियजन को पत्र लिखकर ले आएंगे तब उन्हें डाक से भेजे जाएंगे।

3 नवम्बर 2023, खींया।

आज प्रथम कालांश में जाते ही लगा बच्चों के चेहरे चमक रहे हैं, पूछते ही लगभग सभी ने हाथ खड़े किए कि हमने भी पत्र लिख लिए हैं। फिर सिलसिला शुरू हुआ पत्र पढ़कर कुछ सुधार करने, पता जाँचने तथा अंतर्देशीय पत्रों को चिपकाने का। बच्चे बड़े चाव से बता रहे थे कि उन्होंने किसे पत्र लिखा है। ये बच्चे आज लगभग सवा सौ पत्र लिखकर लाए थे, शेष पते की जानकारी के अभाव में या फिर किसे लिखें? इस प्रश्न के कारण नहीं लिख पाए। किसी ने बुआ, मौसी, नाना–नानी, माता–पिता तो किसी ने गुरुजी, मामाजी, भाई–बहन या फिर मित्रों को पत्र लिखें। दादी को लिखे पत्र में पोती उन्हें अपने यहाँ बुलाती है तो ममेरे भाई को बहन द्वारा लिखे पत्र में व्याख्याता में चयन का बधाई संदेश था तो वही गुरु जी को लिखे पत्र में बच्चों की नींव तैयार करने वाले शिक्षक के प्रति कृतज्ञता थी। बच्चे आपस में यही पूछ रहे थे कि तुमने किसको पत्र लिखा है? सभी बच्चों से पत्र लेकर आज डाकिया श्री खेतपाल जी को पत्र सौंप दिए। उम्मीद है यह पत्र शीघ्र पहुंचेंगे और बच्चों को और आनंदित करेंगे। पत्र पहुंचेंगे तब तक दीपावली का अवकाश हो जाएगा और फिर विद्यालय लौटने पर, पत्र पाने वाले और पत्र भेजने वाले इन बच्चों के बीच क्या संवाद रहा, को जानेंगे। उम्मीद है आप भी अपने आस–पास के बच्चों की भावनाओं को पंख देने का काम करेंगे।

वरिष्ठ अध्यापक (हिंदी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खींया,
जिला–जैसलमेर–345001

बचपन पर अवाम से गुफ्तगु

❒ सरदारसिंह चारण

आज के मानव समाज में बढ़ती भौतिकता की चकाचौंध, घटते मानवीय मूल्यों, संवेदना-हीन होता शिक्षित व तथाकथित सभ्य कहलाने वाला मानव समाज, बढ़ती शिक्षा व घटते संस्कार, जीवन की भागदौड़ की इस मृग-मरीचिका के इस घने बियावान में मार्ग भटका हुआ आधुनिक मानव समाज धृतराष्ट्र हो रहा है। आज समाज का प्रबुद्ध वर्ग सभी शिक्षित अभिभावक भी इसी विचार, पद लोलुपता, पैसा पाने की अन्धी दौड़ का हिस्सा बन चुके हैं, आज के इस युग में शिक्षित मानव समाज अपने बच्चों और उसके भावी-भविष्य की सम्भावनाओं पर केन्द्रित हुआ जा रहा है। मुठ्ठी से फिसलता वर्तमान और भविष्य पर कसता शिकंजा, बच्चे के भविष्य को लेकर देश का वर्तमान शिक्षित अभिभावक समाज ज्यादा कन्फ्युज्ड हो गया हैं निरक्षर व गरीब अभिभावक तो फिर भी ठीक है, क्योंकि वह ज्यादा नहीं जानता है व आर्थिक तंगी के चलते वह अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पंख लगाकर बचपन को उड़ा नहीं पा रहा है, इसलिए उन घरों में तो फिर भी बच्चों के बचपन का थोड़ा अंश सुरक्षित बचा है, और उनका बचपन प्रकृति, मासूमियत, मिट्‌टी के समीप भी है, गेजेट से दूर हम उम्र साथियों के साथ बचपन बीत रहा है पर वो भी आर्थिक गतिविधियों, पारिवारिक दायित्त्वों, गरीबी निवारण योगदान, पारिवारिक कार्य के चलते कूछ हद तक उनका बचपन इन परिदृश्यों में स्वतः अनचाहे रूप से भी छीन रहा है। हम इस बात को गौर करते चले हैं कि प्रकृति ने हमें जो बनाया वो ही हमारी नियति है। वर्तमान जगत का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि हमारे समाज के पास दृष्टि तो है लेकिन दृष्टिकोण सही नहीं है वर्तमान सोच सृष्टिपरक कम और दृष्टिपरक अधिक हो गई।

संसार में बढ़ते वैश्वीकरण उदारीकरण और बाजारीकरण के इस युग की चपेट में आया आर्थिक जगत और समाज में बढ़ते आधुनिक न्यूक्लियर परिवार व घटते संयुक्त परिवार की ''स्नेही छांव'' व जीवन मे बढ़ते कॅरियर के क्षेत्र, अभिभावकों की अपनी अधूरी रही महत्त्वाकांक्षा को अपने बच्चे से पूरी करने के सपने पालता मानव समुदाय, अपने जीवन की भारी भरकम असफल रही महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति बच्चों से पूरी करवाने की नाकाम चेष्टा में आज के बच्चे का बचपन पीसा जा रहा है। हम सभी लोग बचपन को मंजिल के रूप में देखने की भावना से ग्रसित हो चुके हैं, जबकि बचपन मंजिल का नाम नहीं है एक यात्रा का नाम है, पर माता-पिता कोल्हू के बैल बन कर बचपन का तेल निकालने की होड़ में लगे हुए हैं। उन्हें पता ही नहीं कि उनके बच्चे के बचपन को ही वह इस कोल्हू में पीस रहें है, इन्हीं कारणों से आज आधुनिक समाज में बच्चों के बचपन से उनकी मासूमियत डाईनोसोर की तरह पारिवारिक जीवन से विलुप्त हो चुकी है, क्योंकि अपेक्षा का प्रतिबिम्ब ही निराशा होती है और प्रतिस्पर्द्धा में हीनता का भाव अन्तर्निहित होता है। समाज को यह जानने की फुर्सत ही नहीं की उसकी सन्तान के बचपन का वे क्या कर रहे हैं, उन्हें यह पता भी नहीं कि आखिर वे क्या चाहते हैं जिसे चाह रहे हैं उसकी प्राप्ति ही क्या उनका अन्तिम उद्देश्य है, उसकी प्राप्ति ही क्या जीवन है, इसकी प्राप्ति से पैसा पद सम्मान प्राप्त कर लेना ही क्या जीवन में सब कुछ पा लेना है क्या ये ही हमारा व समाज का राष्ट्र का अन्तिम लक्ष्य है? यह चिन्तनीय व ज्वलन्त सोचनीय विषय है, अभिभावक वर्ग को पता है कि केवल पैसा, मान-सम्मान, बड़ा पद प्राप्ति के बाद उसके साथ आने वाली नकारात्मक चीजों को व बुराईयों को समाज में वह देख व महसूस कर रहा है। यह सोचकर अनदेखा कर रहा है कि यह तो दूसरे घर की समस्या है मेरी नहीं, भविष्य में यह आग मेरे घर तक भी पहुँचेगी फिर भी वह शतुरमुर्ग की तरह अपनी गर्दन को बालू मिटटी में दबा कर वास्तविकता व सच्चाई को देखकर भी उसकी अनदेखी कर रहा है। बाजार की संस्कृति के सर्वग्रासी फैलाव का यह असर बचपन और शिक्षा पर भी पड़ा है। हमने उन गतिविधियों पर कड़े पहरे बिठा दिए जिनसे बचपन आनंदित और प्रफुलित होता था हमने बचपन को अप्राकृतिक कम्पीटिशन में धकेल दिया जबकि कम्पीटिशन तो जिन्दगी जब उसकी आवश्यकता होगी तो स्वयं ही सीखा देगी पर हमने बचपन के मन मस्तिष्क पर इन्सानियत के बजाय करेन्सी को स्थापित कर दिया, जो बचपन प्रकृति से सीखकर विकसित होता तो ज्यादा समाज के लिए सार्थक सामाजिक इकाई बनता, लेकिन सिखाने का जिम्मा तो जबरदस्ती हमने ओढ़ लिया हम वो

ज्ञान और अनुभव उसे दे रहे हैं जो अनुभवजन्य व प्राकृतिक तो है नहीं, कृत्रिम तैयार ज्ञान की गोली है जिसे उसे निगला रहे हैं, बच्चों के वर्तमान पर बड़ों ने कब्जा कर रखा है। हम बच्चों को आकाश की ऊँचाई तक तो ले जाना चाहते हैं लेकिन बिना पाताल की गहराई दिखाए, आज रसायनों की गर्मी से पकाए फलों की तरह बच्चों के प्राकृतिक विकास के बजाय कृत्रिम साधनों से उसके मन मस्तिष्क में अप्राकृतिक विकास में तेजी लाई जा रही है जैसे किसान डीएपी व यूरिया डाल कर कुछ समय के लिए पैदावार बढ़ा सकता है लेकिन यह गुणात्मक मात्रा की वृद्धि जो अपनी कीमत मांगती है वह हमें सदियों तक उसकी पीड़ा व दर्द को भावी पीढ़ी व मानव सभ्यता को चुकानी पड़ेगी जब तक हम और हमारा समाज इसकी वास्तविकता को समझ पाएगा उसके लाभ हानियों से अवगत हो पाएगा तब तक लम्बा समय बीत चुका होगा और इस गलत रास्ते पर हम मीलों मील आगे निकल चुके होंगे। जहाँ से एकदम से पीछे मुड़कर लौटना भी सम्भव नहीं हो पाएगा और समय से पूर्व पकाई गई भावी पीढ़ी ताइवानी पपीते की भांति होगी जहाँ पूर्ण संवेदनशील सभ्य मानव ढूँढ़ना उसी प्रकार होगा जैसा सहारा के रेगिस्तान में कोयल की आवाज को सुनने के समान है। देश व वर्तमान समाज की इस सोच को राष्ट्रीय दुर्घटना की संज्ञा दी जाए तो कोई अतिश्योक्ती नहीं होगी। आधुनिकता की इस अन्धी दौड़ में स्कीन का ऐडिक्ट बना बचपन जिसे आधुनिक माता पिता अपनी सम्पन्नता से जोड़कर बचपन के स्मार्ट बनाने के अल्पज्ञान के सपनों से भरे देखकर सूकून से फूले नहीं समा रहे हैं जबकि वर्तमान में जरूरत तो डिजिटल कर्फ्यू की है और तो और उनके जहन में बीमारियों की अनुपस्थिति का नाम हमने स्वास्थ्य की परिभाषा में तब्दील कर दिया, मिट्टी खेल मैदान व प्रकृति से कोसों दूर होते बचपन की विशाल नर्सरीयाँ तैयार कर चुके हैं। आज का बच्चा व उसका बचपन खुद से डेटिंग करना भूल चुका है। इक इंच शुकून व डेढ़ इंच की राहत भी उसके जीवन में नहीं हैं। अब खेल मैदान केवल गेजेट की स्क्रीन पर अनुभव का माध्यम में बदल चुके जो भावीपीढ़ी को शारीरिक संघर्ष व जुझने की पसीना बहाने टीम भावना से लयबद्ध अनुशासित जीवन के गुणों से हम बचपन को कई प्रकाश वर्ष दूर तक लेकर चले गए हैं, माता–पिता आर्थिक जगत की फास्ट लाइफ, घटते सामूहिक परिवारो के कारण रसोईघरो में बढ़ता फास्ट फूड का चलन व उसके सेवन से कमजोर होता बचपन और बचपन को हमने सामाजिक तौर पर वयस्कता में बदलने का अभियान चलाकर विश्व विजेता सिकन्दर के रूप में अपनी सन्तान को देखने की इस मृग–मरिचिका की चाह में उसके बचपन की भ्रूणहत्या कर रहे हैं हमारी सोच की गरीबी का ही यह दुष्परिणाम है ।

आज का अभिभावक वर्तमान की उपेक्षा कर भविष्य की चिन्ता की धुन में खोखला होता जा रहा है। जबकि वर्तमान को तथाकथित सभ्य मानव समाज जिसने बच्चों के वर्तमान के स्वर्णिम बचपन को भविष्य की सुरक्षा को दांव पर लगा रहा है। आज उनको दिया जा रहा ज्ञान केवल पुस्तक केन्द्रित हो चुका है। हमने ज्ञान की परिभाषा के केन्द में ज्ञान के बजाय सूचना को स्थापित कर दिया और सूचना भी ऐसी जो अनुभव रहित जिसमें समझ का स्वाद ही नही चखा और हम ऐसे ज्ञान रूपी अज्ञान से बालमन के मन मस्तिष्क को भरे जाने की गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा में हम और हमारे बालक को पीसने के लिए लालायित हो रहे हैं जबकि होना ये चाहिए कि उसे जीवन के विस्तृत व बाहरी ज्ञान से रूबरू करवाया जाए समझ के स्वाद से जोड़ा जाए, वर्तमान में रटना ज्ञान का पर्याय हो चुका है, पुस्तक में सिमटा ज्ञान ही अन्तिम ज्ञान का स्रोत मान बैठा है। शिक्षा एक डिग्री है कि अवधारणा बना चुका है। आज का अभिभावक बच्चों को इस समाज रूपी सामाजिक मशीन का पुर्जा बनाने में अधिक दिलचस्पी ले रहा है न कि उसके व्यक्तित्व के सम्पूर्ण निर्माण के प्रति चिन्तित है, आज का शिक्षित अभिभावक बच्चों के मौलिक स्वरूप को बिगाड़ रहा है, उसे वह किसी की कॉपी करने में ज्यादा अपने आपको सफल मान रहा है। अपनी कल्पना के सतरंगी रंग से उस बालमन व बचपन को ढकने की होड़ में पूर्ण मनोयोग से लग चुका है और हम सभी लोगों ने समाज के सफल व्यक्ति के पैरामीटर को भी हमने गलत पकड़ लिया है और उसी आधार पर हमने सफलता की अपनी नई परिभाषाएं गढ़ ली जिसका दुष्परिणाय यह हो गया कि जिस बचपन को उसे अपनी असली खुशी व आनन्द उसे अपनी कंपनी में मिलता था, वह जीवन का अध्याय ही हमने उसकी जीवन की किताब से हटा दिया बालमन की जिज्ञासाओं के अनंत ब्रह्माण्ड के फैलाव को हमने गैजेट की सीमा में बाँध कर समाप्त कर दिया और उसे हम बचपन के केनवास पर अपनी कल्पना का आकार देने व रंग भरने में लग गए।

जबकि प्रकृति व हमारा दर्शन यह कहता है कि कोई भी किसी की कॉपी नही हो सकता, सभी अपनी मौलिकता लेकर जन्मते हैं व स्वयं का अपना एक अलग व्यक्तित्व होता है, भगवान ने सभी को अपने अपने लक्षण व गुण दिए हैं। इसलिए हर बालक को अपने अपने स्वभाव व दिमाग, रुचि के अनुरूप अपना अपना विकास करना चाहिए व बालक के स्वाभाविक विकास होने देने में ही उस बालक की, समाज की, अभिभावक की व देश की भलाई है। बच्चों के बचपन को महामानव की तैयारी का वक्त बनाएं न कि गलाकाट परफॉर्मेन्स प्रदर्शन, अंक लाने व प्रतिशत लाने का, नासिक की करेन्सी प्रेस के रूप में उसे तैयार नहीं करे, समय रहते हम सभी देशवासी व अभिभावक नहीं चेते तो आने वाले समय में हमारी भावी पीढ़ी कमजोर किताबी कीड़ा बनकर रह जाएगी। समय बीत जाने पर जब मरघटी ज्ञान जाग्रत होगा तब मर्सियाँ पढ़ने से कुछ नहीं होगा, स्वामी विवेकानन्द जी की भावना के अनुरूप हमे भावी पीढ़ी के फौलादी बाजू बनाने होंगे। उनकी डाइट में शामिल करने होंगे, सेहत के बीज और जो केवल खेल के मैदान में ही तैयार हो सकते हैं केवल पढ़ाई पर्याप्त नहीं है। आज का विद्यार्थी खेल के मैदान केवल टी.वी. स्क्रीन पर ही देखता है। उस तिलिस्मी दुनिया की तरह उनके आँखों पर बड़े–बड़े लेन्स के चश्मे चढ़े हुए हैं। सिकिया पहलवान की तरह उसका शरीर बचपन में ही हड्डीयों के जोड़ो से उठती दर्द की टीस, बुझा–बुझा सा व्यक्तित्व,

बोझिल व तनाव युक्त चेहरा आम देश के युवाओं का चेहरा हो चुका है।

बचपन से सीधे बुढ़ापें की ओर प्रस्थान करती हमारी भावी पीढ़ी और इस समस्या से बेखबर हमारा शिक्षा जगत व तथाकथित बुद्धिजीवी कहलाने का दम भरने वाला समाज। यह बड़ा ही चिन्तनीय विषय है पर सोचे कौन, सोच वो रहे हैं जिनके हाथों में कुछ नहीं, गाने के बोल हैं कि – ''मैं ख्याल हूँ किसी और का मुझे सोचता कोई और है'' और जिनके हाथों में बहुत कुछ है उन्हें इन पर सोचने की फुर्सत नहीं, आओ समय रहते देश की भावी पीढ़ी के प्रति समय निकाल कर हम सभी सोचें कि इसे किस दिशा में भेजना है, समाज व देश इन से क्या अपेक्षाएं लिये बैठा है, क्या वे इसे पूरी कर पाएगें, अगर नहीं कर पाएगे तो क्यों? क्या कारण रहे होगे जिनके कारण वे समाज व देश की अपेक्षा पर खरे नहीं उतर पाएंगे। समय रहते हमें इस पर चिन्तन करना होगा व मिलजुल कर इसका समाधान ढूँढ़ना होगा। बचपन को पद, प्रतिष्ठा, पैसा, मान सम्मान पाने की भावना से रहित निश्छल पाक बनाना होगा। जब बचपन सृजनशील, जिज्ञासु, संवेदनशील, रुचिशील, परिश्रमी, स्वतंत्र, आनंदपूर्ण होकर पल्लवित होगा तभी वह सही मायने में विकसित होगा। यह अवस्था हमें समाज में पुनः निर्मित करनी होगी तभी हम बड़े होने के दायित्व बोध से मुक्त हो पाएगें व सही अर्थों में देश व भावी पीढ़ी का भला कर पाएंगे। आओ हम सभी इस विषय पर गहन चिन्तन मनन करें व सुधार अपने घर से ही आरम्भ करने की मिसाल पेश करें और बचपन बचाने के इस अभियान का हिस्से बने। वादे के साथ नहीं इरादे के साथ अपना योगदान दें। नजदीक के फायदे के बजाय दूरगामी नुकसान को महसूस करना सीखना होगा तभी हम अपने परिवार के साथ-साथ देश, मानव समाज व राष्ट्र का भला करने में सहभागी बन सकेंगे। अंत में इसी बात के साथ अपने विचारों को विराम दूँगा कि- ''मजा तो तब है जब चिराग तले अंधेरा ना हो''।

जय हिन्द !

प्रधानाचार्य
राउमावि बिशनगढ़, जालोर
मो.: 90011-65745

चिंता नहीं चिंतन कीजिए

❐ अभय कुमार जैन

'शक्तियों का उपयोग होते हुए भी उनका उपयोग नहीं हो पाता यदि दिल में चिंता है।' –महात्मा गाँधी

'जो चिंता से लड़ना नहीं जानते, वे जवानी में ही मर जाते हैं।' –डाक्टर अलेक्सिस केरल

'चिंता चिता समान है, जो मनुष्य को अंदर ही अंदर खोखला कर देती है। –स्वेट मार्टेन

'चिंता आपको मिटाए इसके पहले आप चिंता को मिटा दीजिए।' –डेल कारनेगी

'मनुष्य चिंता से मरता नहीं, सूख जाता है।' –रूसी लोकोक्ति

'मेरा विश्वास है कि चिंता जीवन की शत्रु है। जो लोग चिंता को चिपका लेते हैं, वे शंकाओं से घिरे रहते हैं। ऐसे लोग जरा से अस्वस्थ हुए कि किसी घातक रोग के भय से चिंता ग्रस्त हो जाते हैं।' –शेक्सपियर

'चिंता नश्यते ज्ञानं चिंता नश्यते बलम,'
चिंता नश्यते बुद्धिः व्याधिभरवति चिंता।।
चिंता चिता समाख्याता, बिंदु मात्र विशेषता,
चिंता रहती निर्जीव जीवं दहत्यहओ चिंता।।

चिंता से ज्ञान नष्ट होता है, चिंता से बल नष्ट होता है,चिंता से बुद्धि नष्ट होती है, चिंता से शारीरिक पीड़ा होती है। दोनों में बिंदु मात्र का अंतर है चिंता प्राण रहित अर्थात मृत मनुष्य को और चिंता संजीव मनुष्य को जलाती है।

चिंता एक ऐसा शैतान है जो मनुष्य को हर पड़ाव पर दुःख देता है। तरुण मनुष्य को काम की चिंता, मध्यमावस्था वाले मनुष्य को धन की चिंता, वृद्ध मनुष्य को मरने की चिंता होती है और दरिद्र मनुष्य को धन प्राप्त करने की चिंता रहती है। मनुष्य भविष्य की चिंता में वर्तमान के सुख को भूल जाता है,वह उस सुख का अनुभव नहीं कर पाता है जो उसके पास आज है।

मनुष्य अशांत क्यों बनता है, अशांति स्वनिर्मित है। अशांति कहीं से नहीं आती है हम बड़े परिश्रम से उसका निर्माण करते हैं। प्रत्येक मनुष्य का स्वभाव शांत, सरल और सुगम होता है। स्वस्थ रहना, मुस्कुराते रहना मनुष्य का स्वभाव होता है, अगर कोई बीमार पड़ता है तो निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि उसने बड़े आदर व सम्मान से बीमारी को बुलाया है क्योंकि किसी भी बीमारी अथवा अशांति को तुम्हारा पता मालूम नहीं है। मनोविश्लेषक ब्लेण्डन इसे नए जमाने का प्लेग मानते हैं। चिंता सभी बीमारियों की जड़ है इसके कारण ब्यूमेराइल्ड अर्थराइटिस हो जाती है। ब्लड प्रेशर, हृदय रोग तथा अल्सर की शिकायत भी इसके कारण ही होती है।

प्रसिद्ध अमेरिकी सर्जन डॉक्टर जॉर्ज व काइल की मान्यता है कि चिंता ने हमारे दिल, दिमाग और पेट को भी अपना निशाना बनाया है। कोशिकाओं, ऊतकों और अंगों पर उसका व्यापक असर देखा जा सकता है।

चिकित्सा शास्त्र के विशेषज्ञों, मनोवैज्ञानिकों, महापुरुषों, नीतिकारों, संतों एवं कवियों तथा शास्त्रों के विचारों का सार यही है कि चिंता व्यक्ति के मन में व शरीर पर अत्यंत हानिकारक प्रभाव डालती है। जो लोग निरंतर चिंता के बोझ से ग्रसित रहते हैं उनके सारे काम बिगड़ जाते हैं, स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है।

हृदय की धड़कन बढ़ जाती है। नेत्र शक्ति क्षीण हो सकती है। अनिद्रा, रक्तचाप, मधुमेह, हृदय रोग, डिप्रेशन और तनाव आदि बीमारियां हो सकती हैं।

संस्कृत में एक सूक्ति है 'नास्ति चिंता समंव्याधि:'

अर्थात चिंता के समान कोई व्याधि (बीमारी) नहीं है अन्य शारीरिक रोगों की चिकित्सा मिलना संभव है, किंतु चिंता रोग की चिकित्सा मिलना संभव नहीं है।

आप, जो खाते हैं, उससे आपको अल्सर नहीं होता, अल्सर तो उस चीज से होता है जो आपको खाए जा रही है।

डाक्टर जोसेफ एकत्र माटेग्यू अमेरिका के प्रसिद्ध चिकित्सक मेयो ब्रदर्स ने कहा था कि हमारे अस्पताल आधे से ज्यादा बेड मानसिक या भावनात्मक बीमारियों के शिकार लोगों से भरे हैं, फिर भी जब हम पोस्टमार्टम के दौरान इन लोगों की नर्वस को माइक्रोस्कोप से देखते हैं तो अधिकतर मामलों में वह उतनी ही स्वस्थ दिखती है जितनी कि स्वस्थ आदमी की। उनकी भावनात्मक या मानसिक बीमारियां तंत्रिकाओं

या नर्वस के क्षय के कारण उत्पन्न नहीं होती बल्कि बर्बादी, कुंठा, व्यग्रता, चिंता, डर, पराजय, हताशा की भावनाओं द्वारा उत्पन्न होती है।

अध्ययनों से पता चलता है कि यदि व्यवहार, व्यक्तित्व असामान्य है तो गंभीर प्राण घातक हार्ट अटैक होने का खतरा सामान्य व्यवहार, व्यक्तित्व वाले की अपेक्षा दोगुना ज्यादा होता है। चिंता करने वालों में चिंता न करने वालों की अपेक्षा भयानक मौत का खतरा करीब 3 गुना ज्यादा होता है। चिंता करने, तनाव पैदा होने पर हृदय गति बढ़ती है, रक्तचाप बढ़ता है जिसके कारण हृदय पेशियों को ज्यादा शक्ति से संक्रमित होना पड़ता है। हृदय की ऑक्सीजन की आवश्यकता बढ़ जाती है। यदि ऑक्सीजन की आपूर्ति नहीं हो पाती है तो एंजाइना का अटैक होता है। यहाँ तक कि हार्ट अटैक हो सकता है। अचानक अत्यधिक चिंता तनाव होने पर एंजाइम हार्ट अटैक और अचानक मौत का खतरा रहता है।

जीवन में जब तक चिंता है तब तक मनुष्य को सुख शांति का अनुभव नहीं हो सकता है। समस्याओं व कठिनाइयों के विषय में सोचते रहने से कोई लाभ नहीं है। वरन उसके समाधान के लिए पुरुषार्थ करें, चिंता को दूर भगाने के लिए अध्यात्म से जुड़ना होगा, ईश्वर की सत्ता में विश्वास, सकारात्मक, आशावादी दृष्टिकोण, महापुरुषों के विचार, केवल वर्तमान में जीने का संकल्प।

'आने वाले कल की कोई चिंता मत करो क्योंकि कल अपना विचार खुद कर लेगा। भविष्य की चिंता में वर्तमान का सुख और शांति नष्ट करना ठीक नहीं है।'

चिंता को अपने से दूर रखिए, तनाव से लड़िए नही वरन उसे सहजता से लें, काम में व्यस्त रहना तथा जीवन के हर एक कार्य की रुचि बनाए रखना मनुष्य को चिंता मुक्त रखता है।

वैज्ञानिक सर्वेक्षण से यह सिद्ध हुआ है कि उदासी, निराशा एवं हताशा, चिंता, तनाव से मनुष्य की उम्र कम होती है। इसके लिए नियमित व्यायाम करना चाहिए। निरंतर यही सोचते रहें कि मैं जवान हूँ, हर प्रकार से स्वस्थ, निरोग व सफल हूँ, मुझे कोई बीमारी नहीं है। यदि वह व्यक्ति बूढ़ा भी है तो उसमें चुस्ती, फुर्ती के लक्षण दिखाई देंगे। खाने में संयम, बोलने में संयम, मनुष्य को स्वस्थ, मस्त एवं प्रसन्न रहने में सहायक है।

अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा है 'जो कुछ हमारे पास है उसमें संतुष्ट होना हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि है।'

शेक्सपियर ने एक जगह लिखा है 'मेरा मुकुट मेरे सिर पर नहीं है मेरे हृदय में है, वह सांसारिक राजाओं के मुकुट की भांति हीरे, लाल पन्नों से जड़ा हुआ नहीं है, वह दिखाई भी नहीं देता है, इस मुकुट का नाम संतोष है।'चिंता से लड़ने का सबसे बेहतरीन उपाय बताया था।

डीन हाक्स ने कहा है कि 'अगर कोई व्यक्ति निष्पक्ष और निरपेक्ष तरीके से लक्ष्य हासिल करने में अपने समय का उपयोग करें तो उसकी चिंताएं उस ज्ञान के प्रकाश में आमतौर पर भाप की तरह उड़ जाएगी। टेनीसन और बर्नार्ड शॉ के चिंता को मिटाने के उपाय यहाँ विचारणीय है-'मुझे अपने आप को काम में झोंकना पड़ेगा वरना मैं निराशा में मुरझा जाऊँगा।'

'यदि हम जहाँ पर रह रहे हैं वहीं पर जीना सीख ले, वर्तमान में रहना है तो वर्तमान में ही जीना सीख ले। बहुत सी समस्याओं का अंत हो जाएगा, यदि हमने वर्तमान में जीना सीख लिया तो आने वाले समय की दुश्चिंताओं से भी छुटकारा मिल जाएगा। भूतकाल व्यक्ति को भ्रमित करता है और भविष्य काल भटकाता है, चितांओं के घेरे में डालता है। एक मात्र वर्तमान ही उसे शांति की राह दिखाता है किंतु हम या तो भूतकाल में चले जाते हैं। ऐसा हुआ, वैसा हुआ या हम दौड़ लगाते हैं भविष्य में इसलिए या तो हम भ्रमित होकर रह जाते हैं अथवा दुश्चिंताओं में भटक जाते हैं किंतु शक्ति का जो आनंद आना चाहिए उससे हम अपने आप को जोड़ नहीं पाते हैं।'

तनाव व चिंता से राहत पाने के कुछ साधारण उपाय-

उत्साही बने रहें-खुद के उत्साह को बढ़ा कर आप तनाव को कम कर सकते हैं, इससे आपके दिमाग और शरीर में सकारात्मकता बढ़ती है।

खुशी से करें दोस्ती-हर दिन हंसी खुशी के साथ जिएं और तनाव से दूर रहें। चेहरे पर सदैव प्रसन्नता रहनी चाहिए।

बागवानी से जुड़े-कुछ समय पेड़-पौधे, घर के गमलों की देखभाल में बिताएं क्योंकि बगीचे की मिट्टी में सेरोटोनिन बढ़ाने वाले तत्व होते हैं जो चिंता, थकान और तनाव को कम करने में सहायक है।

व्यायाम और घूमने के लिए समय निकालें-प्रात:काल जल्दी उठकर 3-4 कि.मी. घूमने जाएं। व्यायाम करें इससे शरीर स्वस्थ रहता है तथा तनाव से मुक्ति मिलती है। यदा कदा सप्ताह में एक दिन धूप में बैठकर सरसों के तेल की मालिश करें।

साबुत अनाज का सेवन करें-अंकुरित चने, मूंग, मोठ, दानामैथी का सेवन करें। मूंगफली का सेवन गुड़ के साथ करें। भुने हुए चने (भूंगडे) प्रति दिन सुबह सेवन करें।

बढ़ाए सहायता का हाथ-जरूरत मंदों की सहायता करें,गरीब बच्चों को स्कूल सामग्री तथा बीमार लोगों की सहायता करें। पशुओं को चारा खिलाएं, पक्षियों को दाना डालें।

पिकनिक पर जाएं-समय समय पर परिवार सहित पिकनिक पर जाएं। एक दो वर्ष के अंतराल पर ऐतिहासिक व दर्शनीय स्थलों पर कुछ दिनों के लिए घूमने जाएं।

भरपूर नींद लें-नियमित समय पर सोने व उठने की आदत डालें। नींद पूरी होने पर आप कई समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं तथा आप स्वस्थ महसूस करेंगे।

डायरी लिखें-नियमित रूप से डायरी लिखने की आदत डालें, इससे आप व्यस्त रहते हैं तथा तनाव भी समाप्त होता है।

अच्छे दोस्त बनाएं-अच्छे दोस्त बनाएं जो आपके हर समय काम आए, आपको सही राय दें। जिनसे आप अपने मन की हर बात कह सके, सकारात्मक विचारों वाले हों। नकारात्मक विचार वालों से दूरी बनाए रखें।

प्यार बांटना सीखें-अपने दोस्तों, रिश्तेदारों, पारिवारिक जनो, आस पड़ोस के लोगों से खुल कर मिले और अपना प्यार उन पर लुटाएं। तनाव व चिंता छू मंतर हो जाएगा।

साधु-संतों, महापुरुषों से सम्पर्क-जब भी अवसर हो संत समागम करें। प्रवचन का लाभ ले, ताकि अच्छे संस्कारो का निर्माण हो एवं हम बुरी बातों मद्यपान, धुम्रपान व नशीले पदार्थो से दूर रहें।

तृप्ति, बंदा रोड
भवानी मंडी, झालावाड़-326502
मो. : 9829296962

भारत रत्न एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी

❐ विजय सिंह माली

दक्षिण भारत की कर्नाटक संगीत परंपरा के शास्त्रीय और अर्द्ध शास्त्रीय गीतों की प्रतिपादक एम एस सुब्बुलक्ष्मी जिसने संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपनी प्रस्तुति दी का जन्म 16 सितंबर, 1916 को मंदिरों के शहर मदुरै (तमिलनाडु) में देवदासी परिवार में हुआ। इनकी माता का नाम षमुखवडिवु था। इनके बचपन का नाम कुंजम्मा था। 10 वर्ष की उम्र में इनका पहला एलबम जारी हुआ। प्रसिद्ध संगीताचार्य सेम्मनगुडी श्रीनिवास अय्यर, पंडित नारायण राव शास्त्री से इन्होंने संगीत की शिक्षा प्राप्त की। 17 वर्ष की आयु में चेन्नई संगीत अकादमी में संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया तत्पश्चात कन्नड़, मलयालम, तेलगु, पंजाबी, बंगाली, गुजराती, हिंदी, संस्कृत समेत भारत की अनेक भाषाओं में गीत रिकार्ड किए।

1936 में इनकी भेंट स्वतंत्रता सेनानी सदाशिवम से हुई। 1940 में ये सदाशिवम की जीवनसंगिनी बन गई। पति के सहयोग व मार्गदर्शन से सर्वोत्तम गायिका बनी। इन्होंने कई फिल्मों में भी काम किया। 1938 में सेवा सदन फिल्म से अभिनय की शुरुआत की। 1941 में अपने पति की तमिल साप्ताहिक पत्रिका कल्कि के लिए धन जुटाने हेतु फिल्म सावित्री में नारद का किरदार निभाया। 1945 में मीरा फिल्म में इनकी यादगार भूमिका रही। तमिल व हिंदी भाषा में बनी इस फिल्म में इन्होंने मीरा के कई प्रसिद्ध भजन गाए। गाँधी जी भी इनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। गाँधी जी के शब्दों में 'अगर श्रीमती सुब्बुलक्ष्मी हरि तुम हो जन की पीर भजन को गाने की बजाय बोल भी दे तब भी उनको वह भजन किसी और के गाने से अधिक सुरीला लगेगा।' गाँधीजी ने उन्हें अपने जन्मदिन की पूर्व संध्या पर भजन सुनने के लिए दिल्ली बुलाया। सुब्बुलक्ष्मी द्वारा दिल्ली जाने में असमर्थता प्रकट करने पर मद्रास आल इंडिया रेडियो द्वारा रिकॉर्ड कर टेप दिल्ली भेजा गया जिसे गाँधी जी ने सुना। गाँधी जी की हत्या पर भी श्रद्धांजलि के रूप में इसी टेप को बजाया गया। 1954 में इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

इन्हें 1956 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 1974 में संगीत के माध्यम से सार्वजनिक सेवा के लिए मैग्सेसे सम्मान, 1988 में कालीदास अवार्ड, 1990 में इंदिरा गांधी अवार्ड, 1998 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया। ये पहली भारतीय है जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा में संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया। सुब्बुलक्ष्मी ने जब संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव यूथांट के आमंत्रण पर संयुक्त राष्ट्र संघ की असेंबली में अपना गायन पेश किया तो प्रसिद्ध पत्र न्यूयॉर्क टाइम्स ने लिखा 'वे अपने संगीत के द्वारा पश्चिम के श्रोताओं से जो संपर्क स्थापित करती है उसके लिए यह आवश्यक नहीं कि श्रोता उनके शब्दों का अर्थ समझे। इसके लिए उनके कंठ से निकला हुआ मधुर स्वर पश्चिमी श्रोताओं के लिए सबसे सरल और महत्त्वपूर्ण साधना है।

मद्रास में आयोजित छठी एफ्रो एशियाई नेत्र विज्ञान कांग्रेस के उद्घाटन के अवसर पर इन्होंने पाँच भाषाओं संस्कृत, अरबी, जापानी, अंग्रेजी व तमिल में मंगलाचरण प्रस्तुत किया। प्रसिद्ध तेलगु संत कवि अनमाचार्य की रचनाओं को धुन पर सेट कर रिकॉर्ड कर पुनर्जीवित किया। उनका गाया वेंकटेश्वर सुप्रभात सुनकर लोग आज भी सुबह जागते हैं। उन्होंने कर्नाटक संगीत की कई लुप्त हो चुकी रचनाओं को पुनर्जीवित किया। आदि शंकराचार्य, तुकाराम, गुरु ग्रंथ साहिब के भजनों की रचनाओं को भी संगीतबद्ध किया। मिर्ज़ा ग़ालिब की उर्दू ग़ज़लें भी अनोखे अंदाज में गाई। उनका अंतिम सार्वजनिक कार्यक्रम 1997 में था। अपने पति की मृत्यु के बाद सभी सार्वजनिक प्रदर्शन बंद कर दिए।

यह पहली महिला हैं जिनको कर्नाटक संगीत का सर्वोच्च पुरस्कार संगीत कलानिधि से सम्मानित किया।

कर्नाटक संगीत की पर्याय बन गई एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी को नेहरु जी ने संगीत की रानी कहा। सचमुच उनके संगीत को सुनकर मुरझाए हुए चेहरों पर परमानंद की झलक दिखाई देती है। कई मशहूर संगीतकारों ने इनके काम की तारीफ की। लता मंगेशकर ने इन्हें तपस्विनी कहा, उस्ताद बड़े गुलाम अली खां ने आपको सुस्वर लक्ष्मी पुकारा, किशोरी अमोनकर ने आपको आठवां सुर कहा जो संगीत के सात सुरों से भी ऊँचा है। भारत सरकार ने डाक टिकट भी जारी कर इनकी संगीत साधना की अनुमोदना की।

कर्नाटक संगीत की पर्याय बन चुकी भारत रत्न एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी का 11 दिसंबर, 2004 को चेन्नई में उनका देहावसान हो गया। सचमुच उनके संगीत में दिल के तारों को हिला देने की शक्ति थी। उनकी आवाज परमात्मा की अभिव्यक्ति थी। आज वह हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनकी आवाज हमें सदैव कर्म पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रहेगी।

प्रधानाचार्य
श्रीधनराज बदामिया राजकीय बालिका
उच्च माध्यमिक विद्यालय सादड़ी, पाली
मो.: 9829285914

आत्मविश्वास : विद्यार्थी का परम मित्र

❐ रीना

आत्मविश्वास से तात्पर्य ''स्वयं पर विश्वास व नियंत्रण है।'' जीवन में सफलता के लिए आत्मविश्वास उतना ही आवश्यक है जितना मनुष्य के लिए ऑक्सीजन और पानी, बिना आत्मविश्वास के विद्यार्थी अपने जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है।

एक विद्यार्थी के जीवन का आधार ही आत्मविश्वास है। आत्मविश्वास जितना मजबूत होगा विद्यार्थी का जीवन भी उतना ही मजबूत होगा। विद्यार्थियों को यह विश्वास होना चाहिए कि ''मैं वह सब कुछ कर सकता हूँ जो चाहे कैसी भी परिस्थिति या समस्याएं हो।''

आत्मविश्वास ऐसी शक्ति है जो कभी नहीं हारती है। हमारे विद्यालय में विद्यार्थियों में आत्मविश्वास जगाने के लिए कक्षावार विद्यार्थियों को बारी-बारी से प्रार्थना सभा का आयोजन कराने का मौका दिया जाता है एवं साथ ही प्रार्थना सभा में प्रतिदिन सामान्य ज्ञान से संबंधित 5 प्रश्न पूछे जाने का नियम बनाया हुआ है। हमने यह प्रक्रिया जब शुरू की थी तब सर्वप्रथम कक्षा 12 के विद्यार्थी को बुलाकर प्रार्थना सभा एवं सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछने के लिए कहा गया तो जब वह विद्यार्थी प्रार्थना सभा का आयोजन करवा रहा था तब थोड़ा नर्वस लग रहा था। जब शिक्षकों व प्रधानाचार्य जी के द्वारा बताया गया कि आप यह कर सकते हैं तो उस विद्यार्थी ने बिना हिचकिचाए प्रार्थना सभा का आयोजन किया। यह उस विद्यार्थी का आत्मविश्वास ही था जिससे वह यह सब कर पाया है।

अत: मेरा मानना है कि यदि विद्यार्थी कोई कार्य अपने आत्मविश्वास से करे तो सफलता शत प्रतिशत प्राप्त होती है।

एक सफल विद्यार्थी और एक असफल विद्यार्थी के बीच सिर्फ आत्मविश्वास का अंतर होता है। आत्मविश्वास सफलता का मूल मंत्र है सही दिशा में और सच्चे मन से किए गए काम निष्फल नहीं होते हैं।

आत्मविश्वास के दुश्मन

1. आलस्य
2. क्रोध
3. चिंता
4. तनाव
5. डर

विद्यार्थी को अपने दैनिक जीवन में सफलता हासिल करने के लिए एक मीठे पदार्थ के रूप मूल मंत्र की आवश्यकता होती है वह है-

आईसक्रीम

1. आ-आत्मविश्वास
2. इ-इच्छाशक्ति
3. स-सकारात्मक दृष्टिकोण
4. क्री-क्रियाशीलता
5. म-महत्त्वाकांक्षा

किसी विद्यार्थी को आत्मविश्वासी बनने के लिए:-

1. अपने आराम वाले वातावरण से बाहर निकलें:- विद्यार्थी को अपने आनंद के क्षेत्र से बाहर निकल कर अपनी रुचि के क्षेत्र में कुछ अलग कार्य करें जिससे वह एक नया आयाम स्थापित करेगा और उसे यह विश्वास होगा कि वह यह कर सकता है तो अन्य कार्य में क्षेत्रों भी सफलता प्राप्त कर सकता है। सुख-सुविधा के वातावरण से बाहर निकले व हर परिस्थिति वाले वातावरण में रहे ताकि आप प्रत्येक वह कार्य कर सकते हैं जो आप करना चाहते हो। आप विपरीत परिस्थिति का भी डट कर सामना करें एवं घबरायें नहीं।

2. फैसले लेने में ज्यादा समय व्यतीत न करें:- विद्यार्थी अपने अध्ययन काल के दौरान अपने पढ़ाई संबंधी कार्य में निर्णय लेने में समय व्यर्थ नहीं करे एवं निश्चित दिनचर्या का पालन करें।

3. आत्मविश्वासी विद्यार्थियों के साथ मित्रता करें:- गणित के अनुसार जिस तरह ऋणात्मक व धनात्मक मिलते हैं तो धनात्मक ही बनता है यदि धनात्मक के साथ ऋणात्मक मिलते हैं तो वह भी ऋणात्मक हो जाता है। इसी तरह विद्यार्थियों का हमेशा सकारात्मक सोच के विद्यार्थियों से ही मित्रता रखनी चाहिए अन्यथा नकारात्मक सोच वाले विद्यार्थियों से उनके अध्ययन कार्य पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

4. सफलता के प्रति नकारात्मक सोच से बचें:- विद्यार्थियों के जीवन में सबसे अधिक नकारात्मकता अपने परिणाम के प्रति रहती है लेकिन विद्यार्थियों को इस नकारात्मकता से बचना चाहिए क्योंकि अगर विद्यार्थी ने अपने आत्मविश्वास के साथ परीक्षा का सामना किया है तो निश्चित ही परिणाम विद्यार्थी की इच्छा अनुसार ही आएगा।

5. विद्यार्थी अपने जीवन की टिप्पणियों पर ध्यान न दे :- विद्यार्थी को अपने कार्य क्षेत्र के बारे में हमेशा आत्मविश्वासी रहना चाहिए उसे उन बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए जिसमें किसी अन्य द्वारा उसके कार्य क्षेत्र के बारे में टिप्पणी की जा रही है कि वह ऐसा नहीं कर सकता, वह कभी सफल नहीं हो सकता। विद्यार्थी को हमेशा सकारात्मक सोच के साथ आत्मविश्वासी भी होना चाहिए।

6. विपरीत परिस्थितियों में घबराना नहीं चाहिए- अच्छे से अच्छा तैराक बिना आत्मविश्वास के तैर नहीं सकता। आत्मविश्वास ही विद्यार्थी का परम मित्र व उसकी बड़ी पूंजी है सभी शक्तियों को संगठित करके उन्हें एक ही दिशा में लगाना चाहिए यथा शारीरिक, और मानसिक, तो सफलता उनके हाथ में है।

जीवन में आगे देखो तो आशाएं मिलेगी।
जीवन में पीछे देखो तो अनुभव मिलेंगे।
दाएं-बाएं देखोगे तो सत्य मिलेगा।
स्वयं के अंदर झांक कर देखोगे तो आत्मविश्वास मिलेगा।।

वरिष्ठ अध्यापक (सा.विज्ञान)
राउमावि बलवन, के. पाटन,
जिला-बूंदी (राजस्थान)

दिव्यांग प्रमाण-पत्र बनवाने हेतु घर बैठे करे रजिस्ट्रेशन

❐ स्नेहलता शर्मा

दिव्यांग व्यक्ति से तात्पर्य ऐसे व्यक्ति से है जो शारीरिक, बौद्धिक, दृष्टि बाधित एवं बहु दिव्यांगता होने से वह अपने दैनिक जीवन में सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा सुनने, बोलने, देखने, चलने, सोचने की स्थिति में कमी महसूस करते हैं।

दिव्यांग अधिकार अधिनियम-2016 के अन्तर्गत अब दिव्यांगता की श्रेणी 7 से बढ़ाकर 21 कर दी गई हैं।

दिव्यांग प्रमाण-पत्र बनवाने की सरल प्रक्रिया:-सर्वप्रथम अपने मोबाइल से या ईमित्र पर sso.rajasthan.gov.in पर दिव्यांग प्रमाण-पत्र बनवाने हेतु पंजीकरण कराए, पंजीकरण कराने के बाद आप पास के स्वास्थ्य केन्द्र (प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र अथवा जिला अस्पताल) उक्त में जो भी पास में पड़ता हैं पर जाकर तुरन्त सम्पर्क कर सकते हैं। राशनकार्ड, पहचान पत्र, जनआधार कार्ड, आधार कार्ड, बीमारी के पर्चे लेकर जाए। अपने नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र पर एकल डॉक्टर द्वारा निरीक्षण/परीक्षण करके गाईड लाईन अनुसार दिव्यांग प्रमाण-पत्र बनाया जाता है। उक्त स्वास्थ्य केन्द्रों पर सम्बन्धित फैकल्टी नहीं होने पर पास के अस्पतालों में दिव्यांग प्रमाण-पत्र बनाने हेतु व्यक्ति को रैफर किया जाता है।

डॉक्टर द्वारा दिव्यांग व्यक्ति की जाँच एवं परीक्षण करके दिव्यांगता घोषित की जाती है। 40 प्रतिशत एवं 40 प्रतिशत से अधिक दिव्यांगता होने पर ही दिव्यांग प्रमाण-पत्र बनाए जाते हैं। जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय द्वारा सत्यापित करने के बाद लगभग 10-15 दिन बाद नजदीक के ईमित्र केन्द्र से मूल दिव्यांग प्रमाण-पत्र प्राप्त कर सकते हैं।

40 प्रतिशत अथवा 40 प्रतिशत से अधिक दिव्यांगता होने पर दिव्यांग प्रमाण-पत्र बन जाने के बाद ही केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा मिलने वाली सामाजिक कल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त होता है जो निम्नानुसार हैं-

दिव्यांग प्रमाण-पत्र पर मिलने वाली सुविधाएं/लाभ:-

1. राजकीय नौकरियों में 04 प्रतिशत का आरक्षण का लाभ।
2. राजस्थान राज्य की रोडवेज बसों में 75 प्रतिशत किराए में रियायत का लाभ।
3. भारतीय रेल में किराए में 50 प्रतिशत की रियायत।
4. 1000 रुपये प्रतिमाह पेंशन एवं प्रतिवर्ष 15 प्रतिशत की वृद्धि।
5. राजकीय भर्ती प्रतियोगी परीक्षाओं में आवेदन शुल्क में रियायत की सुविधा।
6. राजकीय भर्ती में 10 वर्ष तक आयु सीमा में छूट का लाभ।
7. राजकीय एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा निःशुल्क कृत्रिम अंगों व उपकरणों का लाभ।
8. तकनीकी एवं गैर तकनीकी प्रशिक्षणों में प्रवेश के लिए सीटों का निर्धारण।
9. विद्यार्थी के अध्ययन में छात्रवृत्ति का लाभ।
10. दिव्यांग छात्र के माता-पिता को आयकर में छूट का लाभ एवं स्वयं दिव्यांग व्यक्ति को भी आयकर में छूट का लाभ।
11. सरकारी बसों में, रेल में दिव्यांग व्यक्तियों के लिए सीटों का आरक्षण का लाभ।
12. बस स्टेण्ड, मेट्रों में, रेलवे स्टेशनों एवं राजकीय और गैर राजकीय भवनों, पार्कों, सिनेमा घरों, मदिरों में सार्वजनिक स्थानों पर दिव्यांगों के लिए रैम्पों की व्यवस्था के प्रावधान।
13. राजकीय विभागों, सार्वजनिक उपक्रमों में दिव्यांगों को स्थानान्तरण में प्राथमिकता के लाभ।
14. राजकीय सेवा में दिव्यांगों को पदोन्नति में प्रावधान।
15. दिव्यांग व्यक्तियों के त्वरित न्याय हेतु विशेष योग्यजन न्यायालयों की व्यवस्था है तथा इस न्यायालय में दिव्यांग स्वयं पैरवी कर बिना एडवोकेट के शीघ्र न्याय प्राप्त कर सकता है।
16. केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा राजकीय उपक्रमों एवं गैर सरकारी संगठनों में नौकरी हेतु विशेष रोजगार कार्यालयों की स्थापना की गई है। इन विशेष रोजगार कार्यालयों में दिव्यांग राजकीय व गैर राजकीय नौकरी के लिए निःशुल्क पंजीकरण करवा सकता है और रोजगार प्राप्त कर सकता है।

इनके पते निम्नानुसार हैं-

1. सहायक निदेशक, विशेष रोजगार कार्यालय, राजस्थान सरकार, बी-100, यूनिवर्सिटी मार्ग, बापू नगर, जयपुर।
2. अधीक्षक, केन्द्रीय रोजगार एवं व्यावसायिक केन्द्र, भारत सरकार, 24 स, सूर्य नगर, जवाहर नगर, जयपुर-302004

17. दिव्यांगों के कौशल विकास प्रशिक्षण में निर्धारित सीटों का आरक्षण।
18. कौशल विकास प्रशिक्षण के पश्चात स्वरोजगार हेतु कम ब्याज दर पर ऋण व सब्सिडी की सुविधा का लाभ।
19. दिव्यांग जनों को केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा उत्कृष्ट कार्यो हेतु राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर पुरस्कार दिए जाते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर 1 लाख रुपये नगद व प्रशस्ति-पत्र एवं राज्य सरकार द्वारा राज्य स्तर पर 10 से 15 हजार रुपये नगद व प्रशस्ति-पत्र विभिन्न श्रेणी में 03 दिसम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस पर प्रदान किए जाते हैं। इसका प्रकाशन समाचार पत्रों में प्रकाशित किया जाता है।
20. दिव्यांग व्यक्ति को विवाह हेतु राज्य सरकार द्वारा 50,000 रुपये का अनुदान प्रदान किया जाता है।

विशेष शिक्षक,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जोगीपुरा,
नदबई, भरतपुर। मो. नं. 9928388935

राष्ट्रीय गणित दिवस

❒ ओमप्रकाश लोधा

भारत में श्रीनिवास रामानुजन की जयंती प्रति वर्ष 22 दिसंबर को राष्ट्रीय गणित दिवस (National Mathematics Day) के रूप में मनाई जाती है। वर्ष 2023 में रामानुजन की 136वीं जयंती है। रामानुजन की 125वीं जयंती पर राष्ट्रीय गणित दिवस की घोषणा वर्ष 2012 में तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा की गई थी। यह दिन भारत के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन को समर्पित है। साल 2012 में केंद्र सरकार ने दिग्गज गणितज्ञ रामानुजन के सम्मान में उनके जन्मदिन 22 दिसम्बर को नेशनल मैथमेटिक्स डे के रूप में मनाए जाने की घोषणा की थी। इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य गणित के महत्व को लेकर लोगों के बीच जागरुकता बढ़ाना है।

रामानुजन संख्याएँ – 'रामानुजन संख्या' उस प्राकृतिक संख्या को कहते हैं जिसे दो अलग-अलग प्रकार से दो संख्याओं के घनों के योग द्वारा निरूपित किया जा सकता है।

$1^3+12^3-9^3+10^3-1729$

$16^3-2^3-15^3+9^3-4104$

$24^3-2^3-20^3-18^3-13832$

$27^3+10^3-24^3+19^3-20832$

अतः 1729, 4104, 20683, 39312, 40033 आदि रामानुजन संख्याएं हैं।

जीवनकाल–श्रीनिवास रामानुजन् इयंगर-रामानुजन् का जन्म 22 दिसम्बर 1887 को भारत के दक्षिणी भूभाग में स्थित कोयम्बटूर के ईरोड नाम के गांव में हुआ था। वह पारम्परिक ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे। इनकी माता का नाम कोमलताम्मल और इनके पिता का नाम श्रीनिवास अय्यंगर था। इनका बचपन मुख्यतः कुंभकोणम में बीता था। जो कि अपने प्राचीन मंदिरों के लिए जाना जाता है। बचपन में रामानुजन का बौद्धिक विकास सामान्य बालकों जैसा नहीं था। यह तीन वर्ष की आयु तक बोलना भी नहीं सीख पाए थे। जब इतनी बड़ी आयु तक जब रामानुजन ने बोलना आरंभ नहीं किया तो सबको चिंता हुई कि कहीं यह गूंगे तो नहीं हैं। बाद के वर्षों में जब उन्होंने विद्यालय में प्रवेश लिया तो भी पारम्परिक शिक्षा में इनका कभी भी मन नहीं लगा। रामानुजन ने दस वर्षों की आयु में प्राइमरी परीक्षा में पूरे जिले में सबसे अधिक अंक प्राप्त किया और आगे की शिक्षा के लिए टाउन हाईस्कूल पहुंचे। रामानुजन को प्रश्न पूछना बहुत पसंद था। उनके प्रश्न अध्यापकों को कभी-कभी बहुत अटपटे लगते थे। जैसे कि-संसार में पहला पुरुष कौन था? पृथ्वी और बादलों के बीच की दूरी कितनी होती है? रामानुजन का व्यवहार बड़ा ही मधुर था। इनका सामान्य से कुछ अधिक स्थूल शरीर और जिज्ञासा से चमकती आखें इन्हें एक अलग ही पहचान देती थीं। इनके सहपाठियों के अनुसार इनका व्यवहार इतना सौम्य था। कोई इनसे नाराज हो ही नहीं सकता था। विद्यालय में इनकी प्रतिभा ने दूसरे विद्यार्थियों और शिक्षकों पर छाप छोड़ना आरंभ कर दिया। इन्होंने स्कूल के समय में ही कालेज के स्तर के गणित को पढ़ लिया था। एक बार इनके विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने यह भी कहा था कि विद्यालय में होने वाली परीक्षाओं के मापदंड रामानुजन के लिए लागू नहीं होते हैं। हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद इन्हें गणित और अंग्रेजी मे अच्छे अंक लाने के कारण सुब्रमण्यम छात्रवृत्ति मिली और रामानुजन का गणित के प्रति प्रेम इतना बढ़ गया था। वे दूसरे विषयों पर ध्यान ही नहीं देते थे। यहां तक कि वे इतिहास, जीव विज्ञान की कक्षाओं में भी गणित के प्रश्नों को हल किया करते थे। नतीजा यह हुआ कि ग्यारहवीं कक्षा की परीक्षा में वे गणित को छोड़ कर बाकी सभी विषयों में फेल हो गए और परिणामस्वरूप उनको छात्रवृत्ति मिलनी बंद हो गई। एक तो घर की आर्थिक स्थिति खराब और ऊपर से छात्रवृति भी नहीं मिल रही थी। रामानुजन के लिए यह बड़ा ही कठिन समय था। घर की स्थिति सुधारने के लिए इन्होंने गणित के कुछ ट्यूशन तथा खाते-बही का काम भी किया। कुछ समय बाद 1907 में रामानुजन ने फिर से बारहवीं कक्षा की प्राइवेट परीक्षा दी और अनुतीर्ण हो गए और इसी के साथ इनके पारंपरिक शिक्षा की इतिश्री हो गई। ये बचपन से ही विलक्षण प्रतिभावान थे। इन्होंने खुद से गणित सीखा और अपने जीवनभर में गणित के 3,884 प्रमेयों का संकलन किया। इनमें से अधिकांश प्रमेय सही सिद्ध किये जा चुके हैं। इन्होंने गणित के सहज ज्ञान और बीजगणित प्रकलन की अद्वितीय प्रतिभा के बल पर बहुत से मौलिक और अपारम्परिक परिणाम निकाले। जिनसे प्रेरित शोध आज तक हो रहा है।

शिक्षा की समाप्ति और संघर्ष का समय विद्यालय छोड़ने के बाद का पांच वर्षों का समय इनके लिए बहुत हताशा भरा था। भारत इस समय परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा था। चारों तरफ भयंकर गरीबी थी। ऐसे समय में रामानुजन के पास न कोई नौकरी थी और न ही किसी संस्थान अथवा प्रोफेसर के साथ काम करने का मौका। बस उनका ईश्वर पर अटूट विश्वास और गणित के प्रति अगाध श्रद्धा ने उन्हें कर्तव्य मार्ग पर चलने के लिए सदैव प्रेरित किया। उनके अटूट विश्वास ने उन्हें कहीं रुकने नहीं दिया और वे इतनी विपरीत परिस्थितियों में भी गणित के अपने शोध को चलाते रहे। इस समय रामानुजन को ट्यूशन से कुल पांच रुपये मासिक मिलते थे और इसी में गुजारा होता था। विवाह और गणित साधना-वर्ष 1908 में इनके माता-पिता ने इनका विवाह जानकी नामक कन्या से कर दिया। विवाह हो जाने के बाद अब इनके लिए सब कुछ भूल कर गणित में डूबना संभव नहीं था। अतः वे नौकरी की तलाश में मद्रास आए। बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण न होने की वजह से इन्हें नौकरी नहीं मिली और उनका स्वास्थ्य भी बुरी तरह गिर गया। अब डॉक्टर की सलाह पर इन्हें वापस अपने घर कुंभकोणम लौटना पड़ा। बीमारी से ठीक होने के बाद वे वापस मद्रास आए और फिर से नौकरी की तलाश शुरू कर दी। ये जब भी किसी से मिलते थे तो उसे अपना एक रजिस्टर दिखाते थे। इस रजिस्टर में इनके द्वारा गणित में किए गए सारे कार्य होते थे। इसी समय किसी के कहने पर रामानुजन वहां के डिप्टी कलेक्टर श्री वी. रामास्वामी अय्यर से मिले। अय्यर गणित के बहुत बड़े विद्वान थे। यहां पर श्री अय्यर ने रामानुजन की प्रतिभा को पहचाना और जिलाधिकारी श्री रामचंद्र राव से कह कर इनके लिए 25 रुपये मासिक छात्रवृत्ति का प्रबंध भी कर दिया। इस वृत्ति पर रामानुजन ने मद्रास में एक साल रहते हुए अपना प्रथम शोधपत्र प्रकाशित किया। शोध पत्र का शीर्षक था 'बरनौली

संख्याओं के कुछ गुण' और यह शोध पत्र जर्नल ऑफ इंडियन मैथेमेटिकल सोसाइटी में प्रकाशित हुआ था। यहां एक साल पूरा होने पर इन्होने मद्रास पोर्ट ट्रस्ट में क्लर्क की नौकरी की। यहां पर रामानुजन रात भर जाग कर नए-नए गणित के सूत्र लिखा करते थे और फिर थोड़ी देर तक आराम कर के फिक्र दफ्तर के लिए निकल जाते थे। रात को रामानुजन के स्लेट और खड़िए की आवाज के कारण परिवार के अन्य सदस्यों की नींद चौपट हो जाती थी। प्रोफेसर हार्डी के साथ पत्र व्यवहार इस समय भारतीय और पश्चिमी रहन सहन में एक बड़ी दूरी थी और इस वजह से सामान्यतः भारतीयों को अंग्रेज वैज्ञानिकों के सामने अपने बातों को प्रस्तुत करने में काफी संकोच होता था। इधर स्थिति कुछ ऐसी थी कि बिना किसी अंग्रेज गणितज्ञ की सहायता लिए शोध कार्य को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता था। इस समय रामानुजन के पुराने शुभचिंतक इनके काम आए और इन लोगों ने रामानुजन द्वारा किए गए कार्यों को लंदन के प्रसिद्ध गणितज्ञों के पास भेजा। पर यहां इन्हें कुछ विशेष सहायता नहीं मिली लेकिन एक लाभ यह हुआ कि लोग रामानुजन को थोड़ा जानने लगे थे। इसी समय रामानुजन ने अपने संख्या सिद्धांत के कुछ सूत्र प्रोफेसर शेषू अय्यर को दिखाए तो उनका ध्यान लंदन के ही प्रोफेसर हार्डी की तरफ गया। प्रोफेसर हार्डी उस समय के विश्व के प्रसिद्ध गणितज्ञों में से एक थे और अपने सख्त स्वभाव और अनुशासन प्रियता के कारण जाने जाते थे। प्रोफेसर हार्डी के शोधकार्य को पढ़ने के बाद रामानुजन ने बताया कि उन्होंने प्रोफेसर हार्डी के अनुतरित प्रश्न का उत्तर खोज निकाला है। अब रामानुजन का प्रोफेसर हार्डी से पत्र व्यवहार आरंभ हुआ। अब यहां से रामानुजन के जीवन में एक नए युग का सूत्रपात हुआ। जिसमें प्रोफेसर हार्डी की बहुत बड़ी भूमिका थी। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो जिस तरह से एक जौहरी हीरे की पहचान करता है। और उसे तराश कर चमका देता है, रामानुजन के जीवन में वैसा ही कुछ स्थान प्रोफेसर हार्डी का है। प्रोफेसर हार्डी आजीवन रामानुजन की प्रतिभा और जीवन दर्शन के प्रशंसक रहे। रामानुजन और प्रोफेसर हार्डी की यह मित्रता दोनों ही के लिए लाभप्रद सिद्ध हुई। प्रोफेसर हार्डी ने उस समय के विभिन्न प्रतिभाशाली व्यक्तियों को 100 के पैमाने पर आंका था। अधिकांश गणितज्ञों को उन्होंने 100 में 35 अंक दिए और कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को 60 अंक दिए। लेकिन उन्होंने रामानुजन को 100 में पूरे 100 अंक दिए थे। आरंभ में रामानुजन ने जब अपने किए गए शोधकार्य को प्रोफेसर हार्डी के पास भेजा तो पहले उन्हें भी पूरा समझ में नहीं आया। जब उन्होंने अपने मित्र गणितज्ञों से सलाह ली तो वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि रामानुजन गणित के क्षेत्र में एक दुर्लभ व्यक्तित्व है और इनके द्वारा किए गए कार्य को ठीक से समझने और उसमें आगे शोध के लिए उन्हें इंग्लैंड आना चाहिए। अतः उन्होने रामानुजन को कैंब्रिज आने के लिए आमंत्रित किया। विदेश गमन-व्यक्तिगत कारणों और धन की कमी के कारण रामानुजन ने प्रोफ्फेसर हार्डी के कैंब्रिज के आमंत्रण को अस्वीकार कर दिया। प्रोफेसर हार्डी को इससे निराशा हुई लेकिन उन्होंने किसी भी तरह से रामानुजन को वहां बुलाने का निश्चय किया। इसी समय रामानुजन को मद्रास विश्वविद्यालय में शोध वृत्ति मिल गई थी। जिससे उनका जीवन कुछ सरल हो गया और उनको शोधकार्य के लिए पूरा समय भी मिलने लगा था। इसी बीच एक लंबे पत्रव्यवहार के बाद धीरे-धीरे प्रोफेसर हार्डी ने रामानुजन को कैंब्रिज आने के लिए सहमत कर लिया। प्रोफेसर हार्डी के प्रयासों से रामानुजन को कैंब्रिज जाने के लिए आर्थिक सहायता भी मिल गई। रामानुजन ने इंग्लैण्ड जाने के पहले गणित के करीब 3000 से भी अधिक नये सूत्रों को अपनी नोटबुक में लिखा था। रामानुजन ने लंदन की धरती पर कदम रखा। वहां प्रोफेसर हार्डी ने उनके लिए पहले से व्यवस्था की हुई थी। अतः इन्हें कोई विशेष परेशानी नहीं हुई। इंग्लैण्ड में रामानुजन को बस थोड़ी परेशानी थी और इसका कारण था उनका शर्मीला, शांत स्वभाव और शुद्ध सात्विक जीवनचर्या। अपने पूरे इंग्लैण्ड प्रवास में वे अधिकांशतः अपना भोजन स्वयं बनाते थे। इंग्लैण्ड की इस यात्रा से उनके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। उन्होंने प्रोफेसर हार्डी के साथ मिल कर उच्चकोटि के शोधपत्र प्रकाशित किए। अपने एक विशेष शोध के कारण इन्हें कैंब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा बी.ए. की उपाधि भी मिली। लेकिन वहां की जलवायु और रहन- सहन की शैली उनके अधिक अनुकूल नहीं थी और उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा। डॉक्टरों ने इसे क्षय रोग बताया। उस समय क्षय रोग की कोई दवा नहीं होती थी और रोगी को सेनेटोरियम में रहना पड़ता था। रामानुजन को भी कुछ दिनों तक वहां रहना पड़ा। वहां इस समय भी यह गणित के सूत्रों में नई नई कल्पनाएं किया करते थे। रॉयल सोसाइटी की सदस्यता-इसके बाद वहां रामानुजन को रॉयल सोसाइटी का फेलो नामित किया गया। ऐसे समय में जब भारत गुलामी में जी रहा था। तब एक अश्वेत व्यक्ति को रॉयल सोसाइटी की सदस्यता मिलना एक बहुत बड़ी बात थी। रॉयल सोसाइटी के पूरे इतिहास में इनसे कम आयु का कोई सदस्य आज तक नहीं हुआ है। पूरे भारत में उनके शुभचिंतकों ने उत्सव मनाया और सभाएं की। रॉयल सोसाइटी की सदस्यता के बाद यह ट्रिनीटी कॉलेज की फेलोशिप पाने वाले पहले भारतीय भी बने। रामानुजन का स्वास्थ्य गिरता जा रहा था और अंत में डॉक्टरों की सलाह पर उन्हें वापस भारत लौटना पड़ा। भारत आने पर इन्हें मद्रास विश्वविद्यालय में प्राध्यापक की नौकरी मिल गई और रामानुजन अध्यापन और शोध कार्य में पुनः रम गए। स्वदेश आगमन-भारत लौटने पर भी स्वास्थ्य ने इनका साथ नहीं दिया और हालत गंभीर होती जा रही थी। इस बीमारी की दशा में भी इन्होने मॉक थीटा फंक्शन पर एक उच्च स्तरीय शोधपत्र लिखा। रामानुजन द्वारा प्रतिपादित इस फलन का उपयोग गणित ही नहीं बल्कि चिकित्साविज्ञान में कैंसर को समझने के लिए भी किया जाता है। मृत्यु- इनका गिरता स्वास्थ्य सबके लिए चिंता का विषय बन गया और यहां तक कि अब डॉक्टरों ने भी जवाब दे दिया था। अंत में रामानुजन के विदा की घड़ी आ ही गई। 26 अप्रैल 1920 के प्रातः काल में वे अचेत हो गए और दोपहर होते-होते उन्होंने प्राण त्याग दिए। इस समय रामानुजन की आयु मात्र 33 वर्ष थी। इनका असमय निधन गणित जगत के लिए अपूरणीय क्षति था। पूरे देश विदेश में जिसने भी रामानुजन की मृत्यु का समाचार सुना वहीं स्तब्ध हो गया।

रामानुजन की कार्यशैली और शोध- रामानुजन और इनके द्वारा किए गए अधिकांश कार्य अभी भी वैज्ञानिकों के लिए अबूझ पहेली बने हुए हैं। एक बहुत ही सामान्य परिवार में जन्म लेकर पूरे विश्व को आश्चर्यचकित करने की अपनी

इस यात्रा में इन्होंने भारत को अपूर्व गौरव प्रदान किया। इनका उनका वह पुराना रजिस्टर जिस पर वे अपने प्रमेय और सूत्रों को लिखा करते थे। 1976 में अचानक ट्रिनीटी कॉलेज के पुस्तकालय में मिला। करीब एक सौ पन्नों का यह रजिस्टर आज भी वैज्ञानिकों के लिए एक पहेली बना हुआ है। इस रजिस्टर को बाद में रामानुजन की नोट बुक के नाम से जाना गया। मुंबई के टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान द्वारा इसका प्रकाशन भी किया गया है। इन्होंने शून्य और अनन्त को हमेशा ध्यान में रखा और इसके अंतर्सम्बन्धों को समझाने के लिए गणित के सूत्रों का सहारा लिया। रामानुजन के कार्य करने की एक विशेषता थी। पहले वे गणित का कोई नया सूत्र या प्रमेय पहले लिख देते थे। रामानुजन का आध्यात्म के प्रति विश्वास इतना गहरा था कि वे अपने गणित के क्षेत्र में किये गए किसी भी कार्य को आध्यात्म का ही एक अंग मानते थे। वे धर्म और आध्यात्म में केवल विश्वास ही नहीं रखते थे बल्कि उसे तार्किक रूप से प्रस्तुत भी करते थे। वे कहते थे कि 'मेरे लिए गणित के उस सूत्र का कोई मतलब नहीं है जिससे मुझे आध्यात्मिक विचार न मिलते हों।' गणितीय कार्य एवं उपलब्धियाँ– रामानुजन ने इंग्लैण्ड में पाँच वर्षो तक मुख्यतः संख्या सिद्धान्त के क्षेत्र में काम किया। इन्हें आधुनिक काल के महानतम् गणित विचारकों में गिना जाता है। इन्हें गणित में कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं मिला, फिर भी इन्होंने विश्लेषण एवं संख्या सिद्धांत के क्षेत्रों में विशेष योगदान दिया।

गणित–ऐसी विद्याओं का समूह है जो संख्याओं, मात्राओं, परिमाणों, रूपों और उनके आपसी रिश्तों, गुण, स्वभाव इत्यादि का अध्ययन करती हैं। गणित एक अमूर्त या निराकार (abstract) और निगमनात्मक प्रणाली है।

गणित की कई शाखाएँ हैं : अंकगणित, रेखागणित, त्रिकोणमिति, सांख्यिकी, बीजगणित, कलन, इत्यादि । गणित में अभ्यस्त व्यक्ति या खोज करने वाले वैज्ञानिक को गणितज्ञ कहते हैं।

बीसवीं शताब्दी के प्रख्यात ब्रिटिश गणितज्ञ और दार्शनिक बर्टैंड रसेल के अनुसार 'गणित को एक ऐसे विषय के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें हम जानते ही नहीं कि हम क्या कह रहे हैं, न ही हमें यह पता होता है कि जो हम कह रहे हैं वह सत्य भी है या नहीं।'

गणित कुछ अमूर्त धारणाओं एवं नियमों का संकलन मात्र ही नहीं है, बल्कि दैनंदिन जीवन का मूलाधार है।

गणित का महत्व–पुरातन काल से ही सभी प्रकार के ज्ञान–विज्ञान में गणित का स्थान सर्वोपरि रहा है– जिस प्रकार मोरों में शिखा और नागों में मणि का स्थान सबसे ऊपर है, उसी प्रकार सभी वेदांग और शास्त्रों मे गणित का स्थान सबसे ऊपर है। महान गणितज्ञ गाउस ने कहा था कि गणित सभी विज्ञानों की रानी है। गणित, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का एक महत्वपूर्ण उपकरण (टूल) है। भौतिकी, रसायन विज्ञान, खगोल विज्ञान आदि गणित के बिना नहीं समझे जा सकते। ऐतिहासिक रूप से देखा जाय तो वास्तव में गणित की अनेक शाखाओं का विकास ही इसलिये किया गया कि प्राकृतिक विज्ञान में इसकी आवश्यकता आ पड़ी थी। अपने दैनिक जीवन में रोजाना ही हम गणित का इस्तेमाल करते हैं–उस वक्त जब समय जानने के लिए हम घड़ी देखते हैं, अपने खरीदे गए सामान या खरीदारी के बाद बचने वाली रेजगारी का हिसाब जोड़ते हैं या फिर फुटबाल टेनिस या क्रिकेट खेलते समय बनने वाले स्कोर का लेखा–जोखा रखते हैं। व्यवसाय और उद्योगों से जुड़ी लेखा संबंधी संक्रियाएं गणित पर ही आधारित हैं। बीमा (इंश्योरेंस) संबंधी गणनाएं तो अधिकांशतया व्याज की चक्रवृद्धि दर पर ही निर्भर है। जलयान या विमान का चालक मार्ग के दिशा–निर्धारण के लिए ज्यामिति का प्रयोग करता है। भौगोलिक सर्वेक्षण का तो अधिकांश कार्य ही त्रिकोणमिति पर आधारित होता है। यहां तक कि किसी चित्रकार के आरेखण कार्य में भी गणित मददगार होता है, जैसे कि संदर्भ (पर्सपेक्टिव) में जिसमें कि चित्रकार को त्रिविमीय दुनिया में जिस तरह से इंसान और वस्तुएं असल में दिखाई पड़ते हैं, उन्हीं का तदनुरूप चित्रण वह समतल धरातल पर करता है। संगीत में स्वरग्राम तथा संनादी (हार्मोनी) और प्रतिबिंदु (काउंटरपाइंट) के सिद्धांत गणित पर ही आश्रित होते हैं। गणित का विज्ञान में इतना महत्व है तथा विज्ञान की इतनी शाखाओं में इसकी उपयोगिता है कि गणितज्ञ एरिक टेम्पल बेल ने इसे 'विज्ञान की साम्राजी और सेविका' की संज्ञा दी है। किसी भौतिकविज्ञानी के लिए अनुमापन तथा गणित का विभिन्न तरीकों का बड़ा महत्व होता है। रसायनविज्ञानी किसी वस्तु की अम्लीयता को सूचित करने वाले पी एच (pH) मान के आकलन के लिए लघुगणक का इस्तेमाल करते हैं। कोणों और क्षेत्रफलों के अनुमापन द्वारा ही खगोलविज्ञानी सूर्य, तारों, चंद्र और ग्रहों आदि की गति की गणना करते हैं। प्राणी–विज्ञान में कुछ जीव–जन्तुओं के वृद्धि–पैटर्न के विश्लेषण के लिए विमीय विश्लेषण की मदद ली जाती है।

गणित का इतिहास– यह मानव सभ्यता जितना ही पुराना है। मानव जीवन के विस्तार और इसमें जटिलताओं में वृद्धि के साथ गणित का भी विस्तार हुआ है और उसकी जटिलताएं भी बढ़ी हैं। सभ्यता के इतिहास के पूरे दौर में गुफ़ा में रहने वाले मानव के सरल जीवन से लेकर आधुनिक काल के घोर जटिल एवं बहुआयामी मनुष्य तक आते–आते मानव जीवन में धीरे–धीरे परिवर्तन आया है। इसके साथ ही मानव ज्ञान–विज्ञान की एक व्यापक एवं समृद्ध शाखा के रूप में गणित का विकास भी हुआ है। हालांकि एक आम आदमी को एक हजार साल से बहुत अधिक पीछे के गणित के इतिहास से उतना सरोकार नहीं होना चाहिए, परंतु वैज्ञानिक, गणितज्ञ, प्रौद्योगिकीविद्, अर्थशास्त्री एवं कई अन्य विशेषज्ञ रोजमर्रा के जीवन में गणित की समुन्नत प्रणालियों का किसी न किसी रूप में एक विशाल, अकल्पनीय पैमाने पर इस्तेमाल करते हैं। आजकल गणित दैनिक जीवन के साथ सर्वव्यापी रूप में समाया हुआ दिखता है।

गणित सीखने का सरल तरीका–गणित सीखने की सबसे सरल विधि निरंतर अभ्यास है। पहले आप यह निश्चित कर लेवें कि आप गणित किस स्तर का सीखना चाहते हैं। ऐसे ही दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली या गणित में आपको आगे पढ़ाई करनी है। गणित विषय की बेसिक जानकारी रखें। अपने विषय के हर टॉपिक को जानना काफी जरुरी है। रोजमर्रा की समस्याओं को हल करने में गणित का प्रयोग करें। गणित के सवालों के लिए ट्रिक सीखें। खुद पढ़ाई करें। सवालों का खूब अभ्यास करें। गणित का बेसिक से लेकर एडवांस फार्मूला का चार्ट बनाएं/ टेबल/पहाड़ा याद करें।

व्याख्याता
महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय–विरौंधा
धौलपुर–328024
मो.: 8505013053

गतिविधि आधारित शिक्षण: एक क्रांतिकारी कदम

❒ पंकज कुमार उपाध्याय

एक सृजनशील, नवाचारी और कलात्मक अभिरुचि संपन्न शिक्षक द्वारा गतिविधि आधारित दृश्य श्रव्य माध्यम द्वारा वीडियो निर्माण कर उसे दूर-दराज बैठे विद्यार्थियों और शिक्षकों तक पहुंचाना जिससे बालक स्वयं गतिविधि करके ज्ञान का अर्जन कर सके, इसका प्रमुख उद्देश्य है। यह कार्यक्रम शिक्षकों में अंतर्निहित अभूतपूर्व शिक्षण कला, जो एक बालक को सीखने के तरीकों में ना केवल सहायक होती है वरन नवीन ज्ञान के स्वयं सृजन, अर्जन में सहयोग प्रदान करेगी।

यह कार्यक्रम रटने की बजाय समझ विकसित करने पर जोर देता है। यह कार्यक्रम उन तमाम शिक्षकों को समर्पित है जो अपने आप में शिक्षण के सरल तरीकों का सृजन करने में माहिर है। इन गतिविधियों को करने पर मेरे मन मस्तिष्क में एक बात आ रही है कि जब तक शिक्षक बालक की देश, काल और वातावरण जनित उन कमजोर दक्षताओं के बारे में नहीं सोचेगा तब तक उसके मस्तिष्क में गतिविधि निर्माण के विचार नहीं बनेंगे और न ही गतिविधि विकसित करने की सोच उत्पन्न होगी इसलिए बालक की उन कमजोरियों को समझना चाहिए और निराकरण का प्रयास करना चाहिए ताकि गतिविधि की सोच स्वत: ही उत्पन्न हो जाए। और यदि शिक्षक ने एक बार भी सोचना प्रारंभ किया तो नए-नए तरीके स्वत: उत्पन्न होते रहते हैं और गतिविधि आगे से आगे बढ़ती रहती हैं। एक गतिविधि में उत्पन्न आइडिया दूसरी गतिविधि में सहायक सिद्ध हो सकता है।

गतिविधि आधारित शिक्षण का मेरे मन मस्तिष्क में बीजारोपण करने का और मुझमें कुछ नया करने का आत्मविश्वास मेरे ACBEO सर प्रदीप सिंह जी और PEEO सर पवन जी सेवक द्वारा किया गया, जिन्होंने मेरे विद्यालय निरीक्षण के दौरान मेरी स्वनिर्मित TLM सामग्री और प्रस्तुतिकरण के तरीके से शिक्षण को रोचक बनाने के प्रयास को काफी करीब से देखा और कहा कि क्यों ना आप TLM के साथ-साथ गतिविधि आधारित शिक्षण को अपनाये तो आप अपने शिक्षण को और अधिक छात्रोन्मुखी और रोचक बना सकेंगे। मैंने दोनों सर की बात को माना और जो TLM निर्माण कर सिखाने का प्रयास कर रहा था उसी को गतिविधि आधारित तरीके में रूपांतरित करने लगा उसमें मेरा प्रथम प्रयास 'आ की मात्रा भाई, आ की मात्रा' हाथ के इशारे से सफल रहा और बच्चे खुश होकर गतिविधि करने लगे और इतना मजा आया कि छात्र घर जाते हुए भी चलते-चलते गतिविधि कर रहे थे। इस गतिविधि का सकारात्मक परिणाम यह रहा कि बालक मात्राओं को सटीक तरीके से याद करने लगे और खेल-खेल में वर्णों के ऊपर मात्रा लगाकर छोटे-छोटे शब्द बनाना सीख गए। साथ ही जो बालक विद्यालय अनियमित आ रहे थे उन्होंने इन गतिविधियों को छात्रों के साथ देखा तो वह नियमित विद्यालय आने लगे ।

मेरे शब्दों में गतिविधि आधारित शिक्षण:-

1. ऐसी विधा जो शिक्षण को गति प्रदान करे और बालकों के मन मस्तिष्क को रोमांचित कर सीखने के लिए प्रेरित या आकर्षित करे ।

2. एक अच्छा शिक्षक वही है जो समय की मांग के अनुसार अपने शिक्षण कला में परिवर्तन लाए।

3. एक आदर्श गतिविधि आधारित शिक्षण वही होता है जो छात्रों की समस्याओं को समझे और उनका त्वरित निराकरण करें।

गतिविधि आधारित शिक्षण से अधिगम और अध्यापन प्रक्रिया में होने वाले व्यवहारगत परिवर्तन:-

1. यह कार्यक्रम उन तमाम शिक्षकों के लिए है जो कलात्मक क्षमता रखते हैं और अपने शिक्षण को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करते हैं उनके लिए एक प्लेटफार्म तैयार करेगा ।

2. शिक्षा जगत में ज्ञान को अर्जित करने के नवीन तरीकों से अवगत कराएगा ।

3. बालकों को कठिन से कठिन विषय वस्तु को सरल तरीके से खेल-खेल में अर्जित कर सकेंगे।

4. यह बालकों को रटने के बजाय समझ विकसित करने पर अधिक बल देगा।

5. यह मनोवैज्ञानिक तथ्य ''करके सीखना'' पर आधारित है।

6. कम से कम समय में अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने का सही माध्यम रहेगा ।

7. यह बालकों की उन कमजोर दक्षताओं को दूर करने में सहायक होगा जो पिछली कक्षा में अर्जित करने से रह गई है।

8. इस कार्यक्रम से विभाग के पास रोचक गतिविधियों का एक पिटारा तैयार होगा जो विपरीत परिस्थितियों में या विद्यालय समय पश्चात बालकों के ज्ञानार्जन में मील का पत्थर

साबित होगी और मार्गदर्शक का कार्य करेगा।

9. इस कार्यक्रम से राजस्थान के शिक्षकों का उत्साहवर्धन हुआ है कि वह गतिविधि आधारित वीडियो बनाकर राज्य स्तर पर अपनी पहचान बना सकते हैं साथ ही उनमें निहित क्षमताओं को गतिविधि के माध्यम से प्रदर्शन करने का यह सुनहरा अवसर है जिसमें बालकों के साथ-साथ शिक्षकों का भी भविष्य उज्जवल है।

गतिविधि आधारित शिक्षण में मेरे नवाचार, जिन पर मैने प्रयास किया और रोचक विडियो बना कर अधिगम को सरल बनाया:-

सामान्य रूप से मैंने दो विषय पर काम किया है एक है हिंदी और दूसरी है गणित ।

सर्वप्रथम हम हिंदी की गतिविधियों के बारे में बात करेंगे:-

1. आ की मात्रा भाई, आ की मात्रा। 2. वर्ण लंगडी। 3. वर्णो से शब्द बनाने का खेल। 4. आओ भाई आओ, शब्दों को तोड़े। 5. हलवा पुरी खाएंगे 'क' के घर जाएंगे। 6. मात्राओं से खेलना। 7. आओ भाई आओ चकरी गुमाये। 8. विलोम कछुआ।

अब हम गणित विषय की गतिविधियों के बारे में बात करेंगे:-

1. संख्या को गिन कर लिख सकेंगे। 2. संख्या को पहचान कर सही क्रम में लिखना । 3. दो अंको की संख्याओं को पढ़कर लिख सकेंगे। 4. संख्या को संख्या रेखा पर प्रदर्शित करना। 5. 9 अंक तक की संख्याओं की जोड़। 6. 9 अंक तक की संख्याओं का घटाव। 7. दो से तीन अंकीय संख्याओं की जोड़ 8. व्यवहारिक जोड़। 9. व्यवहारिक घटाव। 10. भाग की समझ 11. भिन्न की तुलना करना। 12. लंबाई, भार व क्षमता का अनुमान लगाना। 13. आकृतियों की समझ। 14. आकृति का नाम, भुजाएं व कोणों के बारे में जान सकेंगे। 15. खेल-खेल में संख्या निर्माण करना।

इन नवाचारों से विद्यार्थियों में हुए अपेक्षित परिवर्तन:-

1. जो बालक विद्यालय में आकर सुस्त बैठे रहते थे वे आज अपनी शत प्रतिशत सहभागिता निभा रहे हैं और रुचि के साथ अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित हो रहे हैं।

2. जो विद्यार्थी अनियमित थे वे नियमित विद्यालय आने लगे ।

3. विद्यार्थी हिंदी विषय में मात्राओं की गलतियां करते थे, वह मात्रा को समझ कर छोटे-छोटे वाक्य निर्माण करना सीख गए हैं।

4. विद्यार्थी इन गतिविधियों को घर जाकर भी अभ्यास के रूप में कर रहे हैं।

5. संख्याओं से खेलना, संख्या निर्माण करना, संख्याओं की तुलना करना, हल्का भारी बता पाना, संख्या रेखा पर संख्या को प्रदर्शित कर पाना वह जोड़, बाकी, पहाडे निर्माण इत्यादि कार्य बालक स्वयं करने लगे हैं।

6. सबसे बड़ी बात बालकों में वह आत्मविश्वास जाग गया है कि मैं स्वयं कर सकता हूं और विद्यालय का वातावरण अत्यंत ही आनंदमय और रोचक बन पड़ा है।

इन्हीं सभी गतिविधियों के आधार पर शिक्षा विभाग और निदेशालय की इस अभिनव पहल की महत्वाकांक्षी योजना 'डिजिटल दक्ष शिक्षक' एवं 'शिक्षक सितारे' के रूप में चयन हुआ। शिक्षक सितारे कार्यक्रम में मेरे द्वारा बनाया गया गतिविधि आधारित वीडियो हल्का भारी जानेंगे का विभाग द्वारा चयन किया गया और मुझे सूचना दी गई कि आपका प्रथम शिक्षक सितारे के रूप में चयन किया गया है इस गतिविधि में बच्चों ने बहुत आनंद लिया वह दक्षता को खेल-खेल में अर्जित किया।

इससे मेरे आत्मविश्वास में वृद्धि हुई और मैने और अधिक अच्छे वीडियो बनाने का निश्चय किया। मेरे द्वारा निर्मित इन गतिविधि आधारित रोचक वीडियो ने ब्लॉक एवं जिलेभर में एक नई उड़ान और अंगड़ाई ली, जिससे शिक्षकों ने प्रेरित होकर अपने विद्यालय में गतिविधियां कराकर अच्छे-अच्छे वीडियो 'शिक्षक सितारे कार्यक्रम' में अपलोड किए।

शिक्षक सितारे कार्यक्रम का उज्वल है भविष्य:-

1. वर्तमान समय में बालकों का जुड़ाव मोबाइल से ज्यादा हो गया है इसे छुड़ाने में गतिविधि आधारित यह कार्यक्रम कारगर साबित होगा।

2. भविष्य में प्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण बाधित होने पर यह गतिविधि आधारित वीडियो रामबाण का काम करेंगे ।

3. शिक्षकों में अंतर्निहित नवाचारी, प्रयोगमूलक शिक्षण कला को यह प्रत्येक बालक तक पहुंचाने का सबसे अच्छा माध्यम बनेगी।

4. छात्रों की अधिगम और कक्षा के प्रति जो उदासीनता रहती है वह इन गतिविधि आधारित शिक्षण के माध्यम से दूर होगी और छात्र रुचि लेकर शिक्षण करेंगे।

5. अगर एक शिक्षक साथी एक गतिविधि आधारित शिक्षण का तरीका भी प्रस्तुत करता है तो भविष्य में विभाग के पास इतने तरीके इकट्ठे होंगे के बिना किताब के भी इन दक्षताओं को खेल-खेल में अर्जित करना आसान होगा।

आप भी बन सकते हैं शिक्षक सितारे:-

1. किसी एक दक्षता का चयन करें उस पर गतिविधि आधारित रोचक वीडियो शूट करें।

2. वीडियो 2 से 2:30 मिनट का होना चाहिए।

3. वीडियो के साउंड और दृश्य क्लियर होने चाहिए।

4. वीडियो में आप ब्लैक बोर्ड पर पढ़ाते हैं इससे अच्छा आप बच्चों के साथ गतिविधि करते हुए नजर आएं।

5. गतिविधि में बालक निडर होकर अपनी बात को कह रख सके व आनंद के साथ अपनी सहभागिता निभाए।

6. बैकग्राउंड में गतिविधि के अलावा अन्य किसी भी प्रकार की आवाज नहीं आनी चाहिए हल्का म्यूजिक ऐड कर सकते हैं।

7. खेल में इतने मग्न भी ना हो जाएं कि दक्षता का मूलभूत उद्देश्य भूल जाएं।

गतिविधि आधारित शिक्षण का यह नवाचारी और अभिनव प्रयोग राजस्थान के सरकारी विद्यालयों के कायाकल्प करने की दिशा में एक निर्णायक भूमिका का निर्वहन करेगा। वास्तव में यह कार्यक्रम राजस्थान के शिक्षकों के लिए एक मिसाल साबित होगा ।

अध्यापक
रा.प्रा.वि. खेड़ा फला, पादरडी बड़ी,
तहसील-सागवाड़ा, जिला-डूंगरपुर

आदेश-परिपत्र : दिसम्बर, 2023

1. **हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान वर्ष 2023-24 की कटौती वेतन बिलों से करने बाबत।**
2. **देवनारायण योजनान्तर्गत विशेष कोचिंग कैम्प विस्तृत दिशा-निर्देश वर्ष 2023-24**

1. हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान वर्ष 2023-24 की कटौती वेतन बिलों से करने बाबत।

● कार्यालय, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ●क्रमांक:-शिविरा/मा0/हि0नि0/28203/2023-24 दिनांक- 20.11.2023 ● समस्त संयुक्त निदेशक, शिक्षा विभाग ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, (मुख्यालय) (माध्यमिक/प्रारंभिक) ● समस्त डाइट प्राचार्य ● समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ● राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान, बीकानेर एवं अजमेर ● प्रधानाचार्य सार्दूल स्पोर्टस राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर एवं समस्त विशिष्ट संस्थायें ● पंजीयक शिक्षा विभागीय परिक्षायें बीकानेर ● विषय: हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान वर्ष 2023-24 की कटौती वेतन बिलों से करने बाबत।

उपर्युक्त विषय में लेख है कि राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प021 (7) शिक्षा-2/ हितकारी निधि /2017 दिनांक 13.10.2017 एवं पत्रांक 15.06.2018 के द्वारा अनुमोदन उपरान्त हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान वर्ष 2018-19 से वेतन बिलों की आंतरिक राशि में से वेतन माह दिसम्बर देय जनवरी से प्रारंभ किया गया, उसी प्रकार वित्तीय वर्ष 2023-24 में वेतन माह दिसम्बर, 2023 देय जनवरी, 2024 की कटौती पूर्व निर्धारित प्रक्रिया एवं दर से की जानी है।

हितकारी निधि वार्षिक अंशदान वेतन माह दिसम्बर, 2023 देय जनवरी, 2024 के सम्बन्ध में गत वर्ष की भाँति एक निर्देशिका इस पत्र के साथ संलग्न कर प्रेषित की जा रही है, अतः इस सम्बन्ध में कोषाधिकारी / उप-कोषाधिकारी से सम्पर्क कर कटौती सुनिश्चित करावें एवं उक्त समस्त दस्तावेज अपने अधीनस्थों को प्रेषित कर आवश्यक मार्ग निर्देश प्रदान करें। इस सम्बन्ध में यदि आवश्यक हो तो निम्न मोबाइल नम्बर पर डायल कर अतिरिक्त जानकारी प्राप्त की जा सकती है। 9461244803, 7023634416

●**(इन्द्रा चौधरी)** उप निदेशक (प्रशासन) एवं सचिव हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

हितकारी निधि का अंशदान वेतन माह दिसम्बर 2023 भुगतान जनवरी 2024 सीधे ही वेतन से कटौती करने हेतु मार्ग निर्देश:-

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● विषय :- हितकारी निधि का अंशदान वेतन माह दिसम्बर 2023 भुगतान जनवरी 2024 सीधे ही वेतन से कटौती करने हेतु मार्ग निर्देश

1. वेतन माह दिसम्बर 2023 दैय जनवरी 2024 हितकारी निधि अंशदान कटौती हेतु निदेशालय के परिपत्र का पूर्ण अवलोकन करें।
2. वार्षिक अंशदान परिपत्र अनुसार निर्धारित दर से किया जाना है।
3. हितकारी निधि की 28वीं एवं 29वीं बैठक में किए गए निर्णयानुसार अब हितकारी निधि के अंशदान की कटौती सीधे ही वेतन बिलों से की जानी है, इसका अनुमोदन राज्य सरकार के पत्रांक दिनांक 15.06.2018 द्वारा प्राप्त किया गया है।
4. प्रत्येक आहरण एवं वितरण अधिकारी साथ संलग्न (क्र0स0 -1) के अनुसार एक पत्र अपने कोषाधिकारी / उप-कोषाधिकारी को प्रस्तुत करेंगे।

   उक्त पत्र के साथ निम्न दस्तावेज संलग्न किए जाए:-

   1. वेतन बिल के साथ (क्र-सं. 2) अनुसार प्रत्येक आहरण एवं वितरण अधिकारी द्वारा हितकारी निधि कटौती का शिड्यूल संलग्न किया जावे जिसके अन्त में DDO के हस्ताक्षर मय कार्यालय मोहर एवं DDO कोड अंकित किया जावे।
   2. पत्र के साथ निदेशक कोष एवं लेखा राजस्थान, जयपुर का पत्र (क्र0स0- 3) संलग्न करें।
   3. पत्र के साथ हितकारी निधि खाता संख्या 51020721611 की बैंक पास बुक के प्रथम पृष्ठ कि प्रति संलग्न करें। (क्र.स.4)
   4. पाथ निर्देश पत्र
   5. बिन्दु संख्या 4 में अवगत कराए अनुसार पत्रादि तैयार कर संबंधित कोषालय / उप कोषालय में पत्र प्रस्तुत कर कटौती के सम्बन्ध में वार्ता कर लेवे एवं तदनुसार कार्यवाही करें।
   6. Paymanager पर Dependet Deducation के रूप में संबंधित कोषालय / उपकोषालय में paymanager पर Add करावें।
   7. दिसम्बर 2018 के वेतन बिल से कटौती हो जाने के पश्चात आपको अपने स्तर से कटौती के Option को डिलीट करना होगा ताकि अगले माह में पुनः कटौती ना हो जावे, इसका विशेष ध्यान रखा जाए। क्योंकि यह कटौती वार्षिक है। यदि अधिक कटौती होती है तो इसकी समस्त जिम्मेदारी आप स्वयं की होगी।

8. वेतन विपत्र से कटौती केवल दिसम्बर 2023 दैय जनवरी 2024 के वेतन से की जानी है, यदि किसी कारणवश कटौती विपत्र से नहीं हो पाती है तो पूर्व की भाँति अंशदान राशि एकत्रित कर DD/चेक के माध्यम से ही भिजवाई जाए।
9. वेतन विपत्र पारित होने के उपरान्त हितकारी निधि अंशदान कटौती के शिड्यूल एवं ई0सी0एस0 केशबुक की एक हस्ताक्षरित प्रति अध्यक्ष हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर के नाम से प्रेषित करें ताकि बैंक से इसका मिलान किया जा सकें।
10. अंशदान की कटौती केवल Co-Operative deduction के अन्तर्गत ही करना सुनिश्चित करें। अन्य किसी मद से अंशदान कटौती न करें।

Add Group Dependent Deducation में कटौती शुरू करवाने बाबत।

कोषाधिकारी / उप कोषाधिकारी
....

विषय : Add Group Dependent Deducation में कटौती शुरू करवाने बाबत।

1. उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि माह दिसम्बर, 2018 का वेतन जो माह जनवरी, 2019 में देय होगा जिसमें समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों के वेतन से हितकारी निधि फण्ड के लिए वार्षिक अंशदान की कटौती की जानी है। उक्त कटौती पै-मेनेजर में Add Group Dependent Deducation से की जानी है।
2. इस प्रकार से काटी गई राशि हितकारी निधि में निम्नानुसार जमा की जानी है।

01	Bank Account No.	51020721611
02	Bank IFSC Code	SBIN0031347
03	Bank Branch	के0ई0एम0 रोड, शाखा, बीकानेर

3. वर्तमान में Add Group Dependent Deducation में कटौती नहीं हो रहीं है अतः कृपया Add Group Dependent Deducation में कटौती शुरू करवाने का श्रम करावें। इस कार्यालय की ऑफिस आई0डी0........... है।

क्र.स.	ग्रुप का नाम जिसमें कटौती की जानी है।
01	हितकारी निधि

हस्ताक्षर
DDO.....................
Code No. ....

अध्यक्ष हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर

Schedule of Cooperative Account

Office Name:-
Month:-

DDO Code:-
Bill No. & Date:-

Sr. No.	Employee	ID Name of Employee	A/c No.	Designation	Deduction Amount
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
Grand Total					

Add. Group Dependent Deduction में कटौती शुरू करवाने के संबंध में

●**राजस्थान सरकार निदेशालय कोष एवं लेखा, राजस्थान जयपुर**● क्रमांक:एफ.5(थ-75)कोष/IFMS/Paymanager/21318 ● दिनांक 15.3.2018 ●निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● विषय: Add. Group Dependent Deduction में कटौती शुरू करवाने के संबंध में। ● संदर्भ: आपका पत्र दिनांक 07.02.2018

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत आपके संदर्भित पत्र द्वारा Add Group Dependent Deduction Pay manager System में हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान आहरण एवं वितरण अधिकारियों के मार्फत वेतन बिलों की आंतरिक राशि में से कटौती कर एस.बी.आई. खाता संख्या 51020721611 में जमा करवाने का विकल्प उपलब्ध करवाने का अनुरोध किया गया है।

इस संबंध में लेख है कि उक्त सुविधा कोषाधिकारी लॉगिन में उपलब्ध हैं। अतः तदनुसार संबंधित कोषाधिकारी से सम्पर्क कर वांछित कार्यवाही करवाया जाना अपेक्षित है।

● **(मंजुला वर्मा)** निदेशक

शिक्षा विभाग के कार्मिकों के वेतन में हितकारी निधि डिडक्शन जोड़ने के क्रम में।

● राजस्थान सरकार निदेशालय कोष एवं लेखा राजस्थान, जयपुर
● क्रमांक: एफ. 5(थ-75)कोष /IFMS/पे- मैनेजर /9966-10006 दिनांक 19.12.2018 ● कोषाधिकारी समस्त। ● विषय :-शिक्षा विभाग के कार्मिकों के वेतन में हितकारी निधि डिडक्शन जोड़ने के क्रम में।

विषयान्तर्गत लेख है कि शिक्षा विभाग के कार्मिकों के वेतन से हितकारी निधि की डिडक्शन (जो माह दिसम्बर देय माह जनवरी के वेतन से की जानी है) जोड़ने को को-ऑपरेटिव डिडक्शन के रूप में जोड़ने की सुविधा डीडीओ लॉगिन में उपलब्ध है, जिसका पाथ निम्नानुसार है - DDO Login - Deduction Master-Co-Operative deduction

अतः संबंधित डीडीओ अपने स्तर से उक्त डिडक्शन को जोड़े जाने हेतु निर्देशित करें।

●**(अमिता शर्मा)** अतिरिक्त निदेशक (IFMS)

---

2. देवनारायण योजना के तहत अंग्रेजी/विज्ञान/गणित विषयों के कोचिंग हेतु विशेष कोचिंग कैम्प वर्ष 2023-24 के निर्देशों के क्रम में।

● कार्यालय, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक शिविरा/माध्य/छाप्रोप/बी/ दे.यो कोचिंग/2023-24/ दिनांक: 17.11.2023/● जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय- माध्यमिक सवाईमाधोपुर / करोली / धोलपुर / झालावाड़ / अलवर

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि देवनारायण योजनान्तर्गत अंग्रेजी / विज्ञान / गणित विषयों के कोचिंग हेतु विशेष कोचिंग कैम्प वर्ष 2023-24 हेतु माह फरवरी 2024 तक की अवधि में 70 दिवसीय विशेष कोचिंग कैम्पों का संचालन किया जाना है। इस हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश पत्र के साथ संलग्न कर आपके कार्यालय को प्रेषित किए जा रहे हैं एवं आपको निर्देशित किया जाता है कि योजनान्तर्गत विशेष कोचिंग कैम्पों को आयोजन करने हेतु आप अपने अधीनस्थ सम्बन्धित विद्यालयों (संलग्न सूची) को आवश्यक दिशा निर्देश जारी करें।

कोचिंग कैम्प के प्रारंभ करने एवं प्रतिभागी विद्यार्थियों की संख्या की सूचना इस कार्यालय को भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।

संलग्न-विस्तृत दिशा-निर्देश मय प्रपत्र।

●**(अशोक कुमार आसीजा)** R.A.S. अतिरिक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

देवनारायण योजनान्तर्गत विशेष कोचिंग कैम्प
विस्तृत दिशा-निर्देश वर्ष 2023-24

●कार्यालय, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर● क्रमांक शिविरा / माध्य / छाप्रोप / सेल-डी / दे. यो. वि. कोचिंग कैम्प/ 2023-2024/दिनांक 17.11.2023 ●विषय:-देवनारायण योजनान्तर्गत विशेष कोचिंग कैम्प विस्तृत दिशा-निर्देश वर्ष 2023-24

योजना	देवनारायण योजना के तहत अंग्रेजी/विज्ञान/गणित विषयों के कोचिंग हेतु विशेष कैम्प।
उद्देश्य	छात्र / छात्राओं का शैक्षिक उन्नयन करना।
विद्यालय	योजनान्तर्गत 5 जिलों सवाईमाधोपुर, झालावाड़, करौली, अलवर व धौलपुर के 38 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 54 कोचिंग कैम्प संचालित किए जा रहे हैं। चयनित विद्यालयों की सूची पत्र के साथ संलग्न है।
अवधि	1. माह फरवरी 2024 तक 70 दिवस की अवधि में कैम्पों को संचालित किया जाना है। 2. विद्यालय समय से पूर्व एवं पश्चात छात्र / छात्राओं को सुविधा पर अवकाश का भी उपयोग किया जा सकता है।
कक्षा	कक्षा 9 से 10
ट्यूटर	विषय अध्यापक में से ट्यूटर होंगे। इनका चयन अग्रांकित समिति द्वारा किया जावेगा: 1. संयोजक विद्यालय का प्रधानाचार्य (अध्यक्ष) 2. अंग्रेजी / विज्ञान / गणित विषयों के स्थानीय संस्थाप्रधानों / व्याख्याताओं / वरिष्ठ अध्यापकों में से कोई भी एक-एक सदस्य। समिति का सदस्य ट्यूटर का काम नहीं करेगा।
छात्र/छात्रा	समस्त स्थानीय राजकीय विद्यालयों के शिक्षा की दृष्टि से कमजोर छात्र / छात्रा। 1. सभी छात्राओं को प्रथम वरियता। 2. एस.सी/एस.टी/ओ.बी.सी/बी.पी.एल./ परिवार के छात्रों को द्वितीय प्राथमिकता । 3. प्रत्येक कक्षा में न्यूनतम 25 छात्र / छात्रा। 25 से कम विद्यार्थी होने पर कैम्पों का संचालन नहीं किया जा सकेगा। 4. छात्र/छात्राओं का कक्षा 8/9 के प्राप्तांकों के आधार पर वरियता (कम प्राप्तांकों से अधिक प्राप्तांकों की ओर) चयन।
कालांश	1. कक्षा 9 एवं 10 के लिए अंग्रेजी / विज्ञान / गणित का एक-एक कालांश प्रतिदिन । 2. विद्यालय समय से पूर्व एवं पश्चात् प्रतिदिन । 3. 45 मिनट का एक कालांश। 4. एक विषय के अधिकतम 70 कालांश।
मानदेय	1. कक्षा 9 की कोचिंग का एक कालांश प्रति विषय 70 रु. प्रतिदिन 2. कक्षा 10 की कोचिंग का एक कालांश प्रति विषय 70 रु. प्रतिदिन 3. संस्था प्रधान- 30 रु. प्रतिदिन 4. चौकीदार - 10 रु. प्रतिदिन

भुगतान	1. प्रधानाचार्य द्वारा विषयाध्यापकों और छात्र-छात्राओं का उपस्थिति पत्रक एवं विषय अध्यापक द्वारा मानदेय का बिल प्रस्तुत करने पर भुगतान। 2. विषय अध्यापक द्वारा किसी दिन कोचिंग नहीं करने पर मानदेय का देय नहीं।
प्रति कैम्प बजट	ट्यूटर (कक्षा 9) 70/-(दर)x70 (कालांश)x3 (ट्यूटर)=14700 रुपये ट्यूटर (कक्षा 10) 70/-(दर)x70 (कालांश)x3 (ट्यूटर)=14700 रुपये संस्था प्रधान 30/-(दर)x70 (कालांश) =2100 रुपये चौकीदार 10/-(दर)x70 (कालांश) =700 रुपये योग:-32200

जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) मुख्यालय सवाईमाधोपुर/करौली/धौलपुर/झालावाड़/अलवर यह सुनिश्चित करें कि योजनान्तर्गत कोचिंग कैम्पों का कम से कम दो बार सघन निरीक्षण किया जाकर जाँच रिपोर्ट एवं योजना से संबंधित दस्तावेजों (संलग्न-प्रपत्र) को प्रमाणित कर इस कार्यालय को प्रेषित करें। साथ ही जिलों के परिसीमन/पुनर्गठन के कारण चयनित तहसील नए जिले के अन्तर्गत आने पर उस तहसील के विद्यालय के संस्था प्रधान नए गठित जिले के जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय से सम्पर्क कर आयोजित कैम्प की सूचना भिजवाना सुनिश्चित करें।

●**अशोक कुमार आसीजा**, आर.ए.एस. अतिरिक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

देवनारायण योजनान्तर्गत विशेष कोचिंग कैम्प

आवेदन पत्र

1. छात्र / छात्रा का नाम:..
2. पिता का नाम:..
3. वर्तमान राजकीय विद्यालय का नाम:..............................
4. वर्तमान कक्षा (9/10)..
5. लिंग (छात्र/छात्रा)..
6. श्रेणी (एस.सी/एस.टी/ओ.बी.सी./बी.पी.एल).................
7. कक्षा 8/9 के कुल प्राप्तांक..

छात्र/छात्रा के हस्ताक्षर

कक्षाध्यापक द्वारा प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि समस्त विवरण सही है तथा छात्र/छात्रा ने एक ही कैम्प के लिए आवेदन किया है।

हस्ताक्षर कक्षाध्यापक
मय सील

प्रपत्र-1

देवनारायण योजनान्तर्गत विशेष कोचिंग कैम्प में सम्मिलित होने वाले कक्षा 9 के छात्र/छात्राओं की सूची

कैम्प का नाम..............................

क्र.सं.	राजकीय विद्यालय का नाम	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	लिंग	श्रेणी	कक्षा 9 में अर्द्धवार्षिक तक के कुल प्राप्तांक

हस्ताक्षर प्रभारी मय सील

संस्था द्वारा प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि समस्त विवरण सही है तथा छात्र/छात्रा ने एक ही कैम्प के लिए आवेदन किया है।

हस्ताक्षर संस्थाप्रधान मय सील

प्रपत्र-2

देवनारायण योजनान्तर्गत विशेष कोचिंग कैम्प में सम्मिलित होने वाले कक्षा 10 के छात्र/छात्राओं की सूची

कैम्प का नाम..............................

क्र.सं.	राजकीय विद्यालय का नाम	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	लिंग	श्रेणी	कक्षा 9 में अर्द्धवार्षिक तक के कुल प्राप्तांक

हस्ताक्षर प्रभारी मय सील

संस्था द्वारा प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि समस्त विवरण सही है तथा छात्र/छात्रा ने एक ही कैम्प के लिए आवेदन किया है।

हस्ताक्षर संस्था प्रधान मय सील

नोट:-प्रत्येक कैम्प के लिए कक्षावार अलग-अलग प्रपत्र तैयार कर हार्डकॉपी एवं सॉफ्ट कॉपी सूचना सम्बन्धित संयोजक को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करावें।

देवनारायण योजना

कोचिंग कैम्प में भाग लेने का आवेदन पत्र

(राजकीय विद्यालय की कक्षा IX/X में अध्ययनरत छात्र/छात्रा हेतु)

कैम्प का नाम :..

1. छात्र / छात्रा का नाम :..

2. पिता का नाम :..
3. वर्तमान राजकीय विद्यालय का नाम:................................
4. वर्तमान कक्षा (IX/X)..
5. लिंग (छात्र/छात्रा)...
6. श्रेणी (SC/ST/OBC/BPL):
7. कक्षा VIII/IX का प्राप्तांक प्रतिशत..................................

छात्र/छात्रा के हस्ताक्षर

कक्षाध्यापक द्वारा प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि समस्त विवरण सही है तथा छात्र/छात्रा ने एक ही कैम्प के लिए आवेदन किया है।

हस्ताक्षर कक्षाध्यापक
मय सील

प्रपत्र-1

देवनारायण योजना के तहत कोचिंग कैम्प में सम्मिलित होने वाले कक्षा 9 के छात्र/छात्राओं की सूची

कैम्प का नाम...............................

क्र.सं.	राजकीय विद्यालय का नाम	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	लिंग	श्रेणी	कक्षा 8 का प्राप्तांक प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7

हस्ताक्षर प्रभारी मय सील

संस्था प्रधान द्वारा प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि समस्त विवरण सही है तथा छात्र/छात्रा ने एक ही कैम्प के लिए आवेदन किया है।

हस्ताक्षर संस्था प्रधान मय सील

प्रपत्र-2

देवनारायण योजना के तहत कोचिंग कैम्प में सम्मिलित होने वाले कक्षा 10 के छात्र/छात्राओं की सूची

कैम्प का नाम...............................

क्र.सं.	राजकीय विद्यालय का नाम	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	लिंग	श्रेणी	कक्षा 8 का प्राप्तांक प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7

हस्ताक्षर प्रभारी मय सील

संस्था प्रधान द्वारा प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि समस्त विवरण सही है तथा छात्र/छात्रा ने एक ही कैम्प के लिए आवेदन किया है।

हस्ताक्षर संस्था प्रधान मय सील

नोट :- प्रत्येक कैम्प के लिए कक्षावार अलग-अलग प्रपत्र कम्प्यूटर से तैयार कर मय सीडी संबंधित संयोजक को उपलब्ध कराना है।

प्रपत्र-3

देवनारायण योजना के तहत कोचिंग कैम्प के लिए चयनित कक्षा 9 के छात्र/छात्राओं की सूची

कैम्प का नाम...............................

क्र.सं.	राजकीय विद्यालय का नाम	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	लिंग	श्रेणी	कक्षा 8 का प्राप्तांक प्रतिशत	वरीयता क्रमांक
1	2	3	4	5	6	7	8

हस्ताक्षर संयोजक मय सील

प्रपत्र-4

देवनारायण योजना के तहत कोचिंग कैम्प के लिए चयनित कक्षा 10 के छात्र/छात्राओं की सूची

कैम्प का नाम...............................

क्र.सं.	राजकीय विद्यालय का नाम	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	लिंग	श्रेणी	कक्षा 8 का प्राप्तांक प्रतिशत	वरीयता क्रमांक
1	2	3	4	5	6	7	8

हस्ताक्षर संयोजक मय सील

प्रपत्र-5

देवनारायण योजना के तहत कोचिंग कैम्प के लिए चयनित कक्षा 9 के 25 छात्र/छात्राओं की सूची

(कम प्राप्तांक से अधिक की ओर)

कैम्प का नाम...............................

वरीयता क्रमांक	राजकीय विद्यालय का नाम	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	लिंग	श्रेणी	कक्षा 8 का प्राप्तांक प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7

हस्ताक्षर संयोजक मय सील

प्रपत्र–6

देवनारायण योजना के तहत कोचिंग कैम्प के लिए चयनित कक्षा 9 के 25 छात्र/छात्राओं की सूची

(कम प्राप्तांक से अधिक की ओर)

कैम्प का नाम..............................

वरीयता क्रमांक	राजकीय विद्यालय का नाम	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	लिंग	श्रेणी	कक्षा 8 का प्राप्तांक प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7

हस्ताक्षर संयोजक मय सील

कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

देवनारायण योजना के तहत कोचिंग कैम्प के लिए चयनित विद्यालयों की सूची

क्र.स.	विद्यालय का नाम	मुख्यालय
1.	रा.उ.मा.वि. सवाईमाधोपुर	जिला
2.	रा.उ.मा.वि. साहूनगर, सवाईमाधोपुर	जिला
3.	रा.बा.उ.मा.वि. सवाईमाधोपुर	जिला
4.	रा.उ.मा.वि. सवाईमाधोपुर	तहसील
5.	रा.बा.उ.मा.वि., सवाईमाधोपुर	तहसील
6.	रा.बा.उ.मा.वि. मानटाउन सवाईमाधोपुर	तहसील
7.	रा.उ.मा.वि. खंडार (सवाईमाधोपुर)	तहसील
8.	रा.उ.मा.वि. खंडार (सवाईमाधोपुर)	तहसील
9.	रा.बा.उ.मा.वि. खंडार (सवाईमाधोपुर)	तहसील
10.	रा.उ.मा.वि. करौली	जिला
11.	रा.उ.मा.वि. करौली	जिला
12.	रा.बा.उ.प्रा. वि. करौली	जिला
13.	रा.उ.मा.वि. सपोटरा (करौली)	तहसील
14.	रा.उ.मा.वि. सपोटरा (करौली)	तहसील
15.	रा.बा.उ.मा.वि. सपोटरा (करौली)	तहसील
16.	रा.उ.मा.वि. नादौती (करौली)	तहसील
17.	रा.उ.मा.वि., नादौती (करौली)	तहसील
18.	रा.बा.उ.मा.वि. नादौती (करौली)	तहसील
19.	रा.उ.मा.वि. सिटी कोतवाली धौलपुर	जिला
20.	रा.उ.मा.वि. महाराजा धौलपुर	जिला
21.	रा.बा.उ.मा.वि. धौलपुर	जिला
22.	रा.उ.मा.वि., बाड़ी (धौलपुर)	तहसील
23.	रा.उ.मा.वि. बाड़ी (धौलपुर)	तहसील
24.	रा.बा.उ.मा.वि. बाड़ी (धौलपुर)	तहसील
25.	रा.उ.मा.वि. सैपऊ (धौलपुर)	तहसील
26.	रा.उ.मा.वि. सैपऊ (धौलपुर)	तहसील
27.	रा.बा.मा.वि., सैपऊ (पीलपुर)	तहसील
28.	रा.उ.मा.वि. झालावाड़	जिला
29.	रा.उ.मा.वि. झालावाड़	जिला
30.	रा.बा.उ.मा.वि., झालावाड़	जिला
31.	रा.उ.मा.वि. मनोहरथाना (लाल)	तहसील
32.	रा.उ.मा.वि. मनोहरथाना (झालावाड़)	तहसील
33.	रा.बा.उ.मा.वि. मनोहरथाना (झालावाड़)	तहसील
34.	रा.उ.मा.वि. खानपुर (झालावाड़)	तहसील
35.	रा.उ.मा.वि. खानपुर (झालावाड़	तहसील
36.	रा.बा.उ.मा.वि. खानपुर (झालावाड)	तहसील
37.	रा.उ.मा.वि. झालरापाटन (झालावाड)	तहसील
38.	रा.उ.मा.वि. झालरापाटन (झालावाड़)	तहसील
39.	रा.बा.उ.मा.वि. झालरापाटन (झालावाड)	तहसील
40.	रा.उ.मा.वि. नवीन अलवर	जिला
41.	रा.उ.मा.वि. यशवंत अलवर	जिला
42.	रा.उ.मा.वि. एस.एम.डी. अलवर	जिला
43.	रा.उ.मा.वि. राजगढ़ (अलवर)	तहसील
44.	रा.उ.मा.वि. राजगढ़ (अलवर)	तहसील
45.	रा.बा.उ.मा.वि. राजगढ़ (अलवर)	तहसील
46.	रा.उ.मा.वि. उमरैण (अलवर)	तहसील
47.	रा.उ.मा.वि. उमरैण (अलवर)	तहसील
48.	रा.बा.उ.मा.वि. उमरैण (अलवर)	तहसील
49.	रा.उ.मा.वि. बानसूर (अलवर)	तहसील
50.	रा.उ.मा.वि. बानसूर (अलवर)	तहसील
51.	रा.बा.उ.मा.वि. बानसूर (अलवर)	तहसील
52.	रा.उ.मा.वि. थानागाजी (अलवर)	तहसील
53.	रा.उ.मा.वि. थानागाजी (अलवर)	तहसील
54.	रा.बा.उ.मा.वि. थानागाजी (अलवर)	तहसील

शिक्षक राष्ट्र निर्माता

❒ शेरा राम सीमार

शिक्षा शब्द संस्कृत के 'शिक्ष्' धातु में 'अ' प्रत्यय लगने से बना है जिसका अर्थ होता है 'सीखना'। अर्थात शिक्षा सीखने-सिखाने की प्रकिया है।

शिक्षा से ही बालक का सर्वांगीण विकास होता है।

इससे उनकी अंतर्निहित शक्तियां प्रकट होती हैं और उनको उत्तम, योग्य, सुसंस्कृत और श्रेष्ठ नागरिक बना देती है।

शिक्षा की प्रकिया में तीन अहम पहलू हैं- शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यवस्तु।

वह व्यक्ति जो कुछ सिखाता हो 'शिक्षक' और वह जो शिक्षा ग्रहण करता है 'शिक्षार्थी' कहलाता है। शिक्षक अर्थात गुरु जिन्हें भारतीय संस्कृति में ईश्वर से भी उच्च दर्जा प्राप्त है।

गुरु ही होता है जो शिष्य के भीतर अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाकर ज्ञान रूपी प्रकाश से उसका जीवन रोशन कर देता है। उन्हें श्रेष्ठ चरित्रवान, सत्यनिष्ठ, विवेकी, चतुर, बुद्धिमान, कुशल और स्वावलंबी बना देता है। वह उत्तम गुणों से परिपूर्ण आदर्श नागरिक राष्ट्र को सुपुर्द करता है।

वह शिक्षक ही होता है जो न्यायाधीश, डॉक्टर, अभियंता, वैज्ञानिक, प्रबंधक, रक्षक, सैनिक जैसे असँख्य पदों पर अपने शिष्यों को भेजकर राष्ट्र का निर्माण करता है।

शिक्षक की गोद में प्रलय और सृजन दोनों पलते हैं। वह विद्यार्थियों के जीवन को बना या बिगाड़ सकता है।

शिक्षक ही है जिसके कंधों पर राष्ट्र के विकास की जिम्मेदारी सबसे अधिक है।

कोठारी शिक्षा आयोग ने कहा है कि भारत का भविष्य उसकी कक्षाओं में निर्मित हो रहा है।

यह कथन शिक्षक की महता को पूर्णतः चरितार्थ करता है।

शिक्षक होना उतना आसान काम नहीं है जितना शिक्षक बन जाना। प्रशिक्षण प्राप्त कर, निर्धारित परीक्षा उत्तीर्ण कर, मेहनत कर नौकरी तो पा लेते हैं। शिक्षक तो बन जाते हैं लेकिन स्वयं में शिक्षक हमेशा जिंदा रहे उसके लिए निरन्तर परिश्रम की अग्नि में तपना पड़ता है।

उसे जीवनपर्यंत एक छात्र बनकर ज्ञानार्जन करना पड़ता है।

शिक्षक बनने के लिए उसे उच्च योग्यता अर्जित करने के बाद भी दो तरह के प्रशिक्षण से गुजरना पड़ता है।

सेवापूर्व प्रशिक्षण और सेवारत प्रशिक्षण।

सेवापूर्व प्रशिक्षण में उनको बाल विकास और मनोविज्ञान, भाषायी कौशल, शिक्षण तकनीक और विषयी ज्ञान करवाया जाता है।

चूंकि शिक्षण अनवरत चलने वाली प्रकिया है। यह नवाचार और गहन अनुसंधान का क्षेत्र है।

अतः समय-समय पर शिक्षण और मूल्यांकन प्रणाली में बदलाव होते रहते हैं। उन्हीं बदलाव को धरातल पर लागू करने के प्रयोजन से शिक्षकों को सेवारत प्रशिक्षण प्रदान किए जाते हैं। राजस्थान में इसके लिए राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर प्रमुख भूमिका में हैं जो विभिन्न चरणों में अनेक प्रकार के प्रशिक्षण प्रदान करती है।

एक आदर्श और श्रेष्ठ शिक्षक के गुण- शिक्षक का प्रमुख गुण है 'विषय का पूर्ण ज्ञान।' एक योग्य शिक्षक स्वयं एक जिज्ञासु बालक की तरह अपने ज्ञान में उत्तरोत्तर वृद्धि करता रहता है। वह बच्चों से पूर्ण आत्मीयता और प्रेम भाव रखता है ताकि उसे बच्चों के भविष्य की चिंता रहे। यही उसे अपने कर्त्तव्य पथ पर अडिग रखेगी।

उसे ज्ञान देकर वह उनका जीवन सफल बनाने की सोच से सरोबार रहे। वह जो बच्चों को रौचक और आनंददायी शिक्षण प्रदान करवाता हो। वह जटिल से जटिल विषय को भी सहायक सामग्री के प्रयोग से बहुत सरलता से बच्चों में समझ विकसित कर देता है। वह प्रमाणित विषयवस्तु सुलभ करवाता है।

एक शिक्षक हमेशा शिक्षण से प्रेम करता है। उसमें नीरसता और आलस्य के भाव कभी नहीं झलकते। उसकी मूल्यांकन प्रक्रिया पूर्णतः विश्वसनीय, पारदर्शी और लोकतांत्रिक होती है।

वह समस्त बालकों को व्यक्तित्व विकास के समान अवसर उपलब्ध करवाता है।

वह जाति, धर्म, भाषा, लिंग, क्षेत्र के अनुसार बालकों में भेद नहीं करता है। वह सभी बालकों की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और शैक्षणिक प्रगति से भली भांति परिचित रहता है।

वह हमेशा बच्चों को आदरपूर्वक उनके नाम से ही पुकारता है। उन्हें सकारात्मक पुनर्बलन देकर सीखने हेतु अभिप्रेरित करता रहता है। वह अपनी शिक्षण प्रक्रिया को निर्बाध रूप से अनवरत जारी रखता है।

बालकों में विषयी और भाषायी ज्ञान के अतिरिक्त ईमानदारी, विनम्रता, अहिंसा, परोपकार, परिश्रम, सत्यनिष्ठा, दया, मैत्री जैसे श्रेष्ठ चारित्रिक गुणों का विकास करता है।

उसे शिक्षण बोझ नहीं बल्कि सबसे प्रिय और आनंददायी कार्य लगता है। वह अपने बच्चों से भी ज्यादा स्नेह अपने विद्यार्थियों से रखता है। वह छड़ी का भय दिखाकर बालमन में डर पैदा नहीं करता बल्कि उनके साथ स्नेहपूर्वक व्यवहार कर उनके हृदय में गहरी जगह बना लेता है।

वह उन्हें प्रेरणादायी, देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम की कहानियां सुनाकर उनमें देशप्रेम के भाव जगाता है।

वह समय के अनुरूप स्वयं को अद्यतन करता रहता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 के मुख्य बिंदुओं को ध्यान में रखकर अध्यापन करवाने पर जोर देता है।

विद्यालय में अर्जित ज्ञान को बाहरी जीवन में लागू करना, रटत प्रणाली से छात्रों को दूर रखना, उनका गतिविधि आधारित शिक्षण 'करके सीखना' पर बल देना, बच्चों को भयमुक्त अधिगम वातावरण प्रदान करना, देश की अखंडता,एकता और लोकतांत्रिक प्रणाली में अटूट आस्था रखने वाले नागरिक बनाना और उन्हें आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाना।

उन्हें ऐसी शिक्षा देना जिनसे उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सके।

शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 की धारा 24 के अनुपालना में एक शिक्षक समस्त नैतिक और चारित्रिक गुणों से परिपूर्ण रहे। वह पूर्णतः योग्य और प्रशिक्षित हो।

वह स्वयं को एक मनोचिकित्सक के रूप में ढाले ताकि वह बालक के मन को पढ़कर उसमें व्यवहारगत परिवर्तन ला पाए। उनकी समस्या का निदान कर उससे छुटकारा दिला पाए।

वह बालक के साथ खेल गतिविधियों में हिस्सा लेवें। उन्हें मनोरंजन करवाए। उन्हें

गतिविधि स्वयं करने दे, प्रत्यक्ष अनुभव करने दे।

उनकी बात को बड़े ध्यानपूर्वक और धैर्यपूर्वक सुनें। उन्हें जब आवश्यकता हो सम्बल प्रदान करें। उनकी भावनाओं का आदर करें।

आप शिक्षक हैं तो कक्षा में जाने से पूर्व अवलोकन करें स्वयं का। कुछ प्रश्न स्वयं से कीजिए।

क्या आपके चेहरे पर मुस्कुराहट है?

क्या आप में आज पढ़ाए जाने वाले टॉपिक की गहरी समझ है?

क्या आपके पास योजना है आज के शिक्षण की?

क्या आपमें समस्त बच्चों के प्रश्नों को स्वीकार करने का धैर्य है?

क्या पेन और चॉक है आपके पास?

क्या अपनी पुस्तक है आपके पास?

क्या पूर्व अध्ययन करके आये हैं आप?

क्या आपके पास कक्षा में खड़े रहने की पर्याप्त इच्छाशक्ति है?

क्या सभी बच्चों पर पूरी नजर बनाए रखेंगे?

क्या मोबाइल फोन का इस्तेमाल तो नहीं करेंगे आप?

अगर निकल रहे हो कक्षा से तो पूछिए स्वयं से।

क्या आपके हाथ चॉक की धूल से सने हुए हैं?

ग्रीन बोर्ड भरा हुआ है?

बच्चों को लिखने का पर्याप्त समय दिया था?

आपने सभी बच्चों को उचित समय दिया है?

किसी बच्चे को शारीरिक और मानसिक पीड़ा तो नहीं पहुँचाकर आए हो?

सभी बच्चों को सीखने का अवसर दिया है?

जो समझाया है बच्चे उसे कितना समझ पाए हैं?

कल पुनरावृत्ति करेंगे इसकी?

उनको गृहकार्य दिया है कुछ?

कल क्या पढ़ाएंगे बताया है उनको?

सभी बच्चे शिक्षण प्रक्रिया में भागीदार बने?

आपने उनको प्रत्यक्ष अनुभव कराया?

कक्षा का वातावरण भयमुक्त और रोचक था?

शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया?

सभी बच्चों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर अध्यापन करवाया?

इन सारे प्रश्नों के सकारात्मक जवाब होने चाहिए आपके पास। अगर सभी प्रश्नों के जवाब सन्तोषजनक दे पा रहे हैं तो आप यक़ीनन एक बेहतरीन शिक्षक है।

एक आदर्श शिक्षक एक वृक्ष की भांति सख़्त नहीं होता जो आधुनिकता की आंधी को झेल नहीं पाए बल्कि वह नदी किनारे की कोमल घास सा होता है जो स्वयं को उसके अनुरूप ढाल कर सदा हरा भरा रहता है।

उसमें विनम्रता, सहृदयता, शालीनता, कर्त्तव्यपरायणता के भाव निहित रहे। वह परिवर्तन को स्वीकार कर आचरण में वांछित बदलाव करता रहता है।

शिक्षक एक दीपक की भाँति है जो स्वयं जलता रहता है और दूसरों को भी प्रकाशित करता रहता है।

आइए, हम दृढ़ संकल्पित होकर यह प्रण लें कि शिक्षा विभाग के दिशानिर्देश की अक्षरशः पालना सुनिश्चित कर उनके द्वारा प्रतिस्थापित लक्ष्यों को मिलकर प्राप्त करें।

आइए-एक विकसित भारत, समृद्ध भारत, श्रेष्ठ भारत, मजबूत भारत, अटूट भारत और स्वस्थ भारत और शिक्षित भारत का निर्माण करें।

व्याख्याता (अँग्रेजी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जीवाना,
जिला-जालोर (राज.)
मो.: 9772755248

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि

❒ पवन रायकवाल

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर ही मनुष्य का समाजीकरण होता है। बालक परिवार को पहली बार समुदाय के संपर्क में विद्यालय के माध्यम से ही आता है। बालक विद्यालय में अपना शारीरिक, मानसिक व सर्वांगीण विकास करता है। विद्याध्ययन के पश्चात मनुष्य अपने जीवनयापन के लिए किसी भी आर्थिक कार्य को करना पड़ता है, जिससे कि वह जीवन में एक आदर्श रूप में सफलतापूर्वक अपना जीवनयापन कर सकें।

जीवन के पथ पर मनुष्य के अनेक लक्ष्य व उद्देश्य रहते हैं जिनको पूरा करने के लिए अनेक प्रयास व संघर्ष करने पड़ते हैं।

किसी भी कार्य की सफलता उस कार्य को पूर्ण करने के लिए किए गए प्रयास अथवा उद्यम (मेहनत) पर निर्भर करती हैं। उद्यम को सफलता की कुंजी कहा जाता है। उद्यम के बिना मनुष्य को न तो सफलता मिलती है और न ही वह अपने जीवन में आगे बढ़ पाता है। किसी भी नई शुरुआत के लिए मनुष्य को शारीरिक व मानसिक रूप से तैयार होकर अपने लक्ष्य को पाने के लिए लगातार मेहनत की आवश्यकता होती है।

हिंदी में एक कहावत है कि 'मेहनत करने वालों की कभी हार नहीं होती'। मेहनत के माध्यम से ही कोई भी मनुष्य अपने जीवन में सर्वोच्च पद-प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है।

इसी संदर्भ में भारतीय संस्कृति में कहा गया है कि-'उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न च मनौरथे।'

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।'

अर्थात उद्यम (मेहनत) से ही कोई कार्य सिद्ध होता है, केवल मन में इच्छा मात्र करने से सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती ठीक उसी प्रकार जैसे सोते हुए शेर के मुँह में हिरण खुद नहीं चला जाता, अर्थात बिना मेहनत के हम हमारे लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

आज की भौतिकवादी संस्कृति व प्रतियोगिता समय में मनुष्य जब तक तन मन से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दिन- रात मेहनत नहीं करेगा तब तक वह अपना लक्ष्य नहीं प्राप्त कर पाएगा। आज इतिहास भी इस बात का साक्षी है कि जो व्यक्ति अपने जीवन में अधिक परिश्रम करता है वह सब कुछ प्राप्त कर सकता है। परिश्रमी व्यक्ति स्वयं का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण देश व मानव जगत का भला कर सकता है। आज हमारे सामने ऐसे अनेक महापुरुषों के उदाहरण मिलते हैं जिन्होंने अपने संघर्षमय जीवन व विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी अपने दृढ़ संकल्प व इच्छाशक्ति के बल पर अपने अथाह परिश्रम के द्वारा अपने लक्ष्यों को प्राप्त किया व विश्व पटल स्वयं को स्थापित कर मानव समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत किया है...

धीरु भाई अंबानी:– एक साधारण परिवार में जन्म लेने वाले धीरु भाई अंबानी बचपन में गिरनार की पहाड़ियों में तीर्थयात्रियों को पकौड़े बेचकर अपना जीवनयापन करते थे लेकिन मेहनत के बल पर ही आज रिलायंस औद्योगिक समूह की स्थापना कर विश्व के प्रमुख औद्योगिक घरानों में स्थापित हुए हैं। उनका कथन था कि यदि 'अगर आप दृढ़तापूर्वक कार्य करें तो कामयाबी खुद आपके कदम चुमेगी।

बिल गेट्स:– बिल गेट्स अपनी कालेज शिक्षा भी पूर्ण नहीं कर पाए थे लेकिन कुछ अलग करने का जुनून उनके मन मस्तिष्क में था कि कम्प्यूटर के क्षेत्र में उन्होंने अपनी लगन व मेहनत के बल पर ही उन्होंने विश्व प्रसिद्ध 'माइक्रोसॉफ्ट' कंपनी की स्थापना की। आज यह कंपनी विश्व की सर्वश्रेष्ठ कंप्यूटर कंपनियों में से एक है। इनका महत्त्वपूर्ण कथन था कि 'अगर आप गरीब घर में पैदा हुए हैं तो आपकी गलती नहीं है लेकिन अगर आप गरीब ही मर जाते हैं तो निश्चित ही यह आपकी गलती है।'

रतन टाटा–सूरत (गुजरात) में जन्मे टाटा संस के पूर्व अध्यक्ष रतन टाटा आज प्रसिद्ध उद्योगपति हैं जिन्होंने अपने अथक मेहनत से ही 100 से अधिक कम्पनियों की स्थापना की है। उनके जीवन में एक दौर ऐसा भी आया जब वो अपनी टाटा इंडिका कंपनी फोर्ड को बेचने वाले थे लेकिन उन्होंने अपना यह विचार रद्द कर पुनः अपनी कंपनी में अधिक नवीन तकनीकी का प्रयोग कर टाटा मोटर्स को कार निर्माता कंपनी को आज विश्व की अग्रणी कार निर्माता कंपनी के रूप में स्थापित किया है।

भारतीय संस्कृति में कहा गया है कि –

'उद्यौगिनं पुरुषसिंह मुपेति लक्ष्मी:।'

अर्थात मेहनती व साहसी लोगों को ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

आज मनुष्य अपने भविष्य निर्माण के लिए लगातार प्रयत्नशील है, यदि व्यक्ति सही समय पर उचित मार्गदर्शन से मेहनत करें तो जीवन में अच्छा मुकाम हासिल कर सकता है। इसके लिए आवश्यक हैं कि व्यक्ति समाज में व्याप्त नकारात्मकता युक्त लोगों से दूर रहें तथा सदा लक्ष्य को अपनी आँखों में रखकर ही प्रयास करें।

कल्पना चावला:– हरियाणा राज्य में जन्म लेने वाली पहली भारतीय अंतरिक्ष महिला कल्पना चावला जिसने दो बार अंतरिक्ष में भ्रमण किया। उनकी प्रारंभ से ही अंतरिक्ष में रुचि थी। स्कूली शिक्षा पंजाब से पूर्ण कर अमेरिका की टेक्सास विश्वविद्यालय से अपनी कॉलेज शिक्षा पूर्ण की व अपनी मेहनत के कारण ही वह नासा के अंतरिक्ष मिशन के लिए चुनी गई। भारत में कल्पना चावला को 'अंतरिक्ष परी' के नाम से भी जाना जाता है।

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम– तमिलनाडु के एक साधारण परिवार में जन्म लेने वाले भारत के सर्वोच्च अलंकरण भारत रत्न से सम्मानित भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अपने परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण विद्यार्थी जीवन से ही अखबार बांटने का कार्य करके अपने परिवार के भरण पोषण में सहयोग करते थे। इतनी विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी कुछ अलग अनूठा करने का उनका जुनून ही था कि उन्होंने भारतीय सेना को अधिक सुदृढ़ करने के लिए त्रिशूल, नाग, पृथ्वी, ब्रह्मोस, आकाश, जैसी मिसाइलें बनाई। इसी वजह से उन्हें 'मिसाईल मेन' के नाम से भी जाना जाता है।

कलाम साहब ने युवाओं को अपने लक्ष्य के प्रति लगातार प्रयास करने व असफल होने पर भी नहीं होने का संदेश देते हुए कहते थे कि:– 'यदि आप असफल होते हैं तो कभी हार न मानें क्योंकि FAIL का अर्थ होता है (First Attempt In Learning) अर्थात 'सीखने का पहला प्रयास।

उनका एक अन्य विश्व प्रसिद्ध कथन यह भी है कि– 'सपनें वो नहीं जो हम नींद में देखते हैं, सपने तो वो होते हैं जो हमें सोने नहीं देते।'

स्टीव जॉब्स:– एप्पल कंपनी के संस्थापक स्टीव जॉब्स जो कि अपनी कॉलेज शिक्षा भी पूर्ण नहीं कर पाये थे लेकिन मन में कुछ नया करने की रुचि के कारण उन्होंने विपरीत परिस्थितियां होते हुए भी एप्पल कंपनी की स्थापना की, जिसने आज संपूर्ण दुनिया में संचार क्रांति के क्षेत्र में नई क्रांति ला दी।

महाभारतकालीन प्रसंग में भी हम देखते हैं कि एकलव्य शूद्र जाति से होने के कारण जब गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य को धनुर्विद्या सिखाने से मना किया तब एकलव्य ने अपने उद्यम से ही स्वयं को एक सफल धनुर्धर साबित किया। अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण ही व्यक्ति अपने लक्ष्य के प्रति आगे बढ़ता है इसके लिए आवश्यक है कि प्रयास भले ही छोटे–छोटे हों लेकिन लगातार होने चाहिए, अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में समय लगता हैं क्योंकि कहा गया है:–

हैं वही सूरमा इस जग में,
जो अपनी राह बनाता है।
कोई पदचिह्नों पर चलता है।
कोई पदचिह्न बनाता है।

अपने मनोरथ को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करें, समय का उचित उपयोग करें तथा विश्व के ऐसे लोगों को अपना आदर्श बनाएं जिन्होंने विपरीत परिस्थितियाँ होने के बाद भी अपने मनोरथ सिद्ध किए हों।

एक अन्य कहानी मुझे याद आती है जिसमें एक चींटी स्वयं से कई गुना भारी भोजन का टुकड़ा उठाकर ले जाती है, बार- बार बीच में ही वह खाना गिर जाता है लेकिन फिर भी उसकी मेहनत की दृढ़ संकल्पना के कारण ही वह अपनी मंजिल पर पहुँच कर अपने मनोरथ को सिद्ध करती है।

कहा भी गया है:–

होके ना मायूस यों शाम से ढलते रहिये,
जिंदगी भोर है, सूरज से निकलते रहिये,
एक ही ठाव से ठहरेंगे तो थक जायेंगे,
धीरे–धीरे ही सही राह पर चलते रहिए।

अत: हम सभी को मेहनत के महत्त्व को समझना चाहिए तथा मेहनत का मार्ग अपनाते हुए स्वयं की ही नहीं अपितु संपूर्ण समाज, राष्ट्र व मानव जगत को विकास की नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए सदैव मेहनत करते रहना चाहिए।

अंत में यही संदेश है कि लगातार मेहनत के माध्यम से ही मनुष्य अपने मनोरथों को प्राप्त कर सकता है तथा अच्छे प्रयासों के माध्यम से मनुष्य आने वाली पीढ़ियों व समाज के लिए एक आदर्श स्थापित कर सकता है, आज आवश्यकता है कि मनुष्य बड़ी–बड़ी बातें करने की अपेक्षा अपनी कार्यसिद्धि के लिए पूर्ण मनोयोग से प्रयास करे।

प्राध्यापक–भूगोल
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुहागपुरा
जिला–प्रतापगढ़ (राज.)
मो.– 9950255032

शैक्षणिक भ्रमण

जापान यात्रा के अनुभव : बाल वैज्ञानिकों की जुबानी

मेरे जीवन के इस प्रथम शैक्षणिक भ्रमण की यात्रा की शुरुआत बहुत अच्छी रही क्योंकि मेरे साथ मेरे बड़ों का आशीर्वाद एवं शिक्षा दोनों का सामंजस्य था। यह शैक्षणिक भ्रमण अनुभवों एवं नयी शिक्षा के समावेश से भरा-पूरा था। कदम-कदम पर मुझे वहाँ विज्ञान और प्रौद्योगिकी का बहुत ही सुन्दर संसार देखने को मिला। तकनीक के इस संसार में मैंने अनुभव किया कि जीवन में ऊँचाईयों को छूने का एकमात्र माध्यम केवल शिक्षा है। इस यात्रा में चीन, साइप्रस, भारत, तुर्कीस्तान, तजाकिस्तान, उज्बेकिस्तान देशों के योग्य विद्यार्थी शामिल थे। इस दौरान हम सब के बीच सामूहिक चर्चा, मित्रता, परिचय, खेल, शिक्षा, भाषा का आदान-प्रदान हुआ। जापान ने तकनीक को इतना ज्यादा विकसित कर लिया है कि वहाँ पर शायद ही ऐसी कोई चीज या जगह होगी जो साइंस की दृष्टि से वंचित रही हो।

जापान में बच्चों को शुरुआती समय में किताबों की शिक्षा से स्वतंत्र रखा जाता है इसके बजाय उन्हें पाँच या दस साल तक सामाजिक सद्भावना, देशभक्ति, पर्यावरण से मित्रता, स्वच्छता, नैतिक मूल्यों का पालन आदि के बारे में व्यावहारिक रूप से ढाला जाता है। जिससे ये सब चीजें उन्हें किताबों से रटने या किसी से जानने की आवश्यकता नहीं रहती क्योंकि जन्म से ही ये चीजें उनके व्यवहार एवं दिमाग में अपनी स्थाई जगह बना लेती हैं।

हाई स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थी अपने विद्यालय की सफाई स्वयं करते हैं जिससे उन्हें श्रम का महत्त्व मालूम रहता हैं और वे दूसरों के काम का सम्मान करते हैं। जापानी लोग कहीं भी कचरा फेंकते नहीं है। केवल कचरापात्र में ही डालते हैं जिससे वहाँ की सड़कें, होटल, विद्यालय उद्योग आदि सभी जगहें बहुत ही ज्यादा स्वच्छ रहती हैं क्योंकि उन्हें स्वयं वह जगह साफ करनी होती है।

इसी प्रकार की शिक्षा प्रणाली अगर हमारे भारत में होती तो आज भारत का कोना-कोना स्वच्छ रहता तथा कोई स्वच्छता अभियान चलाने की आवश्यकता न रहती। सुव्यवस्थित शिक्षा प्रणाली का हर देश में होना समस्त देशों के कदमों से कदम मिलाकर चलने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

मैंने अपनी इस यात्रा में भारत और जापान की शिक्षा प्रणाली के भेद को अनुभव किया एवं जाना।

मेरी जापान यात्रा के अनुभव कुछ इस प्रकार हैं:-

भारत से जापान पहुँचने का हमारा सफर 5.11.2023 की सुबह जापान के हवाई अड्डे पर पहुँचने पर पूरा हुआ तथा उसके बाद जापान के हवाई अड्डे पर हमारे समूह बी को शकूरा साइंस के दो सदस्य गाइड करने हेतु मिले। इन गाइड ने हमारा मार्गदर्शन किया।

8.50 AM को हमने हवाई अड्डे से प्रस्थान किया तथा वहाँ के शैक्षिक स्थलों के भ्रमण की शुरूआत की।

प्रथम दिवस हमने दो स्थानों का दौरा किया-

1. ईदो फुकोगावा संग्रहालय
2. सेंसो जी मन्दिर

पहले दिन की शुरूआत में हमारे समूह बी के गाइड एवं सुपरवाइजर के मार्गदर्शन में रहकर सुबह 10 बजे ईदो फुकोगावा संग्रहालय में प्रवेश किया। वहाँ के कर्मचारियों द्वारा हमारा सम्मान किया गया एवं इसके साथ ही हमने संग्रहालय के आन्तरिक भागों का दौरा करना आरम्भ किया। हमने संग्रहालय में सर्वप्रथम ‘‘एन स्ट्रीट’’ उर्वरक थोक विक्रेता’’ जिसे जापानी भाषा में ‘‘टाडा था’’ कहा जाता है इसके बारे में हमारे सुपरवाइजर ने बताया कि ये लोग बड़े व्यापारी घराने उर्वरक के सुखे सार्डिन और तेल केक और दीपक के तेल के लिए मछली के तेल का कारोबार करते हैं । इसी के पास में ‘‘सब्जी की दुकान’’ लगी थी, जो जापानी भाषा में **‘‘आओ-गिन’’** नाम से जानी जाती है। इसकी खासियत यह हैं कि 4 मौसमी सब्जियां, अचार, कोन्जाकू जेली और भिड़े बेचते हैं।

चावल की दुकान ‘‘कजुसा था’’ जिसका जापानी नाम हैं। उसमें मूरे चावल को ‘‘कारा-उसु’’ नामक मशीन मोयर में पॉलिश करते व बेचते हैं।

मजुदा या और सागामी-या’’ को नाविक लोगों और सामान को तथाकथित ‘‘चौनी बुन’’ या जंगली सुअर के दांत के आकार के धनुष वाली नाव से ले जाते हैं। दो शिपिंग ऐजेंट पार्टी के लिए हल्के व्यंजन एवं पेय भी पेश करते हैं।

नहर अग्नि प्रहरीदुर्ग (फायर वॉच टॉवर) शहर को आग से बचाता हैं। जब आग लगने का पता चलता है तो लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए शीर्ष पर अलार्म घड़ी बजाई जाती है।

हमारे गाइड के मार्गदर्शन में इस संग्रहालय का भ्रमण करने के पश्चात हमारे समूह को दोपहर के भोजन हेतु ‘‘हिमागी-निहोनवागी’’ नामक स्थान पर ले जाया गया एवं भोजन के पश्चात सेंसो जी के मन्दिर का भ्रमण कराया गया।

सेंसों जी मन्दिर भारतीय संस्कृति के लोगों में भगवान के प्रति आस्था प्रबल हैं इस आस्था को जापान में प्रकट करने का अवसर हमें शैक्षणिक भ्रमण के अन्तर्गत सेंसोजी मंदिर के भ्रमण के दौरान मिला। हमने मन्दिर में जाकर भगवान से प्रार्थना की, आरती ली एवं हमारी मनोकामना के पूरी होने की आशा के साथ हम मंदिर के चारों ओर के वातावरण को देखने लगे। हमारे गाइड ने मधुर वाणी में यह बताया कि अपने दिन की शुरूआत सेंसोजी मन्दिर के दर्शन से करना बहुत शुभ रहता है क्योंकि यह टोक्यो का सबसे पुराना मन्दिर माना जाता है। मन्दिर के दर्शन करने के बाद हम स्मृति चिह्न देखने के लिए ‘‘असाकुसा ना कामिसे शॉपिंग स्ट्रीट से गुजरे एवं एक लोकप्रिय टोक्यो स्नैक’’ निण्यो याक’’ का स्वाद लेना आवश्यक माना जाता है लेकिन समय की कमी के कारण हम बिना स्वाद लिए ही आगे के नजारों का आनन्द लेने लगे। सुबह के समय यहाँ भीड़ अपेक्षाकृत कम रहती है। इस मंदिर का निर्माण बहुत ही सुन्दर तरीके से किया गया है।

द्वितीय दिन 06.11.2023 को 11.10 बजे हम जेएसटी के सम्मेलन कक्ष में पहुँचे। इस

सम्मेलन में जेएसटी टीम सहित, भारत, चीन, उज्बेकिस्तान साइप्रस, तुर्कमेकिस्तान, तजाकिस्तान इन 6 देशों के विद्यार्थियों ने भागीदारी की जो कि हमारी ही भांति जापान भ्रमण हेतु जापान गवर्नमेंट द्वारा आमंत्रित किए गए थे। जेएसटी के इस एक्सचेंज सम्मेलन में जेसराजी के विद्वानों द्वारा अपने विचार प्रकट किए गए। इस सम्मेलन में हमें अन्य देशों से आए विद्यार्थियों से मैत्री बनाने, विचार-विमर्श करने, बातचीत करने एवं आपस में मनोरंजक माहौल बनाने का मौका मिला। सभी के सामने हमने अंग्रेजी में अपना परिचय दिया। कुछ समय विनम्रतापूर्ण समय व्यतीत करने के एवं यह बहुत प्रसिद्धि भी पा चुका हैं जिस कारण यहाँ हर समय भीड़ लगी ही रहती है।

3.00 से 3.30 के बीच के समय हमें टोक्यो स्टेशन के आस-पास का भ्रमण करवाया गया। मैंने अवलोकन किया कि इतना बड़ा स्टेशन होने के बावजूद भी यहाँ का वातावरण शान्तिपूर्ण हैं। भीड़-भाड़, ट्रैफिक प्रदूषण, अव्यवस्था, सड़कों पर गंदगी, नियमों का उल्लंघन ऐसी नकारात्मक चीजों का नामोनिशान भी देखने को नहीं मिलता। ऐसा लगता है मानों पूरे टोक्यों को किसी मशीन द्वारा संचालित किया जा रहा हो। शाम 4.00 बजे हमने अपने आवास स्थान (होटल) मेट्रोपॉलिटन एडमॉन्ट टोक्यों में प्रवेश कर लिया।

हमारा रात्रिभोज ''सुल्तान इइदाबागी'' नामक रेस्टोरेंट में हुआ।

गार्डन में घूमने के शौकीन तो सभी होते हैं और मैं भी। अपने दूसरे दिन की यात्रा में हमने अपना कुछ समय प्रकृति के साथ भी बिताया। साकेइयन गार्डन एक विशाल जापानी उद्यान है, जो याकोहावा के एक सफल व्यवसाई सांकेई हारा द्वारा बनाया गया था। जिन्होंने मीजी युग के अन्त में तारगो युग तक रेशम और कच्चे रेशम के व्यापार के माध्यम से बनाया था। यह उद्यान लगभग 175000 वर्ग मीटर आकार का हैं और टोक्यो खाड़ी के सामने सन्नीटानी नामक घाटी में स्थित है। साकेइयन में दो उद्यान शामिल हैं, बाहरी उद्यान जिसे 1906 में जनता के लिए खोला गया था और आतंरिक उद्यान जिसे साकेई द्वारा निजी स्तर पर इस्तेमाल किया गया।

सैकेन गार्डन शिक्षा और कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट हैं और इसके शीर्ष सौन्दर्य की दृष्टि से मनभावन हैं। इसे 2007 में जापान द्वारा दर्शनीय स्थल नामित किया गया और पूरे उद्यान को एक सांस्कृतिक संपति का नाम दिया गया। इस प्रकार इस गार्डन का इतिहास एवं सौंदर्य बहुत ही उत्कृष्ट हैं। हमने पूरे गार्डन का भ्रमण किया सामूहिक एवं निजी तस्वीरें ली और प्रकृति का आनंद लिया।

तीसरे दिन हमें गाइड द्वारा चुओं यूनिवर्सिटी हाई स्कूल में ले जाया गया। वहाँ पहुँचकर हमें पंक्तिबद्ध चुओं युनिवर्सिटी के एक व्याख्यान कक्ष में ले जाया गया एवं यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों को यूनिवर्सिटी का दौरा कराने हेतु अलग-अलग समूह का गाइड बनाया गया। हमारे विद्यार्थी गाइड ने हमें यथास्थान ले जाकर बिठाया। वहाँ पर हाई स्कूल के प्रोफेसर द्वारा व्याख्यान दिया गया एवं हमें प्रेरित किया गया। मंच संचालक द्वारा हमें कुछ सवाल पूछे गए विद्यार्थियों द्वारा उनके जवाब दिए गए। व्याख्यान सुनने के बाद हमें नियमानुसार यूनिवर्सिटी का भ्रमण करवाया गया। भ्रमण के दौरान हमने कुछ खेल भी देखे, खेले और सामूहिक रूप से कुछ विषयों पर चर्चा की।

चतुर्थ दिवस हमें दोपहर का भोजन करने के पश्चात चिबा यूनिवर्सिटी के भ्रमण हेतु ले जाया गया। हम सभी बस द्वारा चिबा यूनिवर्सिटी पहुँचे। हमारे पहुँचने पर हमारा स्वागत एक भाषण द्वारा किया गया। मिचि को ताकाणानी आज के कार्यक्रम के उपाध्यक्ष रहे एवं स्वास्थ्य और क्षेत्र, विज्ञान केन्द्र के निदेशक ने एक अच्छे वीडियो के जरिए चिबा यूनिवर्सिटी से परिचित करवाया। असिस्टेंट द्वारा ''प्लांट फैक्टरी'' के बारे में जानकारी दी गई सम्मेलन में तीन अन्तर्राष्ट्रीय छात्रों के साथ हमारी गोलमेज चर्चा हुई तथा अन्य देशों से आए छात्रों एवं हमारे समूह को मिश्रित कर तीन नए समूह बनाए गए जिसमें से मैं ग्रुप ए में शामिल थी। मुन्यानोट मैत्री, पीएचडी छात्र, ग्रेजुएट स्कूल ऑफ हार्टिकल्चर के विशेषता प्राप्त हमारे ग्रुप ए के गाइड अन्तर्राष्ट्रीय छात्र ने हमें प्लांट फैक्ट्री का दौरा करवाया एवं विभिन्न पौधों के रखरखाव, जलवायु एवं अनुकूल परिवेश के बारे में जानकारी दी। हम पूरी फैक्ट्री का भ्रमण करने के पश्चात सायंकाल निकल गए। रात्रिभोज करने के बाद हम अपने आवास स्थान मेट्रोपॉलिटन होटल में वापस चले गए।

इस प्रकार के दैनिक सफर में हम रास्ते में प्रसिद्ध टोक्यों टॉवर को भी निहारा करते थे। जो रात के समय बहुत सुन्दर दिखता था।

पाँचवे दिवस के भ्रमण स्थलों में सर्वप्रथम हमने साइंस स्कवायर त्सुकुबा का विजिट किया जहाँ तकनीकी का विकास बहुत ही उच्च स्तर पर था। गाइड ने हमें समझाते हुए कहा कि आधुनिक समाज का समर्थन करने वाले विज्ञान और प्रौद्योगिकी दुनिया के ''आश्चर्य'' के स्पष्टीकरण के लिए शोधकर्ताओं की खोज के परिणाम यहाँ मौजूद हैं।

गाइड ने यह भी बताया कि राष्ट्रीय उन्नत औद्योगिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान को अप्रेल 2001 में पूर्व औद्योगिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी एजेंसी पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और उद्योग मंत्रालय के 15 अनुसंधान संस्थानों के एकीकरण पर पुनर्गठित और स्थापित किया गया था।

''औद्योगिक प्रौद्योगिकी का एक शोरूम हैं जहाँ एआईएसटी के शोध परिणाम देखे जा सकते हैं। शोरूम का दौरा करने के साथ हमें कई मशीनरियों के उपयोग, निर्माण एवं महत्त्व के बारे में जानकारियां दी गई। हमें पारो (एक रोबोट) ट्रॉनिक्स, कार्थन नैनोट्यूब, थिएटर कक्ष, मीथेन हाइड्रेट, न्यूरोकम्यूनिकेटर, फैब्रिक स्पीकर आदि के बारे में साक्षात्कार एवं जानकारियाँ दी गई।

शोरूम में निश्चित समयावधि में भ्रमण करने के पश्चात हम वहाँ से अपने समूह के सभी साथियों को साथ लेकर बाहर आ गए।

हम अपने गाइड के मार्गदर्शन में भूवैज्ञानिक संग्रहालय पहुँचे। संग्रहालय में पहुँचने पर हमें एक सामूहिक चर्चा रूम में ले जाया गया। जिसमें हमें भूवैज्ञानिक संग्रहालय के बारे में एक वीडियो के माध्यम से जानकारी दी गई। सामूहिक

रूप से जानकारी प्राप्त करने के बाद हम संग्रहालय का भ्रमण करने लगे एवं विभिन्न भूवैज्ञानिक चीजों को देखने लगे हमने देखा की वहाँ अलग-अलग चट्टानों के विभिन्न प्रकार के पत्थर सुरक्षित रखे गए थे एवं पृथ्वी के प्लेटों एवं चट्टानों के खिसकने का एक मॉडल का भी साक्षात्कार करवाया गया। हमने सभी चीजों एवं दृश्यों को बहुत ध्यानपूर्वक देखा एवं चर्चाएं की। जिससे हमारी जानकारी एवं ज्ञान में वृद्धि हुई। संग्रहालय की दुकान में भूवैज्ञानिक सर्वेक्षणों के परिणामों को कपड़े के तौलिये, मिनी तौलिये, नोटबुक और मास्किंग टैप जैसे मूल सामान में बदलकर बेचे जाते हैं। निश्चित समयानुसार हम जल्द ही फ्री होकर वहाँ से लंच के लिए चले गए एवं सभी ने साथ बैठकर खाना खाया एवं मंनोरंजनात्मक बातें की। जिसे हमारे दिन भर की यात्रा बहुत सुखद, मनोरंजक एवं स्मरणीय बनी।

दोपहर का भोजन करने के पश्चात हमें JAXA का विजिट करने हेतु ले जाया गया। वहाँ पहुँचने पर पंक्तिबद्ध लाइन बनाकर हमारी पासपोर्ट चेकिंग एवं हाथों में एक JAXA एजेंसी का बेल्ट वहाँ पहनाया गया। फिर हमें एक कमरे में ले जाकर स्क्रीन पर JAXA की उपलब्धियों एवं लॉन्च किए गए रॉकेटों के बारे में दिखाया गया। अपनी आंखों में अन्तरिक्ष के उन दृश्यों को संजोकर हम JAXA का भ्रमण करने लगे।

हमारे विजिट का अन्तिम दिन जिसे सभी बहुत खुशी के साथ गुजारना चाहते थे। हमेशा की तरह ही सुबह नियमानुसार अपने निजी काम खत्म करके हम ''टोक्यो विश्वविद्यालय'' के लिए होटल छोड़कर रवाना हो गए। हम टोक्यो विश्वविद्यालय पहुँचे, अंदर जाते समय आस-पास के परिवेश को निहारा एवं अन्दर जाकर निर्देशानुसार अपने समूह के साथ हो गए। हमने टोक्यो विश्वविद्यालय का दौरा किया एवं वहाँ के विद्यार्थियों से भी मिले एवं मनोरंजन के साथ उनके व्यवहार को भी जाना।

लगभग 1 बजे हमने लंच किया तथा बाद में हम मेराइकन सी का भ्रमण करने के लिए चल दिए।

हमारे गाइड के बताए अनुसार हम नियमों का अनुसरण कर रहे थे तथा भोजन के पश्चात हमने मिराकन सी नामक संग्रहालय का भ्रमण किया जिसमें कुछ समय हमने संग्रहालय के बाहर विचरण किया। कुछ देर बाद हम संग्रहालय के अन्दर गए वहाँ पर बहुत अजीब प्रकार के खेल देखें, मशीनरी देखी एवं एक महिला रॉबोट देखा जो उस समय शान्त बैठी थी। वहीं पर हमने एक बहुत बड़ा गोल पिण्ड लटकता हुआ देखा जो बहुत बड़े क्षेत्र के आवरण को घेरे हुए था तथा लगातार पृथ्वी की बदलती हुई संचरनाओं को दिखा रहा था। उसे देखने पर लगा मानो वास्तव में हमारी पृथ्वी हमारे सामने हैं। उसके पश्चात हमने चारों ओर का भ्रमण किया। 3 बजे हम मिराइकन सी का भ्रमण करके JST के सम्मेलन में शामिल होने चले गए।

''JST में आयोजित सम्मेलन जो हमारी यात्रा का समापन समारोह था, में 4.00 बजे पहुँचे। भारत के साथ ही अन्य देशों से आए हुए विद्यार्थी भी वहाँ समय पर पहुँचे एवं सभी यथास्थान बैठे गए। हमें हमारी यात्रा के बारे में JST के सदस्यों द्वारा व्याख्यान दिए गए एवं हमारी इस जापान यात्रा एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी। अन्तिम कुछ क्षणों में सभी देशों की सांस्कृतिक प्रतिभा दिखाने हेतु सांस्कृतिक समारोह का आयोजन किया गया जिसमें सभी देशों के विद्यार्थियों ने अपने देश या क्षेत्र की प्रचलित या प्रसिद्ध वेशभूषा पहनकर नाच-गाना किया, मित्रवत व्यवहार बन जाने से सभी देशों के विद्यार्थियों ने एक दूसरे को स्मरणीय वस्तुएं दी तथा इस प्रकार हमारे इस शैक्षणिक भ्रमण का सुखद समापन हुआ।

11.11.2023 को सुबह जल्दी ही हम सभी बस द्वारा एयरपोर्ट पहुँचे तथा अपने नए विदेशी मित्रों को अलविदा कहते हुए सुबह 11.25 पर जापान से इण्डिया आने वाली फ्लाइट से भारत के इन्दिरा गाँधी नेशनल हवाई अड्डे पर पहुँचे। वहाँ से सुपरवाइजर द्वारा हमें हमारे परिवार जनों को सौंप दिया गया तथा मैं 12.11.2023 की सुबह 8.30 पर अपने घर पहुँची।

–आफरीन,

श्री नेहरू मॉडल सैकेण्डरी स्कूल
हनुमानगढ़ टाउन, हनुमानगढ़

मैं ममता चौधरी, छात्रा पाटनी पब्लिक स्कूल, निंबाहेड़ा, मेरी हाल की जापान यात्रा में, मुझे इस रोमांचक देश की समृद्ध सांस्कृतिक और जीवंत वातावरण में खो जाने का अवसर मिला। मैं पहले तो जापान विज्ञान और प्रौद्योगिकी का धन्यवाद करना चाहूंगी, इस आश्चर्यजनक अवसर के लिए, जो हम छात्रों को हमारे देशों का प्रतिष्ठान अंतरराष्ट्रीय मंच पर दिखाने का मौका देता है, दोस्त बनाने का अवसर प्रदान करता है, और हमारी सीखने की कक्षा को आकार देता है। मित्सुबिशी मिनाटोराई औद्योगिक संग्रहालय में औद्योगिक प्रक्रियाओं और स्वच्छ और हरित विश्व के लिए ऊर्जा उत्पादन की गहराईयों की खोज हो या असाकुसा, सेंसोजी मंदिरों और सांकेन बाग में जापानी संस्कृति की पारंपरिक जड़ों को समाहित करना हो, हर दिन नई सीखों और नए उत्साह की एक नई टोकरी थी। हमने विभिन्न देशों के छात्रों की सांस्कृतिक और परंपराओं को अपनाया, उनके साथ जड़ें बनाई और उनके साथ दोस्ती की, जो जीवन भर तक रहेगी। जापानी छात्रों के चुओ, टोक्यो और चिबा विश्वविद्यालयों के जीवन की एक दिन की जीवन और उच्च विद्यालय की आधिकारिकता में हमारे लिए सच्चा आनंद था, उनके साथ बातचीत करना, उनके शिक्षा और सीखने के तरीकों को जानना और उनके साथ पूरे क्षणों का समय बिताना फिर कुछ ऐसा है जिसे मैं हमेशा के लिए याद करूँगा। जापान के दूतावास में भारत के प्रतिनिधियों से मिलकर 'भारत के दूत' कहा जाना हमनें भारतीय राष्ट्रभाव को सामने लाने में मदद की, हम सभी को यह अहसास हो रहा था कि हम भले ही अलग-अलग राज्यों और शहरों से भी क्यों न हों, हम सभी भारतीय हैं। अंत में, विज्ञान और भूगर्भ अध्ययन के लिए विज्ञान वर्ग और भूगर्भ संग्रहालय, भविष्य के विज्ञान और दिनोसॉर्स और चट्टानों से पृथ्वी के सुंदर रहस्यों की खोज करना बहुत दिलचस्प था, और बात करते हैं इस दुनियां के बाहर, जाक्सा त्सुकुबा स्पेस सेंटर और मिराइकन ने इस यात्रा को एक्सपेडीशन्स और अनुभवों, और दोस्तियों और सीखों, और सहायता के साथ समाप्त किया।

संक्षेप में, मेरी जापान यात्रा एक ऐसा अवसर था जिसने मुझे इसकी संस्कृति, भोजन और लोगों के प्रति गहरी प्रशंसा के साथ जोड़ दिया। मेरे पास इस अद्वितीय देश को अन्वेषित करने और साकुरा विज्ञान क्लब के सदस्य के रूप में मेरा अन्वेषण जारी रखने का अद्वितीय अवसर होने पर अत्यंत भाग्य है!!

–ममता चौधरी

पाटनी पब्लिक स्कूल निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़

मैं मेहूल सिंह, डिफेन्स पब्लिक स्कूल झुंझुनूं का छात्र इंस्पायर अवॉर्ड के तहत जापान दौरे के लिए चयनित हुआ। जापान में मुझे जापान विज्ञान तथा तकनीक विभाग द्वारा अंतराष्ट्रीय स्तर का प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। जापान में मैंने वहां की तकनीक तथा विज्ञान को समझा बहुत से नए नए आधुनिक अविष्कार देखें तथा वे किस प्रकार विकसित किए जाते हैं उन्हें देखा तथा सीखा। जापान में मैंने बहुत से प्रसिद्ध म्यूज़ियम का भ्रमण किया तथा मुझे जापान के स्पेस सेंटर जानें का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने वहां देखा की अंतरिक्ष में जानें वाले लोगों का रहन सहन कैसे होता है और वे किस प्रकार अंतरिक्ष में अपना गुज़ारा करते हैं। मैंने ने जापान की प्रसिद्ध टोक्यो यूनिवर्सिटी, चिभा यूनिवर्सिटी तथा चुहु यूनिवर्सिटी का भ्रमण किया जिससे मुझे बहुत से बहुमूल्य विचार सीखने को मिले। जापान में यह कार्यक्रम जापान विज्ञान तथा तकनीक विभाग द्वारा संचालित था।

–मेहूल सिंह,

डिफेन्स पब्लिक स्कूल झुंझुनू

मैं मनीषा झालावाड़ जिले के डग पंचायत समिति के एक छोटे से गांव 'हसामदी' की निवासी हूँ और वर्तमान में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रोझाना में कक्षा 10 की छात्रा हूँ। दिल्ली एयरपोर्ट से लगभग 7 घंटे का सफर करने के पश्चात हमने जापान की धरती पर कदम रखा। पहली बार हवाई सफर करना मेरे लिए एक अपूर्व अनुभव था। जापान पहुंचने के तुरंत बाद हम सभी बच्चों को बस द्वारा 'कमीनरीमो गेट' ले जाया गया। यह जापान का अति विशाल और प्रसिद्ध द्वार था और विभिन्न प्रकार की लालटेन और मूर्तियां यहां का प्रमुख आकर्षण थी। वहां से हमें टोक्यो के प्रसिद्ध मंदिर ले जाया गया जो कि 'सेंसो मंदिर' के नाम से जाना जाता है । यह मंदिर अति प्राचीन बौद्ध मंदिर था जहां हमें भारतीय संस्कृति और परंपरा की भी अनूठी झलक देखने को मिली। फिर हमें 'फुकागाव ईदो' नामक संग्रहालय में ले जाया गया जो की ऐतिहासिक महत्व रखता था और जहां विभिन्न प्रकार के हथियारों का संग्रह मौजूद था। जापान पहुंचकर हमें लग रहा था जैसे कि हम किसी नई रोमांचकारी दुनियां में प्रवेश कर गए हों। इस प्रकार जापान प्रवास का प्रथम दिन ही हमारे लिए काफी रोचक और मस्ती भरा रहा। चूंकि सब थके हुए थे अतः रात्रि भोजन पश्चात अपने-अपने कमरे में सो गए। जापान भ्रमण के दूसरे दिन हमें 'मित्सुबिशी म्यूजियम' ले जाया गया ऐसा माना जाता है कि इस म्यूजियम की स्थापना 1994 में 'मित्सुबिशी हेवी इंडस्टरीज लिमिटेड' द्वारा की गई थी। यह बहुत बड़ा विज्ञान अनुसंधान केंद्र है जहां कई युवा विज्ञान तकनीक द्वारा अपने सपनों को साकार करते हैं। वहां पर हमने कई नवीनतम विकास तकनीक से बने हुए विमान के मॉडल रखे हुए देखे। सचमुच यह सब देखना बहुत ही रोमांचकारी अनुभव रहा। फिर हमें जापान के एक प्रसिद्ध उद्यान ले जाया गया जो कि 'सैंकिन गार्डन' के नाम से जाना जाता है और यह बहुत बड़े भूभाग पर फैला हुआ था। इसमें अनेक ऐतिहासिक इमारतें है और यह अपनी मौसमी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है कि यह उद्यान पहले एक रेशम व्यापारी का आवास स्थल था जो कि बाद में आम जनता के लिए खोल दिया गया। तीसरे दिन हमें जापान के एक ऐसे हाईटिक स्कूल में ले जाया गया जहां का पाठ्यक्रम बिल्कुल अलग प्रकार का था। यहां पर प्रत्येक छात्र को अपने भविष्य को मद्देनजर रखते हुए लगभग 100 पुस्तकों का अध्ययन करना आवश्यक था। यहां पर हमने कई प्रकार के इंडोर खेल खेले जो कि भारतीय खेलों से बिल्कुल अलग थे। हमने वहां जापानी नृत्य का भी आनंद लिया। इसके अलावा हमें वहां एक प्रसिद्ध जापानी रिसर्चर सर फुजीशिमा से मिलने और उनके विचारों से लाभान्वित होने का अवसर भी मिला। हमने वहीं पर लंच किया जो कि बहुत अलग प्रकार का था जापान भ्रमण के चौथे दिन हमें 'चिबा यूनिवर्सिटी' ले जाया गया जो कि विभिन्न प्रकार की वनस्पति और पेड़ पौधों के लिए विख्यात है। हमने वहां विभिन्न पेड़ पौधों के बारे में जानकारी ली। उसके बाद हमें 'सुकसा' नामक शहर में ले जाया गया जो कि जापान के एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध है।

इस शहर में हमें पारंपरिक और आधुनिक संस्कृति का अनूठा मिश्रण देखने को मिला। हमने रुचि पूर्वक इस शहर के विभिन्न स्थलों का आनंद लिया। पांचवें दिन हमको 'जाक्सा एयरोस्पेस यूनिवर्सिटी' में ले जाया गया जहां से अनेक जापानी उपग्रह लांच किए जाते हैं। हम सभी के लिए यह एक अभूतपूर्व अनुभव था। यहां अंतरिक्ष संबंधी जानकारी जुटाई जाती है तथा विभिन्न प्रकार के अनुसंधान किए जाते हैं। जापान भ्रमण के यह पांच दिन पलक झपकते ही निकल चुके थे। जापान की सभी चीजें इतनी सुंदर और अद्भुत थी कि वहां से लौटने का मन ही नहीं हो रहा था। अगले दिन हमें टोक्यो विश्वविद्यालय ले जाया गया जहां पर लगभग 30000 छात्र छात्राएं अध्ययन करते हैं। यहां पर हम सभी ने अपने-अपने देश की पारंपरिक वेशभूषा धारण कर नृत्य प्रस्तुत किया और अपने देश की संस्कृति को जीवंत किया। हमारे जापान भ्रमण का अंतिम दिन काफी मनोरंजक रहा हम सभी ने मिलकर बहुत आनंद लिया। इन 6 दिनों के दौरान हमने जापान की सभ्यता और संस्कृति को काफी हद तक जाना और समझा। हम वहां के ऐतिहासिक महत्व से परिचित हुए और वहां की शिक्षा प्रणाली की जानकारी प्राप्त हुई। वहां पर कई जापानी दोस्तों से जान पहचान भी हुई। सुबह ही हमारी वापसी की फ्लाइट थी इसलिए हम सभी अपनी अपनी पैकिंग में जुट गए। और अगले दिन तय कार्यक्रम अनुसार हम ने सुबह 11:00 बजे जापान से विदा ली।जापान प्रवास के दौरान हम सबको जापान की सभ्यता संस्कृति के बारे में जानने का अवसर मिला वहां के जीवन जीने की विधाएं और वहां के खान-पान आदि के बारे में जानकारी मिली। और मैं जापान के खट्टे मीठे अनुभवों को अपने हृदय में संजोए अपने गांव वापस आ गई जहां गांव वासियों द्वारा मेरा भव्य स्वागत किया गया।

–मनीषा

राउमावि. रोझाना, झालावाड़

शिक्षक

❒ **नीलम धनवानी**

जब मैंने अपनी ग्रेजुएशन पूरी की थी तो मैं एक शिक्षिका बिल्कुल भी नहीं बनना चाहती थी किंतु मेरे भाई का बहुत मन था कि मैं बी.एड. करूं और शिक्षिका बनूं । इस तरह से B.Ed करने के साथ शिक्षिका के रूप में मेरा एक सफर शुरू होता है। प्रारंभ में मैंने एक सीबीएसई स्कूल ज्वाइन किया था जहाँ मैंने कक्षा 1 से 8 तक ड्राइंग पढ़ाना प्रारंभ किया जब मैंने ड्राइंग पढ़ाना प्रारंभ किया तो मैने देखा कि बच्चे कितने क्रिएटिव होते हैं। बच्चों की कल्पना शक्ति इतनी ऊँची होती है कि जहाँ तक हम पहुँच भी नहीं पाते हैं इस तरह से मेरा बच्चों के साथ जुड़ाव गहरा होता गया साथ ही मुझे शिक्षण कार्य में रुचि आने लगी अब तक मैं सिर्फ ड्राइंग पढ़ाया करती थी 6 महीने बाद मुझे नर्सरी कक्षा पढ़ाने का मौका मिला जहाँ मैंने पाया कि 3+ उम्र के जो बच्चे होते हैं। वह बिल्कुल ही स्वच्छ मन के होते हैं बिल्कुल पवित्र उनका मन होता है और वह अपनी शिक्षक शिक्षिकाओं को अत्यधिक प्रेम करते हैं वह जितना विश्वास अपने माता-पिता पर करते हैं उतना ही विश्वास अपने शिक्षकों पर भी करते हैं। इस बात ने मुझे बच्चों के साथ जुड़ने के लिए और अधिक प्रेरित किया और मुझे शिक्षिका होने पर गर्व महसूस कराया। धीरे-धीरे समझ भी बढ़ती गई अनुभव भी बढ़ता गया। हम जो आक्षेप कई बार सामने वालों पर लगाते हैं, समाज पर लगाते हैं या देश की सरकार पर लगाते हैं तो अपने अनुभव से मैंने पाया कि एक शिक्षक के रूप में यह जिम्मेदारी सिर्फ सरकार की ही नहीं है बल्कि हमारी भी है क्योंकि हम वह कार्मिक हैं जो देश की नींव को बहुत ही मजबूत कर सकते हैं। मैंने अनुभव किया है कि अक्सर व्यक्ति समाज में कमियाँ खोजता रहता है हमारी सरकार में कमियाँ खोजता रहता है या विद्यालय स्तर पर प्रबंधन में कमियां खोजता रहता है लेकिन अनुभव यह कहता है कि यह जो सभी व्यवस्थाएं हैं उनमें एक भूमिका हमारी भी है यदि हम अपनी भूमिका को अच्छे से निभाते हैं तो हम एक अच्छे समाज के साथ देश को उन्नति की ओर ले जा सकते हैं। हम वह परिवर्तन ला सकते हैं जिसकी हम कल्पना किया करते हैं। शिक्षक का एक बहुत ही बड़ा गुण होता है धैर्य। यदि एक शिक्षक धैर्य के साथ अपना कार्य करता है तो वह अपने बालकों के जरिए एक धैर्यवान समाज संवेदनशील समाज एवं सबको सामूहिक समानता देने वाले समाज का भी निर्माण करता है।

एक बार की बात है जब मैं सरकारी विद्यालय में कक्षा 8 में अध्यापन करा रही थी तो कहीं से कर्त्तव्य पूर्ण करने की बात निकली तब अनायास ही बच्चों के सामने मेरे मुंह से यह बात निकल गई कि बालकों यदि हर व्यक्ति अपना कर्म शत प्रतिशत ढंग से करता है तो वह भी हमारे देश के राष्ट्रपति के समान है या देश की सीमाओं पर सुसज्जित उन सैनिकों के समान है जो कि देश की अपनी जान पर खेलकर रक्षा करते हैं। इस बात से मुझे खुद भी बहुत प्रेरणा मिली जाने कहाँ से कैसे यह बात मेरे मन में उठी ? तब मैं बालकों को समझाने लगी कि बच्चों यह जो सभी व्यवस्थाएं की गई हैं। वह किसलिए की गई हैं ताकि व्यक्ति अपनी जिंदगी सहूलियत के साथ जी सके। अपने कर्त्तव्य बिना किसी डर के पूर्ण कर सके। जैसे अभी इस उम्र में आप सभी विद्यार्थी हैं और आपका कर्त्तव्य है कि आप निश्चल भाव से अपने अध्ययन कार्य को करें। कौशलों को सीखें एवं जीवन को उन्नत बनाने की ओर बढ़ें। यदि आप यह कार्य पूर्ण निष्ठा से करते हैं तो आप भी देश में उतना ही सहयोग कर रहे हैं जितना कोई उच्च पद पर आसीन करते हैं।

मैंने 1 अक्टूबर, 2018 को अध्यापक पद सरकारी विद्यालय में कदम रखा। मैं कक्षा 6 से 8 में अंग्रेजी विषयाध्यापक हूँ। जब विद्यालय शिक्षण शुरू किया तो मैंने पाया कि मेरे विद्यार्थी मेरे द्वारा बोली गई अंग्रेजी समझ नहीं पा रहे और जब उनकी नोटबुक देखी तो पाया कि अधिकांश विद्यार्थी English Alphabet चार लाइन की नोटबुक में अच्छे से लिख नहीं पाते हैं। तब मुझे समझ आया कि ऐसा तभी होता है जब विद्यार्थी को कोई विषय कठिन लगता है या समझ से परे होता है। तब मैंने विद्यार्थियों के LSRW (Listening-speaking-Reading Writing) skill पर काम प्रारंभ किया। जिसमें कक्षा में rhymes recitation प्रतिदिन करवाया। छोटे-छोटे वाक्य अंग्रेजी में बोलना प्रारंभ किया। प्रतिदिन प्रार्थना सभा के समय विद्यार्थियों की नोटबुक इकट्ठी करके लेख सुधारने के लिए कार्य दिया और मेरे पीरियड में कक्षा-कक्ष में जाकर 10 मिनट सामने बैठा कर सुलेख कार्य करवाया। प्रधानाध्यापक महोदय से निवेदन कर अंतिम पीरियड (40 मिनट) कक्षा 4 से 8 तक के विद्यार्थियों को English Phonetics के माध्यम से English Alphabet का नाम व उसकी ध्वनि सिखाई, उसके बाद two letters cluster, CVC (consonant vowel consonant) word blends पढ़ना एवं लिखना सिखाया, साथ ही नियमित तौर पर डिक्टेशन ली। इसी के साथ साथ छोटे-छोटे प्रकरण आसान गतिविधियों के माध्यम से सिखाने का प्रयास किया और कक्षा को print rich बनाया। अब 6 महीनों में काफी सुधार हो चुका था। विद्यार्थी अंग्रेजी की किताब पढ़कर समझने लगे थे और इस प्रकार धीरे-धीरे कक्षाओं में सामान्य गति से अध्यापन होने लगा की COVID-19 के प्रसार के कारण लॉक डाउन लग जाने की वजह से यह गति अचानक थम गई। तब घर बैठे-बैठे यह सोच कर कि मेरे राज्य के विद्यार्थियों को Phonetic Sounds सिखाने का अवसर मिला जिसके लिए एक youtube channel बनाया और उस पर Phonetics basic से प्रारंभ किए हालांकि बहुत बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने नहीं देखा किंतु RSCERT Udaipur के द्वारा शिक्षा दर्शन शैक्षिक चैनल के लिए विद्यार्थियों के अध्ययन को सुचारु रखने के लिए video content बनाने का अवसर प्राप्त हुआ और यहीं से शिक्षा विभाग में मेरा डिजिटल शिक्षण में पहला कदम बढ़ा। इसके बाद लंबे समय बाद offline शिक्षण पुनः प्रारंभ हुआ और शिक्षा निदेशालय द्वारा कोरोना काल में आए learning gap को दूर करने के लिए RKSMBK (राजस्थान में शिक्षा के बढ़ते कदम) कार्यक्रम प्रारंभ किया। जिसके लिए विभाग द्वारा एक RKSMBK app बनाया गया। जिसके लिए राज्य के 30 डिजिटल दक्ष शिक्षकों में मेरा भी चयन विभाग द्वारा किया गया जिसमें हम सभी शिक्षकों ने अपने विद्यालयों में संचालित वर्कबुक की दक्षताओं को गतिविधि के

माध्यम से आसान बना कर पढ़ाने की वीडियो बनाएं तथा अपना योगदान दिया। RSCERT के प्रभाग–4 द्वारा CWSN विद्यार्थियों के लिए कक्षा 1 से 5 के लिए दीक्षा प्लेटफॉर्म के लिए ऑडियो बुक निर्माण में एवं 'हमारा राजस्थान' कक्षा 6 से 8 के लिए ई कंटेंट निर्माण में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। NCERT द्वारा Experiencial learning के लिए आयोजित एक दिवसीय सम्मेलन में भाग लेने हेतु अंग्रेजी भाषा शिक्षण के संदर्भ व्यक्ति के रूप मैं चयनित कर विभाग ने मेरे कार्य की सराहना की। कई शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल में कार्य करने के साथ–साथ ही कक्षा– कक्ष शिक्षण के वीडियो विभाग के लिए बनाने में भूमिका अदा करने का अवसर मिला। वर्तमान सत्र में रोचक अंदाज में शिक्षण करवाने हेतु शिक्षा विभाग द्वारा राजस्थान के शिक्षक सितारे हेतु चयन किया गया साथ ही RKSMBK के संचालन में छोटे से योगदान हेतु Remidiation प्रभारी of the Day से विभाग के फेसबुक पेज पर सराहना की गयी। जिला प्रशासन सवाई माधोपुर माननीय जिला कलेक्टर महोदय द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर और विभाग के लिए वीडियो कंटेंट बनाने के लिए सम्मानित किया गया।

NCERT के द्वारा प्रत्येक राज्य में 'विद्या अमृत महोत्सव' के लिए शिक्षा में नवाचार को अपनाते हुए प्रविष्ट्यिां ली गई थीं जिसमें मेरे प्रोजेक्ट के लिए राज्य स्तर पर प्रथम स्थान के लिए सम्मान प्राप्त हुआ। साथ ही वर्तमान में PM E-Vidya Channel के लिए मुझे कक्षा 1 व कक्षा 2 के लिए वीडियो कंटेंट बनाने का अवसर प्राप्त हुआ। मेरे कार्य को पहचान कर एवं राज्य में शैक्षिक विकास हेतु अपने स्तर से भूमिका निर्वाह करने का अवसर प्रदान करने के लिए मैं शिक्षा विभाग की अत्यंत आभारी हूँ।

मैं एक मोटिवेशनल स्पीकर बनना चाहती हूँ और मुझे यह बात अत्यधिक प्रेरित करती है कि मुझे इतना अच्छा प्लेटफार्म मिला है जहाँ मैं कई सारे बच्चों को एक उच्च जीवन जीने की ओर प्रेरित कर सकती हूँ एवं उनमें स्पष्ट समझ उत्पन्न करने में सहायता प्रदान कर सकती हूँ।

धन्यवाद

शिक्षिका (एल–2) अंग्रेजी
रा.उ.प्रा.वि. रामसिंहपुरा, सवाई माधोपुर

बालगीत : शिक्षा और संस्कारों के सुगमकर्ता

❒ कृष्ण बिहारी पाठक

मंत्र–तंत्र, आदेश–उपदेश जो काम नहीं कर सकते वह काम गीत, कविता या कहानी बहुत आसानी से कर सकतें हैं, विशेषकर बालकों के संदर्भ में तो यह बात पूर्णतः सिद्ध हो जाती है। इसीलिए बालकों को अभिप्रेरणा देने के लिए, उनकी कल्पना के आयामों को विस्तार देने के लिए, ज्ञान–विज्ञान और व्यवहार की बातें सिखाने – समझाने के लिए, उन्हें जीवन मूल्यों से जोड़ने के लिए प्रायः इन्हीं साहित्यिक संदर्भों को काम लिया जाता है।

नवीन तथ्यों, वस्तुओं और संकल्पनाओं का ज्ञान कराने के लिए, नैतिक – चारित्रिक उत्थान के लिए बाल मनोविज्ञानी, शिक्षाविद और साहित्यकार बालगीत, कविताओं और कहानियों को माध्यम के रूप में अपनाने की बात कहते हैं। इन सबमें भी विशेषकर बालगीतों को क्योंकि गेयता के गुण के कारण गीत त्वरित और शत प्रतिशत संप्रेषण सुनिश्चित करते हैं।

बालगीत अपनी सहजता, सुलभता के कारण स्वतःस्फूर्त जुबान पर चढ़ जाते हैं और अनायास ही ज्ञानवर्धक और जीवनोपयोगी संस्कार दे जाते हैं इस तरह बालगीत बाल विकास में शिक्षा और संस्कारों के सुगमकर्ता के रूप में कार्य करते हैं।

उत्सुकता, उत्साह, रोचकता, जिज्ञासा, क्रियात्मकता, प्रेरणा, संगीतात्मकता और उत्सव का भाव बालगीतों के आवश्यक अवयव हैं। जिन बाल गीतों में ये अवयव जितने सहज और स्वाभाविक रूप से उपस्थित रहते हैं वे उतने ही स्थायी और प्रभावशाली होते हैं।

गीतों में अंतर्निहित लयात्मकता, नाद गुण और संगीतात्मकता से क्रियात्मकता को सहकार मिलता है। गीत और गतिविधि जब दोनों जुड़ जाते हैं तो यह विधा आधुनिक शिक्षा शास्त्र और शिक्षा मनोविज्ञान के 'करके सीखना' वाले आदर्श को शत–प्रतिशत निभाने का काम करती है।

बालमन की स्वच्छ, सुकोमल, सुकुमार बालसुलभ संवेदनाओं, संवेगों और भावनाओं को सुरुचिपूर्ण ढंग से सहेजने, संवारने की चाहत जिन गीतों में जितनी आसानी से लक्ष्य की जा सकती है वे उतने ही बालोपयोगी और जीवनोपयोगी सिद्ध होते हैं।

गीतों में स्वर और शब्द का सम्यक मेल एक उत्कृष्ट रसायन बनता है। यह रसायन बालक को अपने परिवेश से, प्रकृति से गहरे से जोड़ देता है। बालक की सुरुचि और संवेदनाओं का परिष्करण इससे होता है।

छोटे बच्चों को विशेष रूप से तुक मिलाने में, तुक बनाने और जोड़ने में बड़ा आनंद आता है। बालगीत इस आनंद के सेतु बनते हैं। विश्व के किसी भी कोने की किसी भी भाषा में इस तरह के गीत बहुत आसानी से मिल जाते हैं। कभी–कभी तो ये गीत इतने लोकप्रिय हो जाते हैं कि देश और भाषा के पार जाकर बच्चों के बीच अपने पूर्ण ध्वन्यात्मक वैभव के साथ संचरण करते हैं। पुराने समय से लेकर आज तक बालगीतों के निर्माण में तुकांत का विशेष महत्व देखा जा सकता है।

पिछली पीढ़ियों द्वारा बनाए जाने वाले और गाए जाने वाले गीत आज भी प्रचलित है यह अच्छी बात है और उन्हें खारिज करने का आग्रह भी नहीं होना चाहिए किंतु वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य और जीवन संदर्भों के अनुरूप बालगीतों के निर्माण में कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना आवश्यक हो उठा है।

आज के बालगीतों में वर्तमान परिप्रेक्ष्य की शैक्षिक चिंताओं और चर्चाओं का भी ध्यान रखा जाना आवश्यक है। जैसे जेंडर समावेशी शिक्षा को ही लीजिए। पहले इस बात पर कभी इतना ध्यान नहीं जाता था और अनायास ही अधिकांश गीत – कविता के उदाहरणों में या तो लड़के या लड़कियों की उपेक्षा प्रायः हो जाती रही।

आधुनिक जीवन संदर्भों और शैक्षिक परिदृश्य में जेंडर न्यूट्रल एप्रोच के बालगीत बनाए जाने चाहिए। केवल लडकों का नेतृत्व करने वाली पंक्तियों जैसे 'काश मैं बंदर होता' या, केवल लड़कियों की भावना दर्शाती पंक्ति 'काश मैं मछली होती' के स्थान पर 'जो हम होते वन के

मोर' या 'तितली बनकर कैसा लगता' जैसी शब्दावली अधिक उपयुक्त एवं जेन्डर समावेशी है। इसी तरह – 'मैं खाती हूँ खूब मिठाई, या मैं खाता हूँ खूब मिठाई के स्थान पर 'हमको भाती खूब मिठाई' लेना ज्यादा संगत है।

सीखने के लिए बने बालगीतों में वर्णों की पहचान और उच्चारण कौशल के साथ-साथ एक ही वर्ण से जुड़ी विविध वस्तुओं – विशेषताओं को खेल-खेल में हृदयंगम कराने का आग्रह हितकर हो सकता है।

अनंत कल्पनाओं का संसार बालमन के छोटे से कोने में विस्तार पाता है। गीतों में वे अपनी कल्पनाओं को साकार कर अपने अनूठे भव के वैभव से साक्षात्कार करते हैं। बालसुलभ इच्छा, आकांक्षाओं, कामनाओं और चाहना को गीतों में पिरोकर बालकों के मौन, मुखरता और चुप्पी को वाणी दी जा सकती है।

बालगीतों के साथ चित्रों का अभिनिवेश उन्हें और अधिक स्पर्शपूर्ण, समुन्नत एवं सजीव बनाता है। इस तरह से जब बालगीतों में उत्तम कविता, मनोहारी स्वर और सजीव चित्रण एक साथ उभरते हैं तो काव्यकला, चित्रकला और संगीत आदि तीन – तीन ललित कलाओं की त्रिवेणी बन जाती है।

बच्चों के कोमल मन में जिन अभिप्रेरणाओं और सद्भावनाओं को हम रोपना चाहते हैं वे गीतों में रच-बस कर एकरस होने लगती हैं और बालक स्वाभाविक रूप से सुसंस्कृत और शिष्ट बनते हैं। बचपन अभिप्रेरणा और संस्कारों के रोपण का सर्वोपयुक्त समय है तो बालगीत इसका सर्वांगपूर्ण माध्यम।

पशु पक्षियों, प्रकृति और पर्यावरण से प्रेम, संरक्षण और संवर्धन की भावना उनमें बचपन से ही पोषित की जा सकती है। अध्ययन की संस्कृति, खेलकूद, उत्तम स्वास्थ्य आदतें, जीवन मूल्य, नैतिक – चारित्रिक शिक्षा आदि के संस्कार भी गाते मुस्कुराते बच्चों में सहजता से ढलने लगते हैं। बच्चों को किसी से यह सुनना कि पेड़ लगाने से पर्यावरण और जीवन संवरता है, उपदेशात्मक और नीरस लग सकता है परंतु उन्हें आमंत्रण गीत के माध्यम से यह कहा जाए कि-

'पेड़ लगाएं पेड़ लगाएं
आओ साथी पेड़ लगाएं।'

तो वे इसे गाते मुस्कुराते दोहराने लगते हैं और मन में पेड़ लगाने का एक संकल्प भी संजोते जाते हैं।

अपने आसपास की चित्र विचित्र रहस्यभरी दुनिया के प्रति बच्चों में सहज जिज्ञासा होती ही है। वह अपने भूगोल, खगोल, पर्यावरण, समाज, गाँव और देश को अपनी आँखों से देखना चाहता है, उनसे जान पहचान बढ़ाना चाहता है, बालगीत और कविताएं उसके मित्र के समान उसे सबसे परिचय पाने में मदद करते हैं। बालगीतों के असंदिग्ध महत्व को मध्यनजर रखते हुए इन्हें और अधिक प्रचलित एवं समुन्नत बनाने की आवश्यकता बनी हुई है।

व्याख्याता, हिंदी
तिरूपति नगर, हिंडौन सिटी
जिला-करौली (राज.)-322230
मो. 9887202097

दिसम्बर-2023					
रवि	31	3	10	17	24
सोम		4	11	18	25
मंगल		5	12	19	26
बुध		6	13	20	27
गुरु		7	14	21	28
शुक्र	1	8	15	22	29
शनि	2	9	16	23	30

दिसम्बर 2023 ● कार्य दिवस – 20, रविवार 05, अवकाश – 07, उत्सव 01 ● 01 दिसम्बर : विश्व एकता दिवस (उत्सव), विश्व एड्स दिवस (RSCERT)। **03 दिसम्बर :** विश्व विशेष योग्यजन दिवस (समग्र शिक्षा)। **05-06 दिसम्बर :** मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता हेतु जिला स्तर पर चयन। **09 दिसम्बर :** सामुदायिक बाल सभा-विद्यालय स्तर पर। **10 दिसम्बर :** मानव अधिकार दिवस (उत्सव)। **11-23 दिसम्बर :** अर्द्ध वार्षिक परीक्षा का आयोजन। **25 दिसम्बर :** क्रिसमस डे (अवकाश)। **25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर (05 जनवरी तक जारी) :** शीतकालीन अवकाश (विभाग के समस्त आहरण-वितरण अधिकारियों द्वारा राज्य कर्मचारियों के हितकारी निधि के वार्षिक अंशदान हेतु माह दिसम्बर के वेतन से निर्धारित दर पर कटौती की कार्यवाही सुनिश्चित करना)। **26 से 27 दिसम्बर :** राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु पूर्व प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन। **27 से 30 दिसम्बर :** मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता का राज्य स्तर पर आयोजन। **30 से 31 दिसम्बर :** राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता। नोट:- ● जिन विद्यालयों में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई संचालित है, उन विद्यालयों में सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन शीतकालीन अवकाश के दौरान ही किया जाए। ● राज्य विधान सभा हेतु निर्वाचन प्रक्रिया कार्यक्रम के अनुसार यथा आवश्यकता संशोधन किया जा सकता है। ● माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व उन्नयन एवं कौशल शिविर का आयोजन। ● माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों व्यावसायिक कौशल एवं उन्नयन प्रतियोगिता जिला स्तर पर आयोजन। ● व्यावसायिक शिक्षा में कक्षा-11 व 12 में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु ऑन जॉब ट्रेनिंग शीतकालीन अवकाश में (समग्र शिक्षा) । ● शीतकालीन अवकाश के दौरान व्यावसायिक शिक्षा अन्तर्गत कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थियों हेतु ऑन जॉब ट्रेनिंग का आयोजन (समग्र शिक्षा)।

आज के समय में कैसा हो बाल साहित्य?

❒ **जयसिंह सिकरवार**

देश की शिक्षा को राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों द्वारा विजन प्रदान किया जाता रहा है वर्तमान में देश की केन्द्रीय सरकार ने 2020 में देश की तीसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति को एनईपी 2020 के नाम से जारी किया है। देश में ऐसा पहली बार हो रहा है कि एनसीईआरटी द्वारा पाठ्यचर्या तैयार करने से पूर्व प्रत्येक राज्य की एससीईआरटी को अपना–अपना राज्य पाठ्यचर्या रूपरेखा (एससीएफ) बनाने को कहा गया ताकि वे भी स्थानीयता का समावेश कर सकें। जिस पर सभी राज्यों ने अपने–अपने तरीकों से कार्य करना शुरू किया।

एनईपी 2020 में इस बात पर जोर दिया गया है कि बच्चों को बाल साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध करवाया जाए जिसमें बच्चों की स्थानीयता और भारत के ज्ञान और गौरव का ध्यान रखा जाए। अतः यह एक विचारणीय बिंदु है कि आज के समय में बच्चों के लिए किस तरह की पाठ्यचर्या होनी चाहिए।

वर्तमान समय में बाल साहित्य लेखन के लिए इन बिन्दुओं पर विचार किया जा सकता है–

1. उद्देश्य : उद्देश्य के बिना किसी कार्य को करना भटकने के समान है। आज के समय में बाल साहित्य लेखन का उद्देश्य ऐसा हो जो कि बच्चों में सीखने की प्रवृत्ति उत्पन्न करने वाला, तार्किक समझ विकसित करने वाला हो। जो साहित्य बच्चों को खुद के लिए और समाज के लिए उपयोगी नागरिक बनाने की समझ पैदा कर सके, उनमें सहनशीलता की भावना उत्पन्न कर सके, उनमें मैत्री, करुणा, मुदिता के भाव पैदा कर सके और उनको स्पष्टवादी सोच का नागरिक बनाने में मदद कर सके।

2. विषयवस्तु : वर्तमान समय में बाल साहित्य लेखन के विषय में इन विषयवस्तुओं को शामिल किया जा सकता है– भारतीय गौरवशाली परम्पराओं (जो कि सृष्टि क्रम के अनुसार हों) को कथा रूप में देने की जरूरत है। ऐसी कहानियां जो कल्पनात्मक तो हों लेकिन कल्पना के नाम पर अन्धविश्वास में न धकेल दें। ऐसी कहानियाँ जो बुद्धिवर्द्धक हों। ऐसी कहानियाँ/साहित्य जो प्रेरणादायक हों।

3. स्थानीयता : बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में यदि उनके अनुभवों को जोड़ दिया जाए तो वह प्रक्रिया उनके लिए अपनेपन का अहसास कराती है जिससे वे रुचि के साथ उस प्रक्रिया में व्यस्त हो जाते हैं, फिर चाहे वह पठन हो या कोई गतिविधि। अतः बाल साहित्य में भी संदर्भीकरण करते समय स्थानीयता को जोड़ा जाना अनिवार्य है ताकि वे सीखने की प्रक्रिया में व्यस्त हो सकें। बाल साहित्य का संदर्भीकरण करते समय इन बातों को ध्यान में रखा जा सकता है –

सन्दर्भ ऐसे हों जो केवल राष्ट्रीय भी न हों और केवल स्थानीय भी न हों अर्थात स्थानीय संदर्भों में राष्ट्र के विभिन्न हिस्सों से समानता खोजकर इस तरह के उदाहरणों को जोड़ना ताकि उनमें देश की संस्कृतियों के साथ जुड़ाव हो सके और अपनी संस्कृति के प्रति गौरव की भावना उत्पन्न हो सके। यह ध्यान रखें कि स्थानीय सन्दर्भों के प्रति जानकारी देते समय बच्चों में राष्ट्र के प्रति अलगाव के भाव उत्पन्न न हों। सन्दर्भों को विश्व की संस्कृतियों के साथ जोड़ने की भी यथा सम्भव कोशिश करें ताकि 'वसुधैव कुटुम्बकम/ वैश्विक नागरिकता' की सोच पैदा हो सके और उनमें मानवीयता की भावना परिपूर्ण हो सके।

4. प्रस्तुतीकरण का तरीका : सीखने की प्रक्रिया में हम किन उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहते हैं यह उस साहित्य के प्रस्तुत करने के तरीके/शैली पर निर्भर करता है। वर्तमान समय में बाल साहित्य को प्रस्तुत करते समय इन बातों को ध्यान में रखा जा सकता है।

ऐसा बाल साहित्य जो बच्चों में समस्या/चुनौती पैदा करें ताकि उनके सोचने की शक्ति का विकास हो सके, साहित्य में कल्पनाशीलता भी हो ताकि बच्चों में दूरगामी सोच विकसित हो सके। साहित्य को गतिविधि आधारित करें ताकि वह करके सीख सके। प्रस्तुतीकरण की शैली में आधुनिक तकनीकी (विडियो आदि) का प्रयोग भी आवश्यक है

5. किन बातों से बचें:–उपर्युक्त बातों के अलावा वर्तमान समय के बाल साहित्य सृजन में किन चीजों से बचने की जरूरत है? इसके लिए इन बातों को ध्यान में रखा जा सकता है–

ऐसी लोक कथाएं जो सृष्टि के क्रम (प्रकृति के नियमों) के अनुकूल नहीं हों। ऐसी लोक कथाएं भी जो वर्ग संघर्ष को जन्म देती हैं या किसी वर्ग के प्रति घृणा या बदले की भावना उत्पन्न करती हैं। साहित्य में धर्म के नाम पर मानवीय धर्म की बातें तो हों लेकिन जो पक्षपातपूर्ण हों या किसी मजहब विशेष से सम्बद्ध हों ऐसे साहित्य से बचने की जरूरत है। ऐसे साहित्य से भी बचने की जरूरत है जो भारतीय संस्कृति के प्रति तिरस्कार की भावना उत्पन्न करे।

सारांशतः कहा जा सकता है कि बच्चों को ऐसे साहित्य की जरूरत है जिससे वे तार्किक होते हुए भी ग्रहणशील बन सकें और एक संवेदनशील, समतावादी समाज का निर्माण कर सकें एवं वे अपना, अपने परिवार, समाज और देश के निर्माण में योगदान देते हुए खुशहाल जीवन जीने की कला सीख सकें और इन सबसे बड़ी बात वे सीखने की प्रक्रिया से जुड़ सकें। इस तरह के बाल साहित्य की रचना की जानी चाहिए।

अध्यापक
राउमावि. दयेरी, धौलपुर

धूमपान या धूम्रपान?

❐ अभिनव सरोवा

दृष्टि आईएएस संस्थान के निदेशक डॉ. विकास दिव्यकीर्ति द्वारा राष्ट्रीय हिंदी दिवस- 2023 के अवसर पर नई दिल्ली स्थित मिरांडा हाउस कॉलेज के वक्तव्य में हिंदी पाठकों से अपनी पीड़ा का ज़िक्र करते हुए कहते हैं कि मुझे हिंदीभाषी लोगों से एक बड़ी शिकायत है कि आजकल वे पढ़ते बहुत कम हैं। उसी पीड़ा को आगे बढ़ाएँ तो एक और पीड़ा है जिसका ज़िक्र किया जाना चाहिए। हम हिंदी पाठकों की एक बड़ी समस्या ये भी है कि हम परंपरा से चली आ रही बातों को उसी रूप में स्वीकार कर लेते हैं। उनकी वर्तनी की शुद्धता-अशुद्धता पर ध्यान ही नहीं देते। ये पीड़ा तब और बढ़ जाती है जब हिंदी भाषा में बड़े नाम वाले लोग भी उनका ग़लत इस्तेमाल करते देखे जाते हैं।

कोई व्यक्ति ऐसे ही किसी परंपरागत वर्तनी-दोष में सुधार करते हुए उसे सही लिखने का प्रयास करता है तो विद्वानों की सभा में उस पर 'ज़्यादा पढ़े-लिखे होने का' दोषारोपण भी हो जाता है और कई बार पीठ पीछे तथाकथित विद्वान होने की संज्ञा से विभूषित किया जाता है। ऐसे अधिकांश परंपरागत शब्द अखबारों से, दीवारों पर लिखे गए विज्ञापनों से, बाज़ार-दुकानों के नाम से, बसों, कार्यालयों या अन्य स्थानों पर उद्धृत किए गए सुविचारों, सूक्तियों से आए हैं और हमारे सामाजिक व्यवहार में इतने घुल-मिल गए हैं, इतने रूढ़ हो गए हैं कि अब इनके सही प्रयोग करने से संशय पैदा होने लगता है। लोग सोचने लगते हैं कि जैसा चल रहा है, चलने दो, क्यों मज़ाक़ के पात्र बनें।

धूम्रपान ऐसा ही एक शब्द है जो काफी दिनों से अशुद्ध वर्तनी के साथ धड़ल्ले से प्रयुक्त किया जा रहा है। आज कोई इसके सही रूप का प्रयोग कर दे तो मज़ाक़ का पात्र बन जाए। इसकी शुद्ध वर्तनी होती है- धूमपान, जिसका शाब्दिक अर्थ है- धुएँ का पान (सेवन) करना। मूल शब्द है- धूम, जिसका शब्दकोशीय अर्थ है- धुआँ। लेकिन ये धूमपान कब धूम्रपान में परिवर्तित हो गया, कहना असंभव है। बहुत ज़्यादा पीछे जाने की ज़रूरत नहीं बस अपने विद्यार्थी जीवन को याद करें तो विज्ञान विषय में आकाश और आकाशीय पिंडों के विषय में पढ़ते समय एक शब्द आता था- धूमकेतु। जो कि धूम और केतु के संयोग से बना है। इसमें धूम शब्द धुएँ और केतु शब्द ध्वजा के रूप में प्रयुक्त हुए हैं अर्थात धुएँ की ध्वजा।

रात के समय में तीव्र गति से धरती की तरफ आते आकाशीय पिंड, जिसके पीछे धुएँ की पूँछ-सी प्रतीत होती है। संभवत: इसी कारण इसे धूमकेतु या पुच्छल तारे के रूप में परिभाषित किया गया था। विज्ञान संबंधी मसलों की ज़्यादा समझ नहीं है और न अपना विषय और न ही फ़िलहाल ज़रूरत है। हिंदी व्याकरण की शब्द-निर्माण प्रक्रिया में देखें तो धुएँ के कारण जब दृश्यता कम हो जाती है और कोई वस्तु कम या धुँधली दिखाई देती है तब हम कहते हैं कि अमुक वस्तु धूमिल हो गई। वो भले कोई वस्तु हो या आशा/ उम्मीद, इस्तेमाल तो हम करते ही हैं।

हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी अपने ललित निबंध 'शिरीष के फूल' में जेठ की भयंकर गरमी का ज़िक्र करते हुए लिखते हैं कि धरित्री निर्धूम अग्निकुंड की तरह जल रही है, जिसका अर्थ है- धरती 'बिना धुएँ' वाले अग्निकुंड की तरह जल रही है। यहाँ जिस 'निर्धूम' शब्द का प्रयोग आचार्य ने किया है उसकी निर्माण प्रक्रिया पर ध्यान दें तो पाएँगे कि यह भी तो धूम शब्द में 'निर्' उपसर्ग (निर्+ धूम= निर्धूम) के प्रयोग से ही बना है। जब यहाँ धूम है, धूमिल में धूम है तो धूमपान में धूम्र क्यों?

कवितावली में तुलसीदास लिखते हैं-

बालधी बिसाल बिकराल, ज्वालजाल मानो,
लंक लीलिबेको काल रसना पसारी है।
कैधौं ब्योमबीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु,
बीररस बीर तरवारि सो उघारी है।।

लंकादहन के इस विवरण में- भयानक ज्वालमाला के साथ विशाल पूँछ ऐसी जान पड़ती है मानो लंका को निगलने के लिए स्वयं काल ने जीभ पसारी है अथवा मानो आकाश में अनेक धूमकेतु भरे पड़े हैं अथवा वीररस रूपी वीर ने तलवार निकाल ली है।

अब कुछ भी कहे, सोचें, तुलसीदास और हजारीप्रसाद द्विवेदी को ग़लत ठहराने का न माद्दा है और न ही इच्छा।

हालाँकि धूम्र शब्द स्वतंत्र रूप से सही भी है और समुचित भी लेकिन इसका प्रयोग भी वहीं होना चाहिए जहाँ ज़रूरत हो, प्रासंगिक और सार्थकता भी। धूम्र का शाब्दिक अर्थ होता है- धुएँ के रंग वाला/ वाली। अतः धुएँ के रंग या रंगत वाली किसी चीज़ के विशेषण के रूप में इसका प्रयोग किया जा सकता है और किया जाना भी चाहिए पर धूमपान में धूम्र का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

इसके अलावा भी कई शब्द हैं जिनकी अशुद्ध वर्तनी का इस्तेमाल हम करते जा रहे हैं, ठहरिए, सोचिए और शुद्ध वर्तनी का प्रयोग कीजिए और ऐसा करने के लिए लोगों को कहिए। इस तरह कहिए कि उसमें आग्रह हो, तिरस्कार नहीं।

व्याख्याता-हिंदी साहित्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पीथूसर, झुंझुनूं
मो.: 9314911782

पुस्तक समीक्षा

मन न भये दस-बीस

कथाकार: आशा पाराशर, **प्रकाशक:** बोधि प्रकाशन, जयपुर **मूल्य** : 150/-, **पृष्ठ:** 95

'मन न भये दस बीस' आशा पाराशर द्वारा 'अन्तरमन' में छिपे मनोभावों को शब्दों के माध्यम से पुनः 'अन्तरमन' में प्रवाहित तरंगों के रूप में अभिसार, अभिशप्त, अभिशाप, अभियुक्त और अभियोग नामक पाँच कहानियों को समेटे कथा-संग्रह का नाम है।

उपर्युक्त कथा संग्रह में प्रेम रूपी मनोभाव के सभी रूपों को रिश्तों में संजोकर लेखिका ने मार्मिक अंदाज में अपनी पाँच दीर्घ कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। स्वयं उनके शब्दों में ''प्रेम निस्वार्थ होता है, जिसमें खुद को मार कर दूसरे को अपनाया जाता है। जब कोई खुद से ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो जाए, जब किसी की खातिर अपना व्यक्तित्व अपनी पसंद-नापसंद समर्पित करने में खुशी मिले वही प्यार है।''

आशा पाराशर की कहानियों के लिए श्री हरि प्रकाश राठी की टिप्पणी अत्यन्त सटीक प्रतीत होती है ''आशा की कहानियाँ संवेदनाओं का निर्मल प्रवाह है।'' मन न भये दस-बीस' कथा संग्रह में ली गई पाँचों कहानियाँ नारी मन की गहन उधेड़-बुन को व्यक्त करती है। प्रायः सभी कहानियों में एक समानता है कि वे अत्यन्त निजी और निकट के रिश्तों से उपजे भावों के सहज गुम्फन और सघन अनुभूतियों की कहानियाँ हैं।

प्रत्येक कहानी के किरदार पूर्णतया पारिवारिक और हमारी जाती-जिन्दगी से जुड़े प्रतीत होते हैं। उनमें अपने आस-पास घिरे मामा-मौसी, माँ-बाप और दोस्तों की सहज छवि देखी जा सकती हैं इसी कारणवश प्रत्येक कहानी अपनी-सी लगती है।

कथा संग्रह में प्रथम कहानी 'अभिसार' अर्थपूर्ण शीर्षक के साथ अत्यन्त मार्मिक और भाव-प्रवण है। कहानी के नायक सरदार मनिन्दर सिंह के मनोमस्तिष्क में छाए प्रथम प्रेम की नायिका सीरत द्वारा मिले धोखे ने उन्हें जीवन में दोबारा किसी के साथ प्रेम करने योग्य नहीं छोड़ा। मनिन्दर और मंजीत का विवाह मात्र एक रस्म अदायगी बनकर रह गया। अन्त में जब इनका अभिसार हुआ तो घटनाचक्र ने पाठक की आत्मा तक को झकझोर कर रख दिया।

जीवन अनेक रंगों से बुना हुआ ताना-बाना है। 'अभिशप्त' कहानी की दो सखियों का जीवन इसी प्रकार के रंगों को अपने में संजोए हुए हैं। प्रेम में उठे कदम विवाह की चौखट पर भी कमजोर पड़ जाते हैं और यहीं से शुरू होती है वैवाहिक रिश्तों में विश्वासघात से टूटती स्त्री की कहानी। अपनी बचपन की सखी सुधि के कैंसर के इलाज के साथ उसके पुत्र का पालन-पोषण कर तन्वी मानो सुधि के अभिशप्त जीवन की चादर खुद ओढ़ लेती है।

एक समय था जब भाई-बहिन मिलकर सुख-दुख साझा करते थे। 'अभिशाप' उसी भावधारा की कहानी है। सुमन और जया रिश्ते में मामा-बुआ की बहिनें थी। कहानी पारिवारिक घटनाक्रम में बढ़ते हुए सुमन के घर तक पितृ पक्ष से मृत्युपश्चात कफन के रूप में साड़ी पहुँचाने तक पाठक को बाँधे रखती है।

कहानी 'अभियुक्त' में भी वृन्दा और रोमी की कहानी अनेक रोमांचक घटनाक्रमों से गुजरते हुए अन्ततोगत्वा रोमी को ही अभियुक्त बनाती है।

इसी क्रम में 'अभियोग' भी अत्यन्त मार्मिक और हृदय के छू लेने वाली कहानी है। सरल निश्छल नवयुवक विष्णु को जगतसिंह और सलोनी जैसे ठगों द्वारा छले जाने की कहानी है यह जहां केवल धन की बात होती तो विष्णु मेहनत करके दुबारा धन कमा लेता लेकिन छले गए मासूम हृदय को वह कौनसी दुकान से खरीद कर लाता? जिस सलोनी के लिए उसने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया उसी के विश्वासघात को सहन नहीं कर पाने के कारण पागल हो गया। पैसा-गहना सब चला भी जाए तो इंसान बर्दाश्त कर लेता है पर विश्वास खण्डित हो जाए तो व्यक्ति टूट जाता है।

सुखद बात यह है कि कथाकार आशा पाराशर की दीर्घ कहानियाँ पाठक को कहीं भी ऊबाऊ परिदृश्य नहीं दिखाती। कहानियों में प्रचलित लोकोक्तियों व मुहावरों का प्रयोग अत्यन्त सहज, सबल और चुटीलापन लिए हुए हैं। प्रत्येक कहानी का भाव-पक्ष प्रशंसनीय होने के साथ-साथ कला-पक्ष भी समृद्ध बन पड़ा है। कहानियों की विषय-वस्तु शालीनता के गुच्छ में बंधी हुई है।

अस्तु! आज के भौतिकवादी युग में सुकून मिलता है ऐसी पारिवारिक घटनाक्रमों से युक्त कहानियाँ पढ़कर। आशा है पाठकों को आगे भी मूल्यों से बंधी लेखिका की कहानियाँ पढ़ने को मिलती रहेंगी।

समीक्षक : डॉ. संगीता पुरोहित
सहायक निदेशक, शिविरा प्रकाशन अनुभाग
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर

बाल शिविरा

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजित एवं स्वचरित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है। –व. संपादक

भारत की विविधता

आजकल,
हर एक देश में विज्ञान है।
परन्तु भारत जैसे देश में,
मिट्टी ही सबकी जान है।
भारत का तिरंगा,
भारतीयों की शान है।
जन-गण-मन,
भारत का राष्ट्रगान है।
भारत के हर एक राज्य की,
एक अलग ही पहचान है।
भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में,
भिन्न-भिन्न होता धान है।
भारत में जन्मे शूरवीर,
जिन्होंने भारत का बढ़ाया मान है।
भारत के हर एक राज्य में,
अपना अलग ही परिधान है।।

महिपाल, कक्षा-11, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ईनाणा, नागौर

विश्वास

विश्वास को कर ऊँचा
हर कदम मैं बढ़ाऊँगी।
कैसा भी रास्ता हो
मंजिल मैं पा जाऊँगी।।
लाखों मुश्किले आएंगी
न फिर मैं घबराऊँगी।
लोग कितना ही मुझे
तोड़ने की कोशिश करें
हिम्मत बाँधे अपनी मंजिल को पाऊँगी।।
चाहे कितनी बड़ी मुश्किल आए
मैं कभी नही रूकूँगी न ही झूकूँगी।
ऐसी मैं बन जाऊँगी
साथ-साथ ही अपने मम्मी-पापा
अध्यापकों का मान सम्मान बढ़ाऊँगी।।
ये धरती क्या एक दिन
आसमान पैरों पर झुकाऊँगी।
विश्वास को कर ऊँचा
हर कदम मैं बढ़ाऊँगी।
कैसा भी रास्ता हो
मंजिल मैं पा जाऊँगी।।

अंकिता गुर्जर, कक्षा-11, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दाखिया, टोंक

माँ

जग में सबसे न्यारी माँ,
खुशियां देती सारी माँ।
चलना हमें सिखाती माँ,
मंजिल हमें दिखाती माँ।।
खाना हमें खिलाती माँ,
कपड़े हमें दिलाती माँ।
स्कूल हमें भेजती माँ,
हमारे साथ खेलती माँ।।
गोद में हमें बिठाती माँ,
खिलौने हमें दिलाती माँ।
घर का काम करती माँ,
खाना रोज बनाती माँ।।
माँ तो माँ है,
माँ के जैसा कोई नहीं।
माँ तो माँ है,
माँ के बिना सोई नहीं।

शान्ति, कक्षा-7, राउप्रा विद्यालय बेनिवालों की ढाणी, मंगले की बेरी, आडेल, बाड़मेर-344033

जीवन

जीवन का यह सार, छोटा सा संसार।
प्रेम, करुणा, भ्रातृत्व, शिष्टाचार की रसधार।।
जीवन रूपी सागर में मिलते कुछ सच्चे यार।
तनिक सी डिगार बिना, करते नौका पार।।
कॅरियर की इस होड़ में तजुरबा कच्चा रह गया।
उम्र ढल गई मगर विवेक में बच्चा रह गया।।
जग में होता उसका मान, जो होता धनवान।
निर्धन का होता अपमान, किसको है किसका मान।।
मिली जिन्दगी कुछ करने के लिए।
पर समय बीत रहा अपनों का प्यार पाने के लिए।।
असफलता का ना गुरुर हो, असफलता दिल से मंजूर हो।
यही उसूल हो, इसमें कभी ना भूल हो।।
जीवन का यह सार, छोटा सा संसार।
प्रेम करुणा, भ्रातृत्व शिष्टाचार की रसधार।।

दुदाराम, कक्षा-12वीं (विज्ञान संकाय), राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय होडू, बालोतरा

ऊँची उड़ान

चिड़िया को ऊँची उड़ान भरने दो
ममता की मूरत को जरा आगे बढ़ जाने दो,
बचपन अधूरा है सयानी तो हो जाने दो।
अभी आंगन में चिड़िया सा मस्त चहकने दो,
बाबुल तेरी शीतल छाव में अभी थोड़ा बढ़ने दो।
अभी पंख आए हैं ऊँची उड़ान भरने दो,
खुद से खुद की जरूरी पहचान करने दो।
नन्हीं परी को खेलने की उम्र में बोझ से लाद दिया,
गुडे गुडी के खेल सा अनपढ़ से विवाह रचा दिया।
उम्र से पहले ही मुझे परिणय सूत्र में बांध दिया,
पापा ने बोझ समझ आंगन से अलविदा कर दिया।

रानू सिरोठा, कक्षा-9C, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय केकड़ी

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिवार में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अत: आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर shivira.dsc@rajasthan.gov.in पर भिजवाकर सहयोग करें। –व. संपादक

प्रतिभाशाली विद्यार्थी हंसराज जीनगर का अनुप्रति योजना में नीट परीक्षा के लिए चयन

बालोतरा। पुरस्कृत शिक्षक फोरम द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन नेहरु कॉलोनी बालोतरा के परिसर में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में नेहरु कॉलोनी निवासी हंसराज जीनगर पुत्र लक्ष्मी चंद के कक्षा दसवीं में 97 प्रतिशत अंक प्राप्त करने के उपलक्ष्य में नीट परीक्षा की तैयारी के लिए अनुप्रति योजना में चयन होने पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उप प्राचार्य नारायण राम गेवा ने साफा पहनाकर एवं फोरम के अध्यक्ष सालगराम परिहार, मांगीलाल जीनगर, अध्यापक अमृतलाल, कार्यवाहक प्रधानाचार्य भगवान दास गहलोत ने माला पहनाकर सम्मानित किया।

पूर्व कोषाधिकारी महेश कुमार राठौड़ ने नगद पुरस्कार प्रदान कर बालक का हौसला अफजाई की।

इस अवसर पर जिला अध्यक्ष परिहार ने कहा कि लक्ष्य निर्धारित कर कड़ी मेहनत के साथ विद्यार्थी अपनी मंजिल को प्राप्त करें।

सरकार की अनुप्रति योजना का लाभ उठाकर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाएं।

इस अवसर पर ललित परिहार, भटराज, गंगा, रुद्र उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के अंत में छात्र हंसराज ने नीट परीक्षा में सफलता अर्जित करने का संकल्प लिया।

वॉलिंटियर्स के प्रशिक्षण के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण सम्पन्न

कुम्भलगढ़। राजस्थान भारत स्काउट व गाइड के तहत विधानसभा चुनाव 25 नवंबर, 2023 को प्रत्येक मतदान केंद्र पर 2-2 स्काउट गाइड वॉलिंटियर्स देंगे अपनी सेवाएं।

इसके लिए ब्लॉक व स्थानीय संघ- कुंभलगढ़ के प्रत्येक पीईईओ से एक-एक शिक्षक का प्रशिक्षण केलवाड़ा में हुआ संपन्न।

स्थानीय संघ के सचिव मुरलीधर नागौरी ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी पृथ्वी सिंह झाला की अध्यक्षता में स्काउट गाइड वॉलिंटियर्स को प्रशिक्षण देने के लिए एक दिवसीय शिक्षकों का प्रशिक्षण पंचायत सभागार में संपन्न हुआ। इस प्रशिक्षण में मुख्य दक्ष प्रशिक्षक सहायक लीडर ट्रेनर स्काउट एवं शारीरिक शिक्षक राकेश टॉक कुंचौली, मुरलीधर नागौरी गवार, विक्रम सिंह शेखावत मावो का गुड़ा, प्रेमराज मीना गजपुर, मक्खन लाल कुमावत साथिया ने वॉलिंटियर्स को प्रशिक्षण देने वाले शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

25 नवंबर, 2023 को होने वाले मतदान के दिन सभी मतदान केंद्रों पर स्काउट गाइड दिव्यांगों एवं विशेष आवश्यकता वाले पुरुष व महिला वोटर्स के सहयोग और विभिन्न कार्यों के लिए तथा सुगम मतदान कराने हेतु पूर्ण अनुशासन एवं आदर्श आचार संहिता की पूर्णतया पालना करते हुए स्काउट गाइड पोशाक में अपनी सेवाएं विधानसभा की प्रत्येक बूथ पर देंगे।

एक दिवसीय प्रशिक्षण के पश्चात सभी प्रशिक्षित शिक्षक अपने-अपने पीईईओ क्षेत्र में मतदान केंद्रवार चयनित स्काउट गाइड को प्रशिक्षण देने का कार्य करेंगे।

विधानसभा चुनाव 2023 के तहत राजस्थान प्रदेश में 25 नवंबर, 2023 को होने वाले मतदान को सुगम बनाने में ये स्काउट गाइड वॉलिंटियर्स अपनी अहम भूमिका मतदान केंद्र पर मतदान दिवस को निभाएंगे। समाचार प्रकाशित कराने बाबत।

उमरवास के 10 स्काउट्स को मिला राज्यपाल पुरस्कार

कुंभलगढ़। चारभुजा तहसील के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय उमरवास के 10 स्काउट्स को राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त हुआ। पंचायत

प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी जयप्रकाश स्वामी ने बताया कि स्काउट प्रभारी विक्रम सिंह शेखावत के मार्गदर्शन में सत्र 2022-23 के राज्य पुरस्कार जाँच शिविर में विद्यालय के 10 स्काउट्स ने सहभागिता की जिसमें सभी स्काउट्स को राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त किया। इससे पूर्व भी विद्यालय के 15 स्काउट्स ने राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

सेवानिवृत्ति समारोह का किया आयोजन

बालोतरा। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी राजेंद्र सिंह कुंपावत के सेवानिवृत्ति समारोह में पुरस्कृत शिक्षक फोरम बालोतरा बाड़मेर के जिलाध्यक्ष सालगराम परिहार ने मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी का शाल ओढ़ाकर एवं ग्राम विकास अधिकारी राजेश परिहार ने माला पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर पर स्टेट अवार्डेड सेवानिवृत प्रधानाचार्य किश्तूर राम पवार एवं गणेश लावा वरिष्ठ अध्यापक, गोपाल सिंह, जोग सिंह, विक्रम सिंह सहित गणमान्य लोगों ने शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए मालाएं पहनाकर स्वागत किया। कार्यक्रम में संयुक्त निदेशक प्रेमचंद सांखला शिक्षा विभाग जोधपुर ने कुमावत के कार्यों की प्रशंसा की।

इस अवसर पर जिला अध्यक्ष परिहार ने कहा कि राजकीय सेवा को समर्पित भाव से परिपूर्ण करना बड़ी उपलब्धि है। जोधपुर जिले के पुरस्कृत शिक्षक फोरम के अध्यक्ष की हैसियत से स्टेट एवं नेशनल अवार्ड प्राप्त शिक्षकों की समस्याओं का समाधान करने में भी कुंपावत ने अग्रणी भूमिका निभाई।

इस अवसर पर स्नेह भोज का भी आयोजन किया गया। सैंकड़ो की संख्या में शुभचिंतकों ने भाग लेकर समारोह की शोभा बढ़ाई।

नाटकों से दिया जल संरक्षण व नशा मुक्ति का संदेश

बूंदी। पेसिफिक इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस उमरडा में आज जल मित्र डॉ पी सी जैन द्वारा रचित दो नाटकों का मंचन जो कॉलेज के छात्र छात्राओ ने किया से जल संरक्षण एवं नशा मुक्ति का संदेश दिया गया।

पहले नाटक मरघट बना पनघट में यह दर्शाया गया कि आजकल नल आने के बाद पनघट सुने सुने हो गए हैं वहाँ कोई नहीं जाता और कुएं या बावड़ी अब कूड़ेदान बन चुके हैं। पर जब इस बस्ती में कुछ दिन तक नल नहीं आता है तो फिर सभी को वह पनघट याद आता है और कुएं की सफाई कर उसे पुन: चालू करते हैं और जो मरघट बना हुआ था उसकी रौनक पुन: लौट आती है।

मुंबई में अभी हाल में 180 पुराने कुओं की खोज की जा रही है और उनको पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जा रहा है इसलिए हमें भी हमारे पुराने पन घट को नहीं भूलना चाहिए और कुआं को कूड़ेदान नहीं बनाना चाहिए। उन्हें सतत काम में लेते रहना चाहिए।

दूसरी 'माँ मुझे मत छोड़ो 'नाटिका में रेव पार्टी में ड्रग्स के नशे में धुत्त एक लड़का अपनी माँ की मोबाइल कॉल को बार-बार नहीं सुनता है और तभी उसका मित्र माँ की मृत देह लेकर रेव पार्टी में आ जाता है जिसे देखकर बेटा चीख पड़ता है और कहता है माँ मुझे छोड़ कर मत जाओ मैं अब सब यह नशा छोड़ दूंगा।

यह नाटिकाएं बेच 2021 के छात्र-छात्राओं ने नव आगंतुक बीच 2023 के लिए उनको संदेश देने हेतु मंचित किए।

कार्यक्रम का आयोजन डॉक्टर दिलीप कम्युनिटी मेडीसिन ने किया।

डॉक्टर पीसी जैन का प्रिंसिपल डॉक्टर सुरेश गोयल द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। श्रीमती चंद्रा माथुर अधीक्षक भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित थी । श्रेय ओझा, आरीश खान, याशिका चंदेल, ईशा गौतमी, आदित्य डांगर, सोनाली कुक्रेजा, रिया तिवारी, रचित केला, अनेरी पटेल ने नाटिका में भाग लिया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदली विद्यालयों की तस्वीर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आवाँ, कोटा

❐ आदित्य विजय

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आवाँ
सत्यमेव जयते
सेवार्थ
प्रस्थान

पिछले कुछ वर्षों में राजकीय विद्यालयों के भौतिक परिदृश्य को देखा जाए तो समर्पित, संकल्पित भामाशाहों, पूर्व छात्रों, समाजसेवी संस्थाओं, NGO व व्यक्तिगत दानदाताओं के सहयोग ने राजकीय विद्यालयों की तस्वीर बहुत हद तक बदल दी है और निश्चित ही यह होना भी चाहिए कि जो कुछ हमारे पास हो उसका एक अंश लोकहित के कार्यों में लगे। राज्य में बहुत बड़ी संख्या में संचालित सरकारी प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालयों के इंफ्रास्ट्रक्चर एवं अन्य भौतिक अनिवार्य सुविधाओं के लिए जिम्मेदारी निश्चित ही राज्य सरकार एवं शिक्षा विभाग की है। किन्तु सोचने की बात यह है कि क्या हम सभी शिक्षा विभाग में कार्यरत अधिकारी, शिक्षक, कर्मचारी सरकार और विभाग से भिन्न हैं। बड़ी जरूरतों के लिए निश्चित ही बड़े संसाधनों की ओर देखना पड़ता है किन्तु जो संसाधन हमें पूर्व से मिले हैं उन्हें सहेजने, सँभालने के लिए यदि संस्था प्रधान और टीम मिलकर पूरा करने की ठान ले तो भी बदलता हुआ स्वरूप इन विद्यालयों का साकार होता दिखाई दे सकता है।

आवश्यकता बस इतनी सी है कि– ‘‘स्वयं से करें पहल, तो राह होगी सरल’’

विभिन्न विद्यालयों में संस्था प्रधान के रूप में कार्य करते हुए यह पहल की गई कि विद्यालय परिवार के सभी सदस्य मिलकर प्रतिवर्ष एक बार **ज्ञान संकल्प पोर्टल** के माध्यम से एक दिन का वेतन विद्यालय के लिए देवें तो इस पहल को समाज के सामने रखकर SDMC सदस्यों या अन्य समाज–जनों को भी प्रेरित किया जा सकता है। बड़े-छोटे कोई भी सरकारी विद्यालय हों अगर हम सब इस मुहीम में सहयोगी बनें तो वर्ष पर्यन्त की विद्यालय की छोटी–छोटी जरूरतों जिनके पूरा हो जाने से न केवल वहाँ अध्ययनरत बच्चों में परिवर्तन होता महसूस होगा बल्कि आत्म संतुष्टि का भाव भी मन मस्तिष्क को तृप्त कर देगा।

इसीलिए ‘‘अपना हाथ जगन्नाथ’’ के भावों को मन में रखकर यदि हम सब संकल्पित हो जाएँ और प्रण ले लें– "ONE DAY SALARY IN A YEAR FOR MY SCHOOL" तो हम इन सरकारी विद्यालयों को स्वच्छ, सुन्दर विद्यालय बनाने की दिशा में अपना अमूल्य सहयोग देकर भावी पीढ़ी को गढ़ने के सपने को आकार लेता देख सकते हैं।

आइए आप सभी का आह्वान है–‘‘स्वयं से करें पहल, तो हर राह होगी सरल’’

प्रधानाचार्य
राउमावि आवाँ, कोटा (राज.)
मो.न.– 9251400421

ज्ञान सकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह अक्टूबर 2023 में 50000 एवं अधिक राशि का सहयोग करने वाले भामाशाह

S.No.	Donar Name	Name In English	Block Name	Dist Name	AMOUNT
1	TARUN TAK	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHIGARLA (215200)	RAJGARH	CHURU	400000
2	SURAJ KUMARI SHUBHKARAN BAID	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MELUSAR RATANGARH (215594)	RATANGARH	CHURU	240000
3	ASHOK KUMAR RAKHECHA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BANSIYA (214093)	RAIPUR	PALI	151000
4	VENUS WORLDWIDE ENTERTAINMENT PRIVATE LIMITED	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BALWANA (221308)	SUMERPUR	PALI	115000
5	M V AGROTECH PRIVATE LIMITED	SHAHID SUBEDAR NIHAL SINGH GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NUNIAGOTHARA (215796)	CHIRAWA	JHUNJHUNU	100000
6	NARAYAN DAS TULSANI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHULWA (215917)	BUHANA	JHUNJHUNU	100000
7	SHIVSHAKTI BUILDHOME PRIVATE LIMITED	RAJKALA GOVT. GIRLS SENIOR SECONDARY SCHOOL CHIRAWA (215824)	CHIRAWA	JHUNJHUNU	100000
8	JAICHAND LAL DAGA	SHAHID SIPAHI BIRDA RAM GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DUMOLI KHURD (215937)	SINGHANA	JHUNJHUNU	100000
9	JAICHAND LAL DAGA	RAM PRATAP MAHADE V PRASAD RUNGTA GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SULTANA (215806)	CHIRAWA	JHUNJHUNU	100000
10	SUSHIL KUMAR MUNDHRA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MALSAR (215636)	JHUNJHUNU	JHUNJHUNU	100000
11	HARISH CLAYS	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GOKHARI (465200)	ALSISAR	JHUNJHUNU	100000
12	VINOD INDUSTRIES	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DILOI SOUTH (211635)	MANDAWA	JHUNJHUNU	100000
13	RAJESH KUMAR AGARWAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GHUMANSAR KALAN (215827)	PILANI	JHUNJHUNU	100000
14	GSJ ALLOYS	GOVT. SENIOR SECONDAR Y SCHOOL JAITPUR (215922)	BUHANA	JHUNJHUNU	100000
15	SETHIA FOODS	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BUHANA (215929)	BUHANA	JHUNJHUNU	100000
16	SETHIA FOODS	SHAHID NB SUB MAGANCHAND GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BAKRA (215637)	JHUNJHUNU	JHUNJHUNU	100000
17	SETH BAHADURMAL JASKARAN SIDHKARAN RAMPURIA JAIN C	SHAHID JAKIR ALI GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GIDANIA (215818)	CHIRAWA	JHUNJHUNU	100000
18	BIKANER PORCELAIN PVT LTD	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SURAJGARH MANDI (215889)	SURAJGARH	JHUNJHUNU	100000
19	LAXMI PAT BAID	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL JAKHOD (215867)	SURAJGARH	JHUNJHUNU	100000
20	TARUNA DECHOME PVT LTD	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL KALAKHARI (215931)	BUHANA	JHUNJHUNU	100000

S.No.	Donar Name	Name In English	Block Name	Dist Name	AMOUNT
21	VIJAY KUMAR POONIA	SHAHEED ISHWAR SINGH GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MUNDITAL (215222)	RAJGARH	CHURU	100000
22	LADHA RAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GODHUWANI GODARON KI DHANI LOMPALI (461288)	GIDA	BARMER	75000
23	RAMKISHAN JAT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL PUNUSAR (478717)	SARDARSHAHAR	CHURU	75000
24	HAWA SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHINWSAR (500176)	KHINWSAR	NAGAUR	71000
25	JETHU SINGH BHATI	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL BHALASARIYA (476128)	TINWARI	JODHPUR	70000
26	MUKTA SHARMA	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL SHANKAR PURA (464465)	KOTA	KOTA	64000
27	RITESH JAIN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SALIYA (223830)	BANSWARA	BANSWARA	61000
28	PREMLATA PRAJAPAT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHANI BADHAN (215963)	KHETRI	JHUNJHUNU	60000
29	GANPAT LAL AAMERIA	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL GHATIYAWALI (224156)	CHITTORGARH	CHITTAURGARH	60000
30	RAJESH KUMAR SAMA DHIYA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL AMJA (214968)	GARHI	BANSWARA	51000
31	SOHAN LAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SHRIRAMSAR (211270)	BIKANER	BIKANER	51000
32	TIGER CEMENT PVT LTD	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GUJARWAS (215905)	SINGHANA	JHUNJHUNU	51000
33	BEERBAL SINGH MEEL	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL KOCHHOR (490831)	PALSANA	SIKAR	51000
34	SOHAN SHARMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL PHOGARI (219808)	MOLASAR	NAGAUR	51000
35	AJAY BAHADUR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SURATPURA (212406)	BHADRA	HANUMANGARH	50000
36	DHANRAJ MEHTA	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL DANWAS (404592)	KHANPUR	JHALAWAR	50000
37	DHANRAJ MEHTA	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL DANWAS (404592)	KHANPUR	JHALAWAR	50000
38	HERITAGE HEALTH INSURANCE TPA PVT LTD	GOVT. PRIMARY SCHOOL SINDHI ANAJ MANDI JAIPUR MALVIYA NAGAR SEC-1 (400594)	JAIPUR EAST	JAIPUR	50000
39	HAVA SINGH TAKHAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL LODHAHERA (216724)	SANGOD	KOTA	50000
40	HANUMAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GULLE KI BERY (220980)	SEDWA	BARMER	50000
41	NAGENDRA SINGH RATHORE	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BARDWA (219754)	MOLASAR	NAGAUR	50000

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह अक्टूबर 2023 में प्राप्त जिलेवार राशि

S.NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	JHUNJHUNU	56	1848620
2	CHURU	79	1477910
3	BANSWARA	107	673170
4	JODHPUR	401	304112
5	PALI	220	297490
6	BARMER	344	282446
7	JHALAWAR	511	273626
8	NAGAUR	323	271897
9	KOTA	465	257567
10	CHITTAURGARH	166	252973
11	UDAIPUR	549	189920
12	RAJSAMAND	1181	185923
13	DUNGARPUR	644	180598
14	HANUMANGARH	341	149253
15	JAIPUR	107	147932
16	SIKAR	386	138002
17	BIKANER	67	132614
18	PRATAPGARH	59	126573
19	ALWAR	437	116716
20	BHILWARA	304	114203
21	DHAULPUR	441	98835
22	BUNDI	552	82727
23	TONK	414	80669
24	AJMER	181	79234
25	JAISALMER	510	75853
26	SAWAIMADHOPUR	170	56866
27	BHARATPUR	222	50607
28	KARAULI	71	38004
29	DAUSA	313	30602
30	JALOR	106	29562
31	GANGANAGAR	157	21001
32	BARAN	28	12077
33	SIROHI	206	10850
Total		10118	8088432

शिविरा पत्रिका (मासिक) : दिसम्बर, 2023/निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा राज्य केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर से मुद्रित।
वरिष्ठ सम्पादक : सुनीता चावला, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

बाल शिविरा : दिसम्बर, 2023

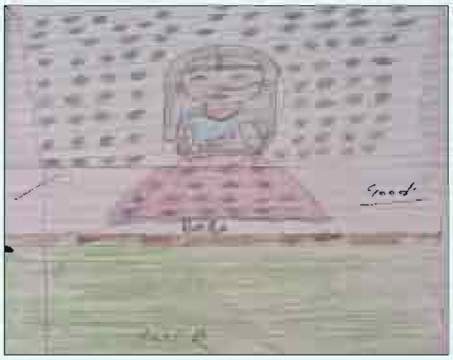

ममता,
राजकीय उ.मा.विद्यालय राणीसर, बीकानेर

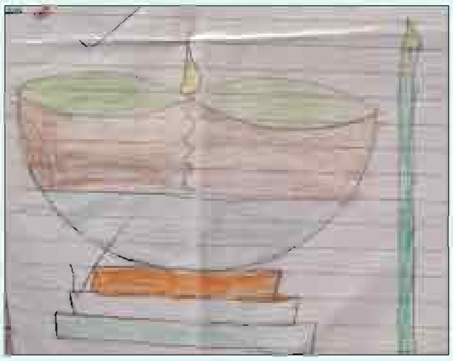

सोनी,
राजकीय उ.मा.विद्यालय राणीसर, बीकानेर

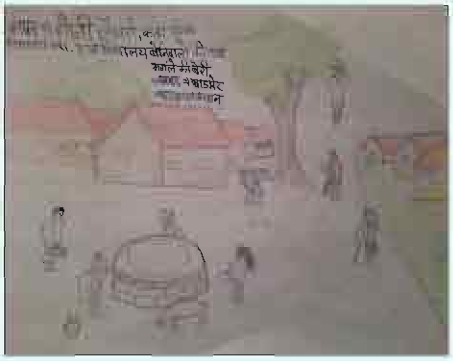

खुशाल कुमार,
राजकीय उ.प्रा.विद्यालय बेनिवालों की ढाणी, बाड़मेर

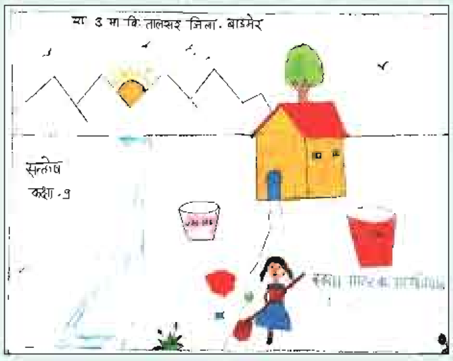
रा. उ. मा. वि. तालसर जिला. बाड़मेर
सन्तोष
कक्षा - 9

संतोष,
राजकीय उ.मा. विद्यालय तालसर, बाड़मेर

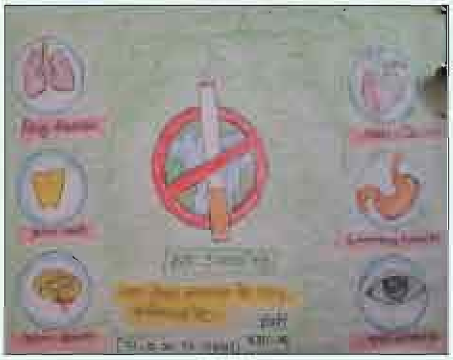

भंवरी,
राजकीय उ.मा. विद्यालय तालसर, बाड़मेर

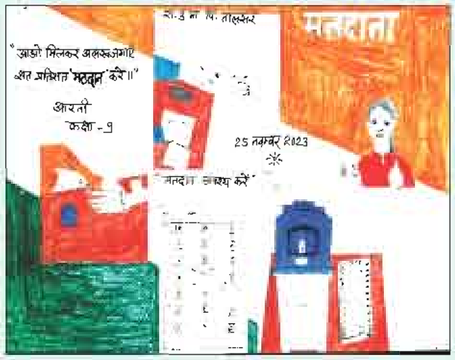
रा. उ. मा. वि. तालसर
मतदाता
"आओ मिलकर अलख जगाएं
शत प्रतिशत 'मतदान' करें॥"
आरती
कक्षा - 9
25 नवम्बर 2023
"मतदान अवश्य करें"

आरती,
राजकीय उ.मा. विद्यालय तालसर, बाड़मेर

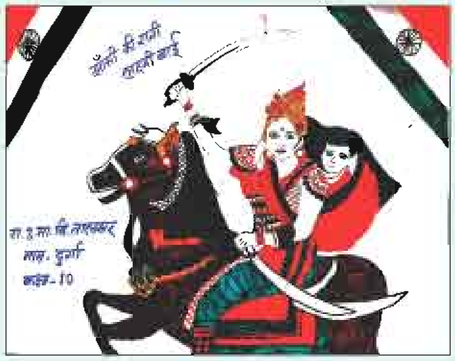
झाँसी की रानी
लक्ष्मी बाई
रा. उ. मा. वि. तालसर
नाम- दुर्गा
कक्षा- 10

दुर्गा,
राजकीय उ.मा.विद्यालय तालसर, बाड़मेर

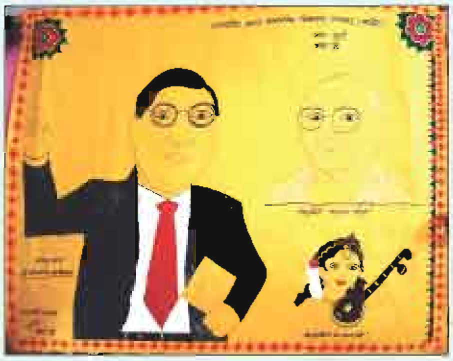

दुर्गा,
राजकीय उ.मा.विद्यालय तालसर, बाड़मेर

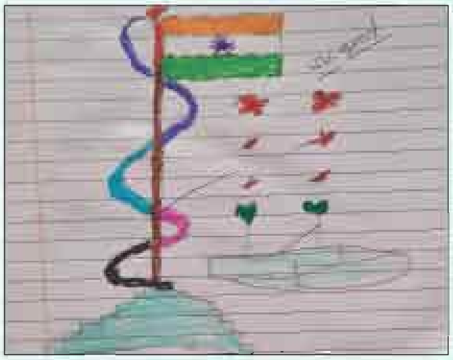

रविना,
राजकीय उ.मा.विद्यालय राणीसर, बीकानेर

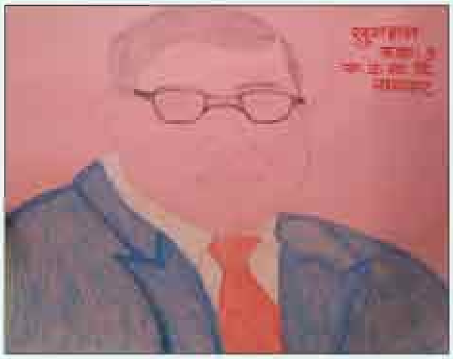

खुशहाल,
राजकीय उ.मा. विद्यालय तालसर, बाड़मेर

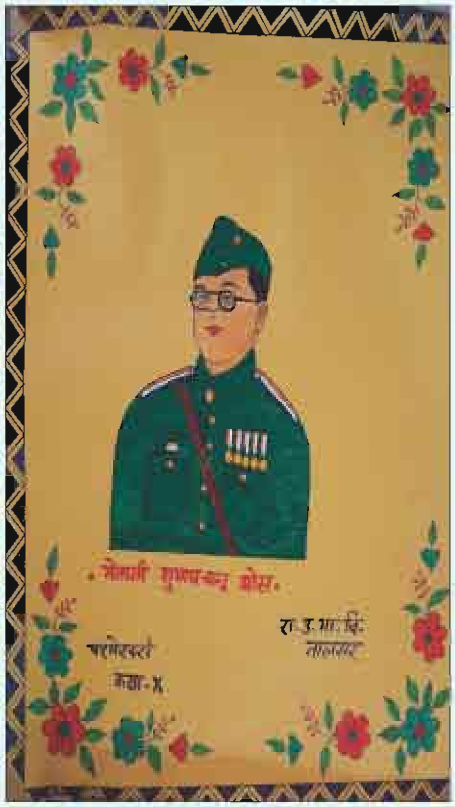
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस
परमेश्वरी
कक्षा- X
रा. उ. मा. वि.
तालसर

परमेश्वरी,
राजकीय उ.मा. विद्यालय तालसर, बाड़मेर

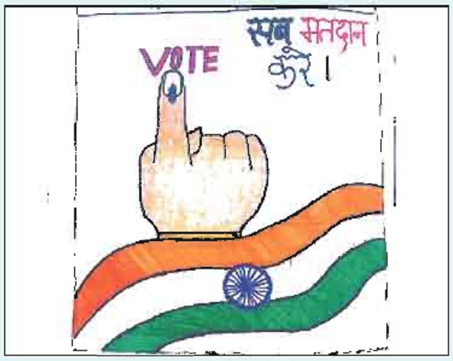
सब मतदान करें।
VOTE

चंचल प्रजापत,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कँसेड़ा, डीडवाना-कुचामन

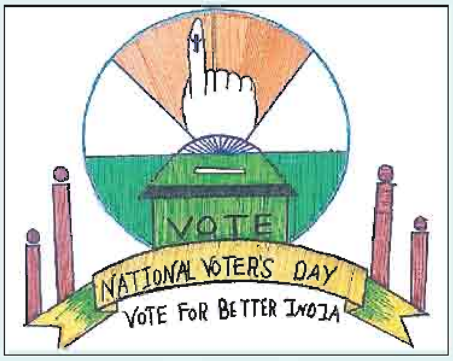
VOTE
NATIONAL VOTER'S DAY
VOTE FOR BETTER INDIA

सपना कुमावत,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कँसेड़ा, डीडवाना-कुचामन

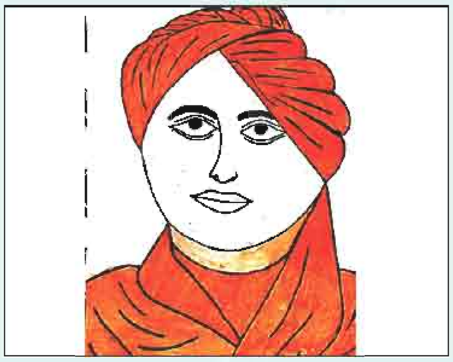

तनु देवी,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कँसेड़ा, डीडवाना-कुचामन

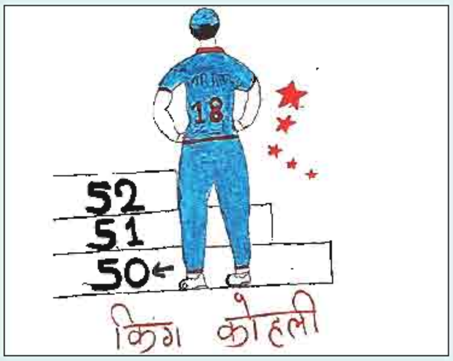
18
52
51
50←
किंग कोहली

मोनिका,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कँसेड़ा, डीडवाना-कुचामन

सोनी चौधरी,
राजकीय उ.प्रा.विद्यालय बेनिवालों की ढाणी, बाड़मेर

खुशाल कुमार,
राजकीय उ.प्रा.विद्यालय बेनिवालों की ढाणी, बाड़मेर

रविना,
राजकीय उ.प्रा.विद्यालय बेनिवालों की ढाणी, बाड़मेर

कमलेश,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाडेट, झुंझुनूं

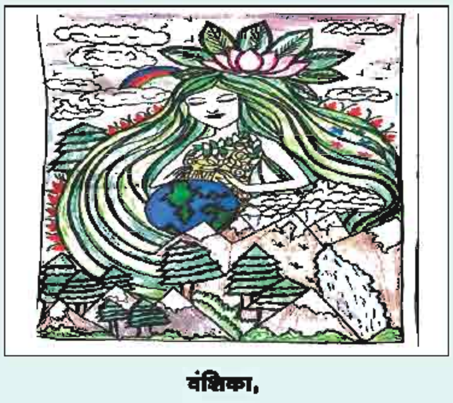

वंशिका,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाडेट, झुंझुनूं

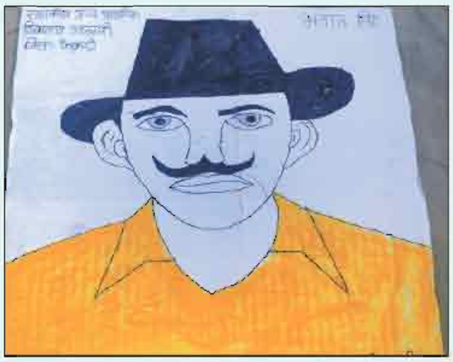

देवराज सिंह,
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय अजगरी, केकड़ी

पूर्णिमा,
राजकीय उ.मा.विद्यालय राणीसर, बीकानेर

पुस्तकालय में पुस्तकों से रुबरू होते विद्यार्थियों की एक झलक

Science Reading Corner

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/414/2023-25 शिविरा पत्रिका (मासिक) • दिसम्बर, 2023 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 दिसम्बर, 2023 पृष्ठ 56 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

समावेशित शिक्षा के अन्तर्गत राज्य के विभिन्न जिलों में विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं की खेल एवं एक्सपोजर विजिट गतिविधियों की झलकियाँ

Galaxy M33 5G Umed Singh

Shot on OnePlus

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334011